Chapter. 5

अध्याय पंचम

आधुनिक प्रमुख दोहाकार : व्यक्तित्व और प्रदान

बीसवीं सदी के अन्तिम दशक में कवियों का रुझान जिस तेजी से दोहा की ओर हुआ है उससे निश्चित ही चौंकानेवाली स्थिति उत्पन्न होती है। आज अधिकांश कवि गज़ल व दोहा लेखन में हाथ आजमा रहे हैं। जहाँ छन्द की ये वापसी स्वागतेय है वहीं घातक भी अधकचरी रचनाओं का आधिक्य किसी भी विधा के सम्मुख प्रश्नचिन्ह बनकर खड़ा हो सकता है। आज वे लोग जो कल तक दोहे की ए.बी.सी. भी नहीं जानते थे, सतसइयाँ लिए बैठे कथित दोहाकार हैं जो समझते हैं कि पहले और तीसरे चरण में तेरह-तेरह और दूसरे और चौथे चरण में ग्यारह-ग्यारह मात्राएं किसी प्रकार इकट्ठी कर लो-बस दोहा तैयार। और इनमें से कितने ही इस प्रथम शर्त का पालन करने में असमर्थ हैं, फिर भी लगाये जा रहे हैं ढेर, और दे रहे हैं आलोचकों को, छन्द बद्ध कविता के शत्रुओं को छाती फुलाने का अवसर। और फिर चलो गहनता, भाषा पर पकड़, विश्लेषण क्षमता आदि अनेक बिन्दु हैं जो दोहे के अनिवार्य अंग हैं। इनके अभाव में दोहे को कोरी नारेबाजी होने में देर नहीं लगती।

इधर दोहे पर गम्भीर कार्य भी हुआ है जिसमें पत्रिकाओं 'युगीन काव्य' प्रयास, दस्तावेज, शोधदिशा, शिल्प, प्रताप शोभा, साहित्य सरोवर, मसि कागद आदि के दोहा विशेषांको ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। साथ ही देवेन्द्र शर्मा की सप्तपदी शृंखला तथा अशोक अंजुम द्वारा शंकरप्रसाद करगेती व प्रेम किशोर 'पटाखा' के साथ सम्पादित 'दोहे समकालीन' रंगारंग दोहे और अंजुम द्वारा ही दस-दस दोहाकारों को लेकर 'दोहा दशक' संकलनों का सम्पादन, डॉ. महेश दिवाकर द्वारा सम्पादित 'समय की शिलापर' ने दोहों को नवीन उर्जा देने का कार्य किया है।

यदि लघुता मे प्रभुता के दर्शन करना किसी को अभीष्ट हो तो इसके लिए दोहों से उपयुक्त कोई अन्य काव्यगत माध्यम नहीं होगा। गागर में सागर भर देनेवाली लोकोक्ति दोहा छन्द के ऊपर ही सर्वाशतः चरितार्थ होती है। चौबीस मात्रा संगठित दो पंक्ति का यह छन्द ऐसा प्रतीत होता है जैसे किसी छोटे से किन्तु निश्चल पक्षी ने समग्र आकाश की सीमाओं को नाप लिया हो। जीवन अपनी अनेक रुपता और विविधता के कारण सागर और आकाश की भाँति अथाह और असीम होता है। इन अनेक रुपताओं और विविधताओं को दोहा संक्षिप्त किन्तु कसी हुई और अर्थ पूर्ण शैली मे निबद्ध करने का एक सफल माध्यम है। मानव जीवन की समस्त आशा-आकांशा, उल्लास-अवसाद जय पराजय एवं सफलता-विफलताओं को दोहा छन्द ने जैसी अभिव्यक्ति दी है। वैसी अवांतर छन्दो में प्रायः द्रष्टिगोचर नहीं होती। यही कारण है कि अपभ्रंश काल से लेकर आज तक यह छन्द कवियों में सर्वाधिक लोक प्रिय रहा है। चित्र कला की भाषा में दोहा जीवन की मिनियर पेण्टिंग है।

जहाँ एक ओर नवनीत आन्दोलन ने पुरातन मिथकों के सहारे समकालीन विम्बधर्मिता को नयी उर्जा देकर छांदस लेखन को पुस्तर किया है। वहीं दूसरी ओर दुष्यंतकुमार के प्रयोगवाद ने गज़ल विधा को हिन्दी की खड़ी बोली में नये आयाम देकर मानवीय संवेदना के कारुणिक सरोकारों को संयोजित कर परवर्ती रचनाकारों को सामाजिक वैदव्य से संघर्ष करने हेतु साहित्यिक क्रान्ति की आधारशिला रखकर छांदस समृद्धि के सोपान विनिर्मित करने का साहसिक शुभारंभ किया, इसी तरह हिन्दी काव्य के समर्थ सर्जकों ने इस सदी के अंतिम दशकों में लोकजीवन के कण्ठहार पारंपरिक छन्द दोहा को देशकाल और परिस्थिति के अनुरुप पर्याप्त परिमार्जन कर हाशिये से पृष्ठ के आमुख पर लाने का सफल एवं वंदनीय उपक्रम किया है।

पत्र पत्रिकाओं और कवि सम्मेलनो तथा कवि गोष्ठियों के माध्यम से पुनः दोहा छन्द में रचना करने की प्रवृत्ति लक्षित हुई है। समय समय पर 'धर्म युग' जैसी लोकप्रिय पत्रिका ने सूर्यभानू गुप्त, कैलाश गुप्त, कैलाश सेंगर और दिनेश शुक्ल आदि रचनाकारों के दोहों को प्रकाशित करके छन्दोबद्ध रनचाकारों को इस दिशा मे प्रेरित किया । देखते ही देखते अनेक अन्य पत्र-पत्रिकाएं भी प्रकाशित करने लगी। आकाशवाणी और दूरदर्शन ने भी यदा-कदा इस दिशा मे रूचि-प्रदर्शन की। जिस प्रकार से विगत बीस तीस वर्षो से हिन्दी में गज़ल कहने की प्रवृत्ति का विकास हुआ उसी प्रकार पाकिस्तान के अनेक शायर भी उर्दू मे दोहा कहने लगे परिणाम स्वरूप हिन्दी के अनेक दन्दोबद्ध कविता लिखनेवाले कवियों का इस छन्द की ओर ध्यान आकृष्ट हो उठा।

यूँ तो आज देश मे दो ढाई सौ रचनाकार हैं जो आधुनिक दोहों का सृजन कर साहित्य की श्री वृद्धि कर रहे हैं जिनमें सर्व श्री विश्व प्रकाश दीक्षित 'बटुक', देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र', ब्रज किशोर वर्मा 'सैदी', पाल भसीन, कुमार रवीन्द्र, जहीर कुरेशी, अनन्त राम मिश्र 'अनन्त', योगेन्द्र दत्त शर्मा भारतेन्दु मिश्र, रवीन्द्र 'भ्रमर', बाबूराम शुक्ल, हरीश निगम, राजेन्द्र गौतम, यश मालवीय, सोम ठाकुर, राजगोपाल सिंह 'श्याम', निर्मम, राम बाबू रस्तोगी, आचार्य भगवत दुबे, वेद प्रकाश पाण्डेय, डॉ. उर्मिलेश, कृष्णेश्वर डींगर, माहेश्वर तिवारी, कैलाश गौतम, आदि कुछ ऐसे सशक्त दोहाकार हैं जिन्होंने समकालीन साहित्य में दोहा छन्द की श्री वृद्धि की है।

विश्वप्रकाश दीक्षित 'बटुक'

प्रमुख दोहाकारों में विश्व प्रकाश दीक्षित 'बटुक' जी का नाम उल्लेखनीय है। इन्होंने काव्य प्रतिभा एवं एक वरिष्ठ कवि के अनुभव से आधुनिक दोहा सृजन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। बटुक जी एक महापुरुष हैं जिन्होंने देश की आज़ादी की लडाई में अपना विशेष योगदान दिया है। वे एक स्वतंत्रता सेनानी के रुप में भी हमारे सामने आते ही उनका कवि हृदय हमेशा देश प्रेम के लिए अग्रसर रहा है। बटुक जी का जन्म 20 अगस्त सन 1918 में उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में हुआ। इस समय भारतीय 'अस्मिता' काल रात्रि के गर्भ मे पड़ी नयी करवट ले रही थी। राष्ट्र ने नयी-नयी प्रेरणा प्राप्त की थी। देश पर अंग्रेजी शासन था ऐसे में बटुक जी बचपन से ही समाज की यथार्थता देखते आये उन्होंने अपने हृदय में कुछ कर दिखाने की आशा रखी। एम.ए. (हिन्दी) साहित्य रत्न शिक्षा प्राप्त की साथ ही साहित्य में अपने भावों को अभिव्यक्त करते चले उन्होंने समाज सेवा, अध्यापन के साथ स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लिया और उग्र लेखन के कारण जेल यात्रा भी की। वे निरन्तर लेखन पठन मे लगे रहे। दैनिक, साप्ताहिक, मासिक, पत्रो (रामराज्य, विश्वबंधु, अमर भारत, अनुराग आदि) का सम्पादन भी किया है। वे बिना किसी लालच के निडर होकर अपनी कलम के जौहर दिखाते रहे हैं। उनके कार्य क्षेत्रों में दिल्ली, राजस्थान, मेरठ, लाहौर, शिमला, लालंधर और गुजरात रहे हैं। श्री बटुक जी आज आकाशवाणी के प्रोड्यूसर पद से सेवा-निवृत्त होकर लाजपत नगर साहिबाबाद में लेखन पाठन मे लगे हुए हैं। उन्होंने अपने जीवन में अनेक सम्मान प्राप्त किये जिसमें पंजाब में डॉ. कर्णसिंह द्वारा महाशय कृष्ण पुरस्कार से सम्मानित हुए। पंजाब प्रदेश साहित्य संगम में राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित किये गये तथा साहित्य संगम दिल्ली द्वारा भी सम्मान प्राप्त किया। उन्हे साहित्य की मानद उपाधियाँ भी मिली जिसमें साहित्य भूषण, विद्यावाचस्पति, आचार्य जैसे सम्मान प्राप्त हुए हैं।

श्री विश्व प्रकाश दीक्षित 'बटुक' जी ने अपने पूरे जीवन मे हिन्दी साहित्य की अच्छी सेवा की है। उन्होंने अनेक रचनाएं की है। जो साहित्य जगत में प्रतिष्ठित हुई हैं। उनकी रचनाओं में -

हिन्दी साहित्य का नूतन इतिहास, हिन्दी साहित्य परिचय, हरिकृष्ण प्रेमी, व्यक्तित्व और कृतित्व, कामायनी : वस्तु और शिल्प, तुलसीदास : वस्तु और शिल्प, आषाढ का एक दिनः वस्तु और शिल्प पत्र की काव्य प्रतिभा, बिहारी की काव्य प्रतिभा, बिहारी की प्रतिभा, केशवदास, दिनकर और उनकी उर्वशी, इलाचन्द्र जोशी और जहाज़ का पंछी, वृन्दावनलाल वर्मा, कुछ रुपकः कुछ एकांकी, हमारे नीतिकार, अपनी डाली के काँटे (नाटक संग्रह), दुखवा मै कासों कहूँ (संस्मरण), अपंग (उपन्यास) और अग्निदाह उपन्यास आदि बटुक जी की प्रकाशित रचनाएं हैं।

उनकी काव्य रचना में प्रतिछाया, कुटिया का राज पुरुष (खण्ड काव्य), उद्गीथिका (आध्यात्मिक चेतना प्रधान), तुज़ुक हज़ारा (दोहा संग्रह) तथा बटुक की कटुक सतसई आदि काव्यात्मक प्रकाशित रचनाएं हैं। जो समाज में अपना प्रभाव छोड़कर साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं।

श्री बटुक की तुज़ुक हजारा एक हज़ार सामयिक दोहों का संग्रह है जो सुव्यवस्थित रीति से विभिन्न भावों को शीर्षक देकर लिखा गया है इस रचना संग्रह में तमाम भावनाओं को सूचीबद्ध रुप से प्रस्तुत किया गया है। दोहा छंद में लिखा गया यह काव्य संग्रह विभिन्न विचारों को समेटे है जिनमें देशभक्ति, राजनीति, संस्कृति, नीति, धर्म, अध्यात्म, मिलन-विरह, प्रकृति भक्त भगवान जैस महत्व के प्रश्नों को सार्थक द्रष्टिकोण से सूचित किया गया है।

आधुनिक दोहों में कवि की सामाजिक प्रतिबद्धता मुखर है । विसंगतियों और विकृतियों के प्रति सात्विक रोष है जो आधुनिक श्रेणी की प्रगतिशीलता का परिचय देता है। आधुनिक दोहाकारों में बटुक जी का नाम आदरणीय है।

डॉ. बाबूलाल गोस्वामी श्री बटुक जी के काव्य का परिचय देते हुए लिखते हैं-

संत जनोचित अटपटा पन एक नये रुप में हमें श्री बटुक जी के काव्य (दोहों) में मिलता है । स्वयं उन्हीं के शब्दों में उनकी कविता का मर्म ब्रह्म-विचार ही है। देखिये क्या क्या है-

दर्शन शुद्ध विचार है, सुचि-जीवन है धर्म।
व्याख्यायित इससे हुआ, शब्द वृहम् का मर्म॥[1]

दोहा में जो भाव है वे हैं लौकिक और लौकिक उपादानों से अलौकिक की पूजा कैसे हो यह प्रश्न चिह्न लगता है।

भाषा की लौकिकता भी उस अविगत अनीह के भेद नहीं बता सकती। कवि 'बटुक' जी कहते हैं कि -

तू उपाय आधार ले, खोज रहा अनपाय।
अंजलि के जल से कही, तरु भी सींचा जाय॥(2)

मानव जीवन के प्रकट तथ्यों की यह उलझन पाठक को 'बटुक' जी के दोहों में अधोपान्त मिलती है क्योंकि यहाँ वस्तु प्राप्ति उलटी गति से ही सम्भव हो पाती है। विषयोन्मुखता विषोन्मुखता है जो इसमें बाधक है -

विषय भोग निद्रा, हँसी, जगत्‌-प्रीति बहुबात।
ज्ञान-ध्यान हरि-मिलन में, यही बड़े आघात॥(3)

आत्म लाभ भक्तियोग की चरमसीमा है। रोम-रोम से होने वाला भजन ही उस सीमा के अन्दर प्रवेश करा देता है। जहाँ परम ज्योति का प्रकाश है।

मानव मुख से हरि भजै,
भजै हृदय से देव।
रोम रोम से भज हुआ,
ज्योतिर्मय स्वयमेव॥

बटुक जी का काव्य जगत् जीवन के प्रति दिव्य और आध्यात्मिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। कवि में एक अनूठा आत्मविश्वास है। वह कहते हैं -

चाहे चितनी जगत् की चले पवन प्रतिकूल।
नाव निकल मँझधार से, पहुंचेगी उस कूल॥(4)

एक ओर दिव्य जीवन का आदर्श है। मर्यादाओं और आदर्शों के बीच अपने धर्मो पर आरुढ रहकर तप-कठोर जीवन जीने का एक अनुष्ठान तो दूसरी ओर एक अनंत श्रृंखला है। भटके हुए उन जीवों की जिनका जीवन संकटो में पडकर दुविधा मे जीता है, अभावों से त्रस्त है। कवि ने इस द्रष्टि जीवन में धर्म संस्कृति, आचार-विचार, नीति, राजनीति का विकृत चित्र सामने से खड़ा किया है यह यथार्थ चित्रण है। कुत्सा के प्रति उसमें वितृष्णा का भाव है और विकृतियों के प्रति उपहास और कटाक्ष।

'बटुक' के दोहों में देश भक्ति का अत्यंत पावन मूल्य है। ऐसे ही भाव को समेटे दोहा द्रष्टव्य है-

सुख सम्पति चाहूँ नहीं, नहीं स्वर्ग जगदीश।
जन्म-जन्म मैं देशहित, कटवाऊँ निज शीश।।[5]

वर्तमान राजनीति के चरित्र को प्रस्तुत करने में कवि शतधा मुखर है। देश भक्ति में राजनीति घुस आने का विकृत परिणाम है। भेद विभाजन धर्म, भाषा, जाति सभी जगह विग्रह और आपाधापी। आज एकता की बात निरर्थक लगती है-

एक राष्ट्रीय की ऐक्य की नहीं कल्पना नेक।
बँटो अल्पसंख्यक बनो लूटो लाभ अनेक।।

कवि के दोहो में प्रजातंत्र का असली चेहरा और उसकी सफलता, असफलता पर कवि टिप्पणी करता है-

प्रजा तंत्र का शुद्धतम, रूप रहा है दीख।
दण्डित भोगें राजसुख, पंडित माँगे भीख।।

राजनीति का जघन्य रूप देखकर कवि ने दोहे में अपने भावों को बाँधते हुए कहा है कि-

आग देख तन्दूर की, डरे पुराने घाघ।
राजनीति में आ घुसे, अब नरभक्षी बाघ ।।[7]
कल थे बन्दी जेल में, वन्दनीय वे लोग।
रेप, डकैती, खून के जिन पर हैं अभियोग।।

बटुकजी का सामाजिक आदर्श और वैचारिक प्रतिबद्धता किसी सामयिक प्रतिक्रिया का परिणाम नहीं है। वस्तुतः वे ऐसे युग में जन्मे हैं जब कि भारतीय अस्मिता रात्रि के गर्भ मे पडी नयी करवट ले रही थी। राष्ट्र ने नयी प्रेरणा प्राप्त की थी। आज के बौद्धिक और चारित्रिक पतन के मुहाने पर आ पहुंचे राष्ट्र-जीवन मे उनकी कविता सपने की बात लगे तो कोई आश्चर्य नहीं। आज़ादी प्राप्त करने के बाद का भारत इतना भोग लोलुप और अय्याश होगा किसे पता था? भौतिक विज्ञान की चका चौंध में पडकर मानवता से दूर जाकर भारतवासी भी जघन्य पापकर्मो में प्रवृत्त होंगे। भ्रूण हत्या जैसे मानव घाती कृत्यों से अभिशप्त जीवन को कुम्भीपाक नरक से बदतर बना डालेंगे - इसका दायित्व कौन लेगा? चारों ओर दुर्दान्त निराशा के गर्त में पडे देश वासी आज नहीं तो कल अवश्य अपने अतीत के दर्पण में अपना चेहरा देखेंगे और गौरव को प्राप्त करना चाहेंगे। अपनेपन को पाने के लिए जब जब देश की मेघा उन्मुख होगी तब तब ऐसे महान काव्य उसको भटकने

से बचा सकेंगे ऐसे स्वस्थ दोहा काव्य का हर विवेकशील व्यक्ति स्वागत करेगा।

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY

हिन्दी-कविता के विगत पचास वर्षो के इतिहास में छन्दोबद्धता और छन्दोमुक्ति से लेकर सर्जना और समीक्षा के स्तरों पर निरन्तर वाद-प्रतिवाद की स्थिति देखी जा सकती है। दोहा लेखन जहाँ एक ओर छान्दसिक परम्परा की सुदीर्घता मे एक गांठ और लगाता है वहाँ छंदमुक्त कविता-शैली का भी तीव्र विरोध करता है। पिछले हज़ार बारह सौ वर्षो मे जितने दोहे लिखे गये संभवतः विगत दशक मे भी उतने ही दोहे रचे गये होंगे। ऐसी कोई पत्र-पत्रिका नहीं जिसमें दोहे का मुद्रण न होता हो। इसी दशक के भीतर नये दोहों पुरस्कृत करने के लिए सात खण्डों में प्रकाशित सप्तपदी के संकलनों का प्रकाशन हुआ और इसी कालावधि के अन्तर्गत 'अमलतास की छाँव (पाल भसीन) पानी की बैसाखियाँ, जागे शब्द गरीब (दिनेश शुक्ल) आँखो खिले, पलाश (देवन्द्र शर्मा 'इन्द्र') शब्दों के संवाद (आचार्य भगवत दुबे) जैसे स्वतंत्र दोहा संग्रहों का प्रकाशन हुआ। श्री विश्व प्रकाश दीक्षित द्वारा रचित तुजुक हजारा इस श्रृंखला की एक नवीनतम कडी है। इसी नवीनतम कडी में ब्रज किशोर वर्मा 'शैदी' कृत ''हम जंगल के फूल'' दोहा संग्रह उल्लेखनीय है। दोहा चिरकाल से मुक्तक काव्य का अर्थवाह - छन्द रहा है जिससे प्रबंध काव्य रचने का प्रयास उतना ही हास्यास्पद होगा जितना की नाखूनों और पंजों से किसी पर्वत का उच्छेदन। दोहा आकार मे लघुता परन्तु अपनी अर्थवत्ता में 'लाघव' को लेकर चलने वाला छन्द है। अनेकतः विद्वानो की मान्यता तो यह भी है कि दोहा उर्दू-फारसी के अश्आर और गज़लोंका मात्र सार्थक विकल्प है। दोहे और ग़ज़ल में वैरभाव न होकर उभय निष्ठ प्रीति है।

दोहा की रचना में जहाँ बटुक जी का नाम आता है। वहाँ उन्हे निसंकोच नये दोहे के प्रारम्भिक महत्वपूर्ण हस्ताक्षरों में गिना है। इन्होंने अनेक दोहे का सर्जन किया साथ ही गाज़ियाबाद के आसपास बसे अनेक रचनाकारों ने जमकर दोहों का सर्जन किया है पर इन सब दोहाकारों में अग्रज बटुक जी हैं वे अपनी पुरातनता में भी चिर नवीन हैं। बटुक जी के दोहों को सुन-पढकर ही इन पंक्तियों के लेखन के मन में 'सप्तपदी' की योजना ने रुपाकार ग्रहण किया वह स्वयं को भी दोहा लेखकों की बिरादरी में शामिल कर लिया। अपने संम्प्रेषणीय वक्तव्य को वे प्रसंगानुसार व्यंजना, लक्षणा और अभिधा में व्यक्त करने में पूर्ण पटु हैं।

दोहे को परिभाषित करते हुए और अपने दोहों की अनन्यता व्यक्त करते हुए उन्होंने लिखा है-

दोहा की गति तीव्र है जैसे चपल कुरंग।
भरता विविध उड़ान है, नभ का बना विहंग ॥[8]

कितने कवियों ने कहे दोहे कई हज़ार।
ढूंढ़े से मेरा मगर-मिला न जोड़ीदार।।

हमारी दृष्टि में बटुकजी नये दोहे के कबीर है उनके दोहों में तीर जैसी तासीर और त्वरित संक्रामकता के दर्शन होते हैं। उन्होंने समाज में घटित होते उत्कर्षापकर्ष को सदैव खुली आँखों से देखा है। श्रेष्ठ साहित्य अपने समाज का अपने युगीन-सत्य का एक जीवन्त और प्रामाणिक दस्तावेज हुआ करता है। आधु. दोहे इस तथ्य की प्रतिश्रुति हैं। बढ़ती हुई जनसंख्या, महानगरीकरण, विविध प्रकार के तनावों और विसंगतियों के मध्य पिसता हुआ मनुष्य, भ्रष्टाचार पतियों की चमड़े की व्यापार करती आधुनिक पत्नियाँ, भौतिक वस्तुओं का महार्धता और व्यक्ति का मूल्यभ्रंश मंदिर मस्जिद के झगडे, मुखौटाधारी आचरण का खोखलापन, आज सारे भारत वर्ष में अनेक दोहाकार दोहे की जमीन पर नये-नये प्रयोग करते हुए उसके विषय गत और अभिव्यक्ति परक आयामों में नयी से नयी संभावनाएँ विकसित कर रहे हैं।

साठोत्तरी हिन्दी साहित्य के दोहे को फलने फूलने के लिए आज विभिन्न योजनाएं हैं ऐसी ही एक कृति है जिसे सर्जकों को अपनी ओर आकर्षित किया है। यह देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र' द्वारा सम्पादित है। इसके संकलन की योजना में प्रसिद्ध श्रेष्ठ दोहों को स्थान दिया गया है। जो दोहा साहित्य को सफलता की ऊँचाई प्रदान करता है।

''सप्तपदी'' मे वरिष्ठ दोहाकार के रूप में विश्व प्रकाश दीक्षितजी का नाम आता है। जो आधु. (नये) दोहा सर्जन में श्रेष्ठ भूमिका निभा रहे हैं। उनके दोहों में कबीर के दोहो जैसा ताप और ओजस्वी स्वर प्रदान किया है। श्री बटुक जी कहते हैं कि - ''आज क्लीक का युग है- दोहा इस युग के अनुकूल है बटन दबा और तस्वीर उतर आयी। सब कुछ शार्टकट में शीघ्रता में हो रहा है। दोहा ही उस होने को हुँकृति, स्वीकृति देने में समर्थ हैं। बटुक जी के दोहे सम्प्रेष्य वस्तु को सीधे-साधे पाठकों और श्रोताओं तक पहुंचाना चाहते हैं। अतः लक्षणा और व्यंजना की अपेक्षा सीधे अभिधा से वे समस्या पर प्रहार करते हैं।

आज जब व्यक्ति विदूषक बन गया है। समाज धर्म साहित्य और राजनीति में विरुप-विद्रूपता आ गयी है तो शब्दों का बहुत पैना धारदार हो उठना स्वाभाविक है।

आज मानव व्यंग्य के क्षणों को जी रहा है। इस जीने को जीवन का व्यंग्य नहीं कहा जाय तो और क्या कहें ? व्यंग्य-हास्य दोहे में ही खिलता-खुलता है। साथ ही आज मनुष्य के पास समय नहीं है कि वह लम्बे चौडे गद्य को पढे या लम्बी कविता में अपना समय गँवाये वह तो सब कुछ शोर्ट में समझना चाहता है। अर्थात ''समझदार को इशारा काफी है'' दोहा के कुछ ही शब्दों

में महाकाव्य समा सकते हैं। इसी लिए कटु प्रहार के लिए बाल की खाल उधेडने की जरूरत नहीं है। 'खोदा पहाड निकली चुहिया' वाली कहावतें पुरानी हैं। विज्ञान कम्प्यूटर के जमाने में सबकी तेज गति है तो साहित्य पीछे कैसे रहे। साहित्य को यह गति दोहे ने दी। तो जब धनाढ्य वर्ग का नकलीपन, राष्ट्र, राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीयता के प्रति उपेक्षा मोटी खाल वाले नेता, अफ़सर और नौकर शाही, रिश्वतखोरी और ऐसे ही सहस्त्राधिक सांघातिक पक्ष हैं वे आधुनिक दोहों में स्पष्ट नज़र आते हैं।

ऐसी ही भावनाओं से ओतप्रोत बटुकजी के साठोत्तरी दोहे निम्न हैं। जिनमें हमें देशकाल का प्रतिबिम्ब नज़र आता है। कवि स्वतंत्रता संग्राम से भी जुडे रहे हैं। अतः देश भक्ति की भावना तो इनमें सहज ही है। वे कहते हैं -

जन्मभूमि से लोक में है नर की पहचान।
जनक-जात-सम्बंध में जननी रही प्रमाण।।[9]
यदि तुझको नर-देह यह, दानकर चुका ईश।
तो हे नर ! तू देश-हित, क्यों न कटावे शीश।।[10]
चल नेफा-लद्दाख को, हिम गिरि रहा पुकार।
ले असीम सुख देश की सीमा पर सिर वार।।[11]
दे न शरण तू ऊँट को, बचा शिविर अब जाग।
क्षमा, दया, आतिथ्य, सब, हुए पुराने राग।।[12]
प्रहरी हो, लड़ कट मरो, द्वार न देना खोल।
भले बदल इतिहास दो, किन्तु बचे भूगोल।।[13]
जितने गहरे हो गये, भेदभाव के कूप।
विकृत उतना ही हुआ, देश भक्ति का रूप।।[14]
प्रतिभा में रत तुम रहो, भारत नाम तदर्थ।
रहे सुरक्षित भारती, इतने बनो समर्थ।।[15]

राजनीति परक दोहे -

प्रभु तेरा अस्तित्व क्या? तू गिनती का एक।
नई सृष्टि नित रच रहे, विश्वामित्र अनेक।।[16]
हर दल आज निभा रहा, संगतरे की टेक।
बाहर-बाहर एक हैं, भीतर फांक अनेक।।[17]

लच्छेदार जवान में सपने पाते तूल।
राजनीति अब हो गई, बस सेंवर का फूल॥[18]
गृहपति, कुलपति, राष्ट्रपति, सब पति एक समान।
अपनी सुविधा के लिए, बदले नित्य विधान॥[19]
रच चुनाव-चौसर दई, अनगिन गोटी पीट।
गये जेल तो क्या हुआ, जीतीं संसद-सीट॥[20]
युक्ति युक्त हैं गालियां-संसद में संग्राम।
है संसद का अर्थ ही, कोलाहल का धाम॥[21]
हिंसा खुलकर खेलती है प्रतिकूल बहाव।
शासक दिल बहला रहे, ले कागज़ की नाव॥[22]
अब भविष्य निज देश का, हम यों रहे सँवार।
धन-प्रतिभा पर देश से, लेने लगे उधार॥[23]
गणक बने मंत्री, रहे ग्राहक-गण को जांच।
राजनीति गणिका, रही चौराहे पर नांच॥[24]
रामराज्य मे कल्कि के, दंडित निर-अपराध।
चोर-लुटेरे भोगते, शासन-सुख निर्बाध॥[25]

आजकी राजनीति से लिप्त नेता की नियत और कार्य-व्यापार पर कवि दोहा में लिखते हैं। उनके व्यक्तित्व को कुछ शब्दों में उधेल कर रख दिया है। जिस व्यक्तित्व को समझने में स्वयं भगवान भी असमर्थ हैं। नेता के गुणों का वर्णन दोहों में दिखाई देता है। बटुक जी कहते हैं -

चरण पखारो अश्रु से, नेता पर न प्रभाव।
चिकने घट पर कब हुआ, पानी का ठहराव॥
कल थे बंदी जेल में, वन्दनीय वे लोग।
रेप डकैती, खून के, जिन पर हैं अभियोग॥[26]
रौशन हैं अँधियार में, नेताओं के धाम।
रंग बदलने मे निपुण, रचें फाग हर शाम॥[27]

आधुनिक युग अर्थात पश्चिम की सभ्यता का युग। हम अपनी सभ्यता भूल रहे हैं और अधुना संस्कृति अपना रहे हैं। समाज की ऐसी विडम्बना को दोहा के माध्यम से रचनाकार ने तीखी चोट दी है -

अधुना-संस्कृति के चले, बढा 'बाई' का रोग।
मिलें परस्पर तो करें, हाय-हाय सब लोग।।(28)
धनपतियों के नाम का कैसा पुण्य-प्रताप।
टा-टा टा-टा का करें, चलते -चलते जाय।।(29)
अंग्रेजी घर में घुसी बच्चे कितने सैड।
माँ से मम्मी फिर ममी डैडी हो गये डैड।।(30)
बीबी टी.वी. माँगती, बच्चे वी.सी.आर.।
नम्बर दो की आय को, मियां हुआ लाचार।।(31)
वस्त्र देह पर भार-सम, गृह पति लगें कदर्थ।
आवे अर्थ अनर्थ से, महिला-मुक्ति तदर्थ।।(32)
देखो अपने देश में आया नया प्रभात।
सैर सपाटे सैक्स की बात करें नव जात।।
सभी अपरिचित से लगें, तन-मन भाषा वेश।
अब स्वदेश ही हो आया गया, अपने लिए विदेश।।(33)

दोहा का आज के यथार्थ पर कटाक्ष देखिए -

कवि बटुक जी कहते हैं -

मिला राष्ट्र को राष्ट्रपति है सौभाग्य महान्।
किन्तु राष्ट्र-पत्नी नहीं, कैसा विधुर-विधान।।(34)
तीर सिफ़ारिश का चले, सधे निशाना ठीक।
निजहित-दिल्ली दूर की, हो जाती नज़दीक।।(35)
अपनी मुट्ठी में रहे, जब तक यह सरकार।
घी की चुपड़ी रोटियाँ, खाओ दो की चार।।(36)
स्वागत आगत मित्र का, बहुविधि शिष्टाचार।
पीठ फिरे गाली बको, यही जगत्-व्यवहार।।(37)
सुरा सुरों का पेय है, धनिकों के अनुकूल।
निर्धन पी-पी कर मरें, भुगतें अपनी भूल।।(38)
कूकर-शूकर से बदी, अब जनता ने होड़।
जनसंख्या प्रतिवर्ष में, बढ़ती डेढ़-करोड़।।(39)

चेतन नर की बात पर आज कौन पतियाय।
जड़ मशीन करने लगी, झूठ-सत्य का न्याय।।[40]

आधुनिक साहित्य में बटुक जी का श्रेष्ठ योगदान रहा है। यथा नाम तथा गुण पुरानी बात है। आज के नये युग में यथा गुण तथा नाम तो होना ही चाहिए वैसे भी लोगों ने कुसमों को निर्गन्ध और रवियों को अन्ध होते देखा था। फिर यदि मेरा 'बटुक' कवि कुछ कटुक हो गया तो क्या अनहोनी हो गई। बटुक जी द्वारा रचित 'बटुक की कटुक सतसई नामक दोहा संग्रह आज के यथार्थ पर तीखा व्यंग्य परक तमाचा है उन्होंने निर्भयता के साथ आधुनिक युग के विषयों को उधेल कर रख दिया है। यों भी बटुक जी तो युवा शक्ति का मूल है। युवा में आक्रोश स्वाभाविक है। पौराणिक काल से लेकर आज तक युवा क्रुद्ध ही रहा है। कटुता ही उसकी धरोहर रही है। आज जनरेशन तो एंग्री है। सभी भाषाओं के साहित्य में 'एंग्री जनरेशन' की अलग पहचान है। राजनीति मेंभी युवा तुर्क, अंतर्कित रहे हैं। इस सबके लिए ज़िम्मेदार नये युग की परिस्थितियाँ हैं। इन परिस्थितियों ने हमारी रुचियाँ तक बदल डाली हैं। सोच की बात ही क्या? हम इतने गहरे तक प्रभावित हुए हैं कि हम अपने बगीचों और गमलों मे कैक्टस उगाने लगे हैं न सिर्फ इतना बल्कि ड्राइंग रुमों तक में सुगन्धित पुष्पों के स्थान पर काँटेदार कैक्टस सजाने लगे हैं। आज जीवन जब कैक्टस की तरह बन गया है तो काव्य में कटुता क्यों न आये? उपलब्ध कटुता ही आपके काव्य का प्रारब्ध है। साहित्य समाज का दर्पण है। जैसी विकृतियाँ आज समाज में हैं। वैसी ही कृतियाँ आपको साहित्य में मिलेंगी ऐसी ही अभिव्यक्ति को लिये हुए कवि बटुकजी ने बटुक की कटुक सतरई नामक रचना का सृजन किया है। जिस से समाज का प्रतिबिम्ब देखने को मिलता है।

जीवन के विभिन्न स्तरों को, विषयों को, प्रतिबिम्बों को बटुक जी ने साक्षात् सामने खड़ा किया है। वे कहते हैं कि-

हुआ शायरी का अजब, शुरु नया अब दौर।
मैं कहता कुछ और हूँ, वे सुनते कुछ और ।।[41]
सुन तुलसी! कबिरा कहे, कैसा हुआ अनर्थ ।
भ्रष्ट शब्द की हाट पर, खड़ा रो रहा अर्थ।।[42]
सर्वप्रिय की ललक में, जोडा जो कि समाज।
ले डूबेगा एक दिन, तेरा तुझे जहाज।।[43]
गोरे हम को दे गये, आज़ादी का रोग।
काली करतूतें करें, खुलकर काले लोग।।[44]

आज़ादी से पूर्व की, मुझे आ रही याद।
चोर, लुटेरे, दस्यु थे, पहले भी आज़ाद॥[45]

देश की आज़ादी तो प्राप्त हो गयी परन्तु हम आज़ाद नहीं हुए। यह समाज, यहाँ के लोग, संस्कृति, राजनीति, क्या सभी कुछ बदल गयी है। देश की आज़ादी को लेकर कवि निराश है। वह कहते हैं कि-

आज़ादी को हुए हैं, बस पचास ही वर्ष।
आबादी का छिन गया, सहस बरस का हर्ष॥[46]
दिन पर दिन होती गई, बात अधिक यह पुष्टि।
आज़ादी के बाद हम, हुए और भी दुष्ट॥[46]
बीते वर्ष पचास में बढा धरा का भार।
उसे नहीं हर पायेंगे मिलकर दस अवतार॥[48]

बटुक जी की नज़र में सब समाज अमीर-गरीब, ऊंचे-नीचे लोग एक है। उन्होंने गाँव और शहर को एक नज़र से देखा है। उनके दोहों में गरीब किसान, चाटखोर साहूकार, सूदखोर, मजूर, महाजन, बनिये, ज़मींदार, सभी केन्द्र में हैं। गाँव की दशा अर्थात किसान की दशा को लेकर कवि कहते हैं कि -

जिसके श्रम से मान निज बढ़ा रहा है सेठ।
बैठ उसी की लाश पर, बढ़ा रहा है पेट॥
आभा हेतु मजूर ने, रखी न श्रम की सीव।
मांग रहीं हैं अस्थियाँ उसी महल की नींव॥
मजदूरी में मूलधन, लिया व्याज में प्राण।
अहो धनिक! तुम धन्य हो, किया दीन का त्राण॥
मालिक ने कल दास के, कई संवारे काज।
पत्नी को दर्जा दिया, दासी को भी आज॥
शोषक-शोषित बीच है, कुदरत का कानून।
रोग-निवारण कर रही, जोंक चूस कर खून॥

इस प्रकार श्री विश्वप्रकाश दीक्षित 'बटुक' के दोहों में जीवन की समस्त अभिव्यक्ति उभरकर रचना के रुप में हमारे सामने आती है। यथार्थ के धरातल पर सटीक अभिव्यक्ति के साहसिक प्रवक्ता बटुक जी का संपूर्ण कृतित्व व प्रदान एक बहुमुखी कलात्मकता का वटवृक्ष है। जिसमें शब्द शक्ति

गुण, रस, अलंकार, प्रतीकात्मकता, विम्बात्मकता, विचलन, समानांतरता आदि के तत्व मिलकर अनुभूति का पोषण करते हैं। आधुनिकता का बोध और सामाजिक चेतना का तीव्र प्रवाह इन कृतियों की भावभूति का शृंगार करता है। उत्कृष्ठ छन्दविधान, स्वाभाविक लय-प्रवाह, संगीत तत्व का समवेश अनुभूति की गहरई, जीवन्त और निर्विकार भाषा, सहज रचना विन्यास प्रकृति का मोहक प्रयोग विधान, परिपक्क समानान्तरता भारतीय संस्कृति का प्रवाह, विद्या-वैविध्य, छन्द वैविध्य, गीतात्मकता, आदि अनेक विशेषताएँ 'बटुक' जी के कृतित्व को गौरव प्रदान करतीं हैं।

इस प्रकार श्री विश्वप्रकाश दीक्षित 'बटुक' का कृतित्व बहुआयामी है। गीत, ग़ज़ल, दोहा, प्रबंधकाव्य कहानी आदि अनेक काव्य रुप आपने अपनाये हैं तथा हिन्दी काव्य जगत को परम्परा और नवीनता के विभिन्न रंगों में सजा हुआ कृतित्व प्रदान किया है।

आचार्य भगवत दुबे

पत्रिकाओं, समवेत संकलनो आदि में अत्यंत उच्च आवृत्ति में प्रकाशित होते रहनेवाले श्रेष्ठ कवि आचार्य भगवत दुबे का नाम आधुनिक रचनाकारों में सम्माननीय है उनकी लेखनी पावों से नहीं चलती पंखो से उडती है। आधुनिक साहित्य के इतने सक्षम हस्ताक्षर श्री आचार्य भगवत दुबे का जन्म जबलपुर से बरगी वनांचल में स्थित ग्राम डगडगा हिनौता में 18 अगस्त सन 1943 को एक गरीब ब्राह्मण परिवार में हुआ। उनके पिता अनपढ़ थे और जिससे साहित्य उन्हे विरासत में नहीं मिला। माता श्रीमती विमलादेवी एक आदर्श शिक्षिका थी। स्वयं दुबे जी अपने जीवन को कार्यक्षम बनाते हुए एम.ए., एल.एल.बी., कोविद (संस्कृत) तक शिक्षा प्राप्त की तथा जीवन काल में अनेक सम्मान प्राप्त किये। हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ रचनाकार ऐसे श्री दुबे जी की भावाभिव्यक्ति व लेखनी की उड़ान धरती के भाव-तलों को आकाश में ले जाती है और फिर उन्हें नये मोहक रंगों में डुबोकर धरती पर बरसा देती है। काव्य के सृजन की यह प्रक्रिया आचार्य दुबे में जितनी तीव्र है। वह आधुनिक हिन्दी साहित्य के अन्य कवि में बहुत ही कम नज़र आती है। उनकी काव्य कृतियों की जो शृंखला गत कुछ वर्षों में जिस वेग से साहित्य जगत में उतरी है उससे उनके व्यक्तित्व का अनुमान लगाना कठिन न होगा आचार्य दुबे जी काव्य सृजन की प्रतिभा में इतने धनी हैं कि एक सप्ताह में एक, या वर्ष में पचास काव्य कृतियों को सृजन की क्षमता है। छन्द उनकी रक्त वाहिनियों में दौडता है और लेखिनी उनकी उंगलियों की उम्र के मुहताज़ नहीं है। भाषा पर उनका इतना प्रभुत्व है कि वह उनकी अनुचरी बनकर चलती है। तुक विधान के लिए उन्हे कहीं खोज बीन नहीं करनी पडती। गति प्रवाह के लिए उनका कृतित्व ठोक-पीट का चरित्र नहीं दिखाता, उसकी सहजता ही उसका शृंगार है।

आचार्य भगवत दुबे जी का व्यक्तित्व कर्तव्य निष्ठ, कार्यनिष्ठ है। यदि समाज में दुबेजी का कोई अस्तित्व है तो उन्होंने अपना धर्म भी निभाया है। कर्तव्य निष्ठ व्यक्तित्व उनकी रचनाओं में आप ही उभरकर सामने आता है।

माटी के प्रति कुम्हार की, लकडी के प्रति बढई की जैसी अनूठी निष्ठा होती है वैसी ही श्री दुबे जी की रचना में विनयभाव, शब्दों के प्रति विनम्र और शांत निष्ठामय अनुराग भरा हुआ है। उनकी रचनाएं मानवी दुख और हताशा के समग्र इतिहास से तिक्तता के घृणा लेकिन संभावनाओं से अभिभूत है।

उसी प्रकार उनका कृतित्व भी बहुमुखी शिल्प और बहुयामी कथ्य की विराट पटल पर प्रक्षेपित हुआ है यह उनकी साहित्यिक धरोहर में है जिनमें निहित कथ्य का विवरण हम देख सकते हैं ।

1)	स्मृति ग्रंथ -	गीत संग्रह
2)	अक्षर मंत्र -	साक्षरता गीत संग्रह
3)	शब्दों के संवाद -	एक हज़ार दोहों का संग्रह
4)	हरीतिमा -	पर्यावरण विषयक दोहा संग्रह
5)	रक्षा कवच -	स्वस्थ-शिक्षा विषयक गीत संग्रह
6)	संकल्प रथी -	वनवासी एवं ग्राम्य जीवन पर केन्द्रित काव्यवृत्ति
7)	वजे नगाड़े कालके-	जबलपुर की भूकम्प त्रासदी पर केन्द्रित दोहा संग्रह
8)	वन पाँखी -	जल, जंगल, जमीन, लोकसंस्कृति पर्यावरण, प्रदूषण, वांधो और विस्थापन समस्या पर केन्द्रित काव्य कृति।
9)	दधीचि -	महर्षि दधीचि के आत्मोत्सर्ग को व्यापक सन्दर्भों में रुपायित करता हुआ 404 पृष्ठ का महाकाव्य।
10)	जियो और जीने दो-	मानवाधिकार पर केन्द्रित काव्य कृति
11)	विष कन्या -	मध निषेध विषयक गीत-संग्रह
12)	शंखनाद -	राष्ट्रीय चेतना से ओज पूर्ण गीत संग्रह
13)	चुभन -	हिन्दी गज़ल संग्रह
14)	दूल्हादेव -	कहानी संग्रह
15)	प्रणय ऋचाएं -	गीत संग्रह
16)	काँटे हुए किरीट -	गीत संग्रह
17)	'शब्द विहंग' -	दोहा संग्रह

इनमे क्रमांक 4 से क्रमांक 17 तक की काव्य कृतियों का प्रकाशन 1997 और 2001 के प्रारंभ के मध्य अर्थात सवा चार वर्ष में ही हुआ, जो उनकी लेखन क्षमता की गति का उद्‌घाटन करता है। दुबे जी में केवल पुस्तक संख्या बढाने की विवशता नहीं है। चार सौ चार पृष्ठ के महाकाव्य (दधीचि) इन पाँखी काव्यकृति (112 पृष्ठ) का भी प्रकाशन हुआ। इस प्रकार देखा जाय तो एक कलेन्डर वर्ष में 516 पृष्ठ का काव्य सृजन पुस्तक रुप में तथा सैकड़ों पृष्ठों का काव्य सृजन पत्रिकाओं और समवेत संकलनों में प्रकाशित होना यह दर्शाता है कि आचार्य भगवत दुबे कविता के कम्प्यूटर हैं।

दुबे जी ने अपनी कृतित्व में कथ्य के विविध धरातलों को समेट कर रख लिया है। परन्तु अपने व्यक्तित्व के अनुसार उनका मूल स्वर मानवीय संवेदना और करुणा है। ये दोनो तत्व मूल्यों का आधार होते हैं। उनके दधीचि महाकाव्य में करुणा और मानवीय अनुभूतियाँ ही व्यापक रुप से उभरी हैं। बजे नगाडे काल के, चुभन, कांटे हुए किरीट, वन पाँखी और जीयो और जीने दो ऐसी कृतियाँ हैं। जिनमें मानवीय संवेदना को अंकुरित करने की अद्‌भुत शक्ति है।

दोहा दृष्टव्य है -

महलो में बन्दी जब स्वर्ण सवेरा हो,
कुटियों के हिस्से में सिर्फ अंधेरा हो,
साफ सफाई से लक्ष्मी घबराती हो
कीचड़ में धँसकर जो रास रचाती हो।(49)
जहाँ मंगलो को उल्लू भी आँख दिखाये।
वहाँ कही किस तरह खुशी के गीत सुनाये।(50)

ऐसे ही भाव लिए ''शब्दों के संवाद'' कृति से दोहा दृष्टव्य है।

भूखी बैठी झोपड़ी, धरे हाथ पर हाथ।
बुलडोजर के पेट में, समा गये फुटपाथ।।(51)

वे आज के वातावरण से ही अपने काव्य में विम्बों को उभारते हैं, मानव-व्यवहार के विविध पक्षों की झाखियाँ व्याप्त रहती है। 'दधीचि' महाकाव्य के रूप में आचार्य भगवत दुबे ने हिन्दी साहित्य को एक महत्वपूर्ण उपहार दिया है। वर्तमान आपाधापी और अति व्यस्तता के युग में प्रबंध काव्य लेखन और उसके पठन की प्रवृत्ति कुंठित होने लगी थी। आपने इस प्रवृत्ति को 'दधीचि' महाकाव्य द्वारा नई प्राण वायु दी है। इसकी युगबोध के रंगों से सजाकर प्रस्तुत किया है तथा संस्कृत काव्य शास्त्र में वर्णित महाकाव्य के लक्षणों का अत्यंत कुशलता एवं सफलता के साथ निर्वाह किया है।

इनमे क्रमांक 4 से क्रमांक 17 तक की काव्य कृतियों का प्रकाशन 1997 और 2001 के प्रारंभ के मध्य अर्थात सवा चार वर्ष में ही हुआ, जो उनकी लेखन क्षमता की गति का उद्‌घाटन करता है। दुबे जी में केवल पुस्तक संख्या बढाने की विवशता नहीं है। चार सौ चार पृष्ठ के महाकाव्य (दधीचि) इन पाँखी काव्यकृति (112 पृष्ठ) का भी प्रकाशन हुआ। इस प्रकार देखा जाय तो एक कलेन्डर वर्ष में 516 पृष्ठ का काव्य सृजन पुस्तक रुप में तथा सैकड़ों पृष्ठों का काव्य सृजन पत्रिकाओं और समवेत संकलनों में प्रकाशित होना यह दर्शाता है कि आचार्य भगवत दुबे कविता के कम्प्यूटर हैं।

दुबे जी ने अपनी कृतित्व में कथ्य के विविध धरातलों को समेट कर रख लिया है। परन्तु अपने व्यक्तित्व के अनुसार उनका मूल स्वर मानवीय संवेदना और करुणा है। ये दोनो तत्व मूल्यों का आधार होते हैं। उनके दधीचि महाकाव्य में करुणा और मानवीय अनुभूतियाँ ही व्यापक रुप से उभरी हैं। बजे नगाडे काल के, चुभन, कांटे हुए किरीट, वन पाँखी और जीयो और जीने दो ऐसी कृतियाँ हैं। जिनमें मानवीय संवेदना को अंकुरित करने की अद्‌भुत शक्ति है।

दोहा दृष्टव्य है -

महलो में बन्दी जब स्वर्ण सवेरा हो,
कुटियों के हिस्से में सिर्फ अंधेरा हो,
साफ सफाई से लक्ष्मी घबराती हो
कीचड़ में धँसकर जो रास रचाती हो।(49)
जहाँ मंगलो को उल्लू भी आँख दिखाये।
वहाँ कही किस तरह खुशी के गीत सुनाये।(50)

ऐसे ही भाव लिए "शब्दों के संवाद" कृति से दोहा दृष्टव्य है।

भूखी बैठी झोपड़ी, धरे हाथ पर हाथ।
बुलडोजर के पेट में, समा गये फुटपाथ॥(51)

वे आज के वातावरण से ही अपने काव्य में विम्बों को उभारते हैं, मानव-व्यवहार के विविध पक्षों की झाखियाँ व्याप्त रहती है। 'दधीचि' महाकाव्य के रूप में आचार्य भगवत दुबे ने हिन्दी साहित्य को एक महत्वपूर्ण उपहार दिया है। वर्तमान आपाधापी और अति व्यस्तता के युग में प्रबंध काव्य लेखन और उसके पठन की प्रवृत्ति कुंठित होने लगी थी। आपने इस प्रवृत्ति को 'दधीचि' महाकाव्य द्वारा नई प्राण वायु दी है। इसकी युगबोध के रंगों से सजाकर प्रस्तुत किया है तथा संस्कृत काव्य शास्त्र में वर्णित महाकाव्य के लक्षणों का अत्यंत कुशलता एवं सफलता के साथ निर्वाह किया है।

पौराणिक संदर्भ में आधुनिकता का समावेश इस कृति को आज के युग में सार्थकता प्रदान करता है। यथा -

शस्त्रास्त्रो की मारक क्षमता, अब सुदूर गामी है।
पहले से ज्यादा विध्वंशक और दुष्परिणामी है॥(52)

दुबे जी की लगभग सभी कृतियों में आधुनिक युगबोध का रुपायन हुआ है जो उनकी सामाजिक चेतना की गहराई और व्यापकता का प्रमाण है।

आचार्य जी ने दोहों पर भी सतकीय प्रहार किये है। हाल ही में इनका चौथा दोहा संग्रह ''शब्द विहंग (1000 दोहे) भी छपकर आ गया है। आठ हज़ार से अधिक सशक्त दोहे लिखकर दुबे जी ने प्रथम पंक्ति के दोहाकारों मे साधिकार अपना स्थान बनाया है। 'शब्द विहंग' कृति मानव समाज को प्रस्तुत कर मानवी कल्याण का पथ निरापद करने की पुर जोर कोशिश की है। उनकी संस्कारित, परिष्कृत लेखनी से उपजा हर शब्द अपनी शक्तिशाली उड़ान से तथा आन-बान और शान से प्रवास रत रहते हुए हर हृदय को आनंदित एवं आल्हादित करता रहेगा।

दोहा जैसी सरस विद्या से सहस्त्र दोहे प्रस्तुत कर 'शब्द विहंग' संग्रह देकर श्री दुबे जी ने मानवता पर परम उपकार किया है। उनकी सारी रचनाएं पठनीय, विचारणीय हैं जिनमें समाज, जन जीवन का कल्याण निहित है। दुबे जी की चिर अनुभवी दृष्टि दोहों में आधुनिक जीवन के यथार्थ पर चोट है वे मानव को यथार्थ का दर्पण अपने दोहों के माध्यम से दिखाते हैं।

भागवत के दोहे बने, प्रेरक हैं उच्चार।
घोर हताशा से भरे, शब्द जहाँ निस्सार॥(53)
इन दोहों को यदि कहें, हम मणियों का हार।
तो न रही अत्युक्तिहै ऐसे हैं उपहार॥(54)
मनन और चिन्तन करें, पढ इनको हर बार।
होगा जिससे देश का, पल में बेडा पार॥

आधुनिक दोहों के विषय हमारे आसपास घूमते हुए हैं। अपने दोहों में समकालीन यथार्थ को कभी अन्योक्ति के माध्यम से कुशलतापूर्वक पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया है, तो कभी प्रकृति के प्रतीकों के माध्यम से। व्यक्ति रोजी-रोटी की कमाई मे अपने-अपने घरों से ऐसे बिछुडे हैं जैसे पक्षी घोंसलों को खाली छोडकर चले जाते हैं ऐसे ही भाव दोहा में देखें -

पूजाग्रह ढहते रहे, पला धर्म व्यापार।
बिछुड घोंसलो से गये, चिडियों के परिवार।।[55]

नगरों के राजपथ पर यदि एक ओर सद्भाव रैलियाँ निकल रही हैं तो दूसरी ओर किसी दुर्घटना में मारे गये भिक्षु के शव को कुत्ते नोंच रहे हैं। जगह-जगह चाकुओं बमों की और बंदूकों की दुकानें खोली जा रही हैं। दुबेजी का स्वर मूलतः आस्था और विश्वास का है। वे हताश होने वालों को संबोधित करते हैं कि पत्ता सूख कर भी आकाश मे उडता है और राख अन्ततः भूमि पर ही गिरती है। विदेश की ओर जानेवाले ब्रेन ड्रेन को लेकर व्यंग्य करते हुए वे लिखते हैं कि घर के गौर-गणेश लक्ष्मी पूजा करने के लिए विदेशों की ओर भाग रहे हैं। किसी को अपने राष्ट्रोत्थान की चिंता नहीं है। दुबे जी ने अपने दोहों में जहाँ-तहाँ नये-नये उपमानों के प्रयोग भी किये हैं। रचना के ऐसे ही भाव कवि के निम्न दोहों में अभिव्यक्त हुए हैं -

बम, चाकू, बन्दूक की, खुलती रोज़ दुकान।
पर मेडीकल लीव पर, चली गयी मुसकान।।[56]
रैली थी सद्भाव की, जहाँ शहर में खास।
कुत्ते रहे घसीटते, वहीं भिक्षु की लाश।।[57]
उत्साही होते नहीं, बाघा देख हताश।
सूख-सूख पत्ते उड़े,, छूने को आकाश।।[58]
कीचड़ में मोती गिरे, घटे न फिर भी साख।
व्योम चूम आये भले, गिरती नीचे राख।

दहेज प्रथा के दूषण से व्यथित कवि लिखते हैं कि-

सगुन चिरैयों को रहे, उल्लू गिद्ध खदेड़।
क्वाँरी बुलबुल हो रही, दौलत बिना अधेड़।।

लोगों को पश्चात्य संस्कृति पर फिसलते देख कवि कहते हैं -

संस्कृति के नैवेद्य से, मन भर रहा उचाट।
लोग सभ्यता की रहे, जूठी पत्तल चाट।।[60]
सदियों से जो पी रहे, धृणा-घुटन के घुँट।
कर वट, उनके पक्ष में कब बदलेगा ऊँट।।

दुबे जी का निम्न दोहा भी मन को झंकृत करने वाला है जिसमें काव्यं के प्रति उनका भाव प्रस्तुत है -

जैसे मुक्ता सीप में रहे सदा श्री हीन,
वैसे कुंठित भावना, रहे काव्य में दीन।(61)

कवि दुबे जी का सम्पूर्ण व्यक्तित्व व कृतित्व बहुमूखी कलात्मकता का वृक्ष है जिसको विभिन्न गुण, रस व अनुभूति का पोषण प्राप्त होता है। कवि ने अपनी पारंपरिक दोहा छन्द को प्राचीन मिथकों उपाख्यानो के सांकेतिक सन्दर्भो के सहारे नूतन प्रतीको से सुसज्जित हाँसिये से पृष्ठ के आमुख पर लाने का वन्दनीय उपक्रम किया है। परिणामतः आज के दोहे सम्पूर्ण साहित्यिक आर्जव और प्रांजल वैभव के साथ अपनी पौराणिक सांस्कृतिक मिथकीय आंचलिक-अस्मिता के आर्ष अभिधानों के आघोष एवं जीवंत जिजीविषा के जोश का उद्घो करने हेतु कटिबद्ध दिखाई देते हैं।

आचार्य दुबे जी ने दोहा साहित्य के अलावा भी साहित्य की अन्य विधाओं को भी श्रेय प्रदान किया है। उन्होंने अनेक गीत कविता व ग़ज़ल साहित्य की रचनाएं भी की हैं। ऐसी ही रचना में उनकी कृति 'चुभन' अपना विशिष्ट स्थान रखती है। यह गज़ल संग्रह दुबे जी के कृतित्व में चार चाँद लगाती है। श्री दुबे जी के द्वारा लिखित ग़ज़ल संग्रह 'चुभन' सारस्वत उपायन स्वरुप प्राप्त कर कृतकृत्यत का अन्तर्वेध हुआ है। दुबे जी छान्दस कविता के सुप्रसिद्ध प्रतिष्ठित पांक्तेय हस्ताक्षर है। आप भारतीय कविता की संस्कृति विरासत के साथ जुडे हैं। भगवत जी की रचनाओं में समय और युग दोनों ही प्रतिबिम्बित होते हैं। पिछले दो तीन दशकों से हिन्दी के कवियों ने काव्य-जगत में नये आयाम उपन्यस्त किये हैं। दुबे जी को हिन्दी ग़जलें, जटिलता और विसंवादिता से सर्वथा मुक्त है।

लौकिक और अलौकिक प्रेम की मार्मिक अभिव्यंजना के साथ जीवन की यथार्थता की बहुआयामी 'भंगिमायें आपकी गज़लों में सुलभ हुई है। अध्यात्म प्रधान गज़लों के लिए हिन्दी साहित्य में आपको सदा ही याद किया जायेगा, साथ ही समकालीन जीवन की विसंगतियों पर व्यंग्यात्मक तीक्ष्ण प्रहार करनेवाले व्यंग्यकारो में भी आपका नाम, प्रशंसामुखर बना रहेगा।

ब्रजकिशोर वर्मा ''शैदी''

आधुनिक काव्य की नई पीढी के उन हम सफ़र रचनाकारों में से है। जिन्होंने कविता को पूरी निष्ठा और श्रद्धा भाव से जिया है। विषय को सामने रखकर उनके भीतर का कवि तत्काल जो कुछ भी कहता है। उससे पाठक-श्रोता का तादात्म्य बखूबी बनता है। ऐसे व्यक्तित्व के मालिक श्री ब्रजकिशोर वर्मा हैं। उनके पास हुनर है। सज्ज्न इस हुनर और उनके सरल तथा निश्छल व्यक्तित्व से आकर्षित होकर उनका अपना बन जाता है।

ऐसा व्यक्तित्व रखनेवाले श्री 'शैदी' का जन्म 3 जून सन 1941 को अलीगढ (उ.प्र.) में हुआ। उन्होंने विज्ञान मे मास्टर डिग्री लेने के बाद एम.फिल. (सूचना विज्ञान) कर अपने व्यक्तित्व को और भी उजला निखारा। युगोस्लाव छात्रवृत्ति पर उन्होंने युगोस्लाव भाषा का विशेष अध्ययन किया। युगोस्लाव भाषाओं में भारतीय विषयों से सम्बंधित रचनाओं आदि पर शोध कार्य भी किया मुख्य रुप से उर्दू, खड़ी बोली, ब्रजभाषा व अंग्रेजी में काव्य लेखन उनके क्षेत्र रहे हैं।

वैसे तो 'शैदी' जी विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित व आकाशवाणी से प्रसारित कार्यक्रमों में झलकते रहे हैं। उनकी रचनाएं दोहे ऐसे कार्यक्रमों में अनेक प्रसारित हो चुके हैं उनके स्वयं के दोहा विशेषांक, दोहा संग्रह, काव्य संग्रहों का विवरण इस प्रकार है।

'सप्तपदी' खण्ड-1 में श्री देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र' द्वारा सम्पादित उनके 101 दोहे संग्रहीत है।

काव्य दोहा-विशेषांक जो श्री हस्तीमल 'हस्ती' द्वारा सम्पादित है। इस संग्रह में उनके 25 आधुनिक दोहे प्राप्त होते हैं। ''तिराहे पर खड़ा दरख्त'' और ''हम जंगल के फूल'' दोनो दोहा संग्रह उनके स्वयं के हैं जिनमें क्रमशः 200 और 700 दोनों का संग्रह हुआ है। साथही डॉ. इसाक 'अश्क' द्वारा सम्पादित 21 दोहों को 'समकालीन दोहे' नामक संग्रह में लिया गया है। इसके अलावा शैदी जी की एक और दोहा सतसई प्रकाशनार्थ सम्भावित है।

ब्रजकिशोर वर्मा 'शैदी' दोहों में शब्दों अलंकारों सूक्तियों की बुनावट उन्हे समकालीन आधुनिक दोहे के सृजन में एक विशिष्ट स्थान दिलाती है। वर्माजी का अनुभव-संसार अपने भारत देश से लेकर सुदूर विदेश तक फैला हुआ है तथापि उनके दोहों में अपने देश की मिट्टी की सौंधी सुगन्ध पग-पग पर विद्यमान है। जब भी उनकी रचनाओं का पाठन होता है। तब तब यही लगता है कि यहीं कहीं आसपास बैठकर इस रचना का सृजन हुआ है। वे अपने कथ्य के प्रति जितने सजग हैं उतने शिल्प के क्षेत्र में सचेष्ट भी है। कोहरे की चादर तनी देख कर वे जितने उद्वेलित हो उठते हैं उतने ही नवजात शिशु को छोडकर चली जानेवाली कुँआरी माँ जैसी बर्फ को देखकर अद्विग्न हो उठते हैं। उनके दिल का बजरा सन्नाटे की झील में तैरता है। हृदय के गाछ पर दुःख की बारहमासी बेल लहराती है। जीवन और मृत्यु के अन्तर को वे चूल्हे और मरघट की आँच के भेद से स्पष्ट करनेवाले दोहाकार है। वर्तमान जीवन की असंगतियों को उन्होंने घड़ियालों से भरे तालाब में नहाने की भांति संत्रासपूर्ण माना है। भाषा के स्तर पर उनके दोहों की चेतना कहीं-कहीं ब्रजभषा के संस्कारों से अभिमंडित प्रतीत होती है जिसमें कच्चे दूध के जैसी अपनी एक अलग स्वादानुभूति होती है।

'शैदी' जी के आधुनिक दोहों में मानव जीवन व समाज में व्यांप्त विसंगतियों का गहरा वर्णन है। राजनीति, परिवार के साथ ही साथ वे क्षण जो आत्मा को हिलाकर रख देते हैं। अपने होने का सबूत छोड जाते हैं। ऐसे पल शैदी जी के दोहों में संग्रहीत हो गये हैं। दोहे की तासीर के बारे में कहा है कि -

दोहे की दो पंक्तियाँ, ज्यों गोरी के नैन।
सीधे-सीधे हृदय से, कर जाती हैं बैन।।(62)
है स्वतंत्र अस्तित्व से ही जीवन की शान।
सागर में सरिता मिले, खो देती पहचान।।(63)

प्रकृति के सुन्दर व मोहक दृश्यों को शैदी जी ने काव्य दोहों को और भी अधिक सजा दिया है। प्रकृति के मोहक रुप का वर्णन करते हुए कहते हैं कि -

पतझड़ भागा, आ रही दुल्हन बनी बहार।
डाल-डाल हर वृक्ष ने, टांगी बंदनवार।।
सरसों फूली हर तरफ, धरती रही सुहाय।
ज्यों गोरी के बदन पर, उबटन दिया लगाय।।
डाली डाली तितलियां, फूलो पर मँडरायँ।
ज्यों मेले में लड़कियाँ, इधर-उधर बतियायँ।।
रवि दिन भर फिरता रहा, थकित हुए जब पाँव।
संध्या के संग चल दिया, क्षितिज पार, निज गाँव।।

श्री 'शैदी' भारत की उस साँझी संस्कृति के सबल प्रतीक है जिसमें हिन्दी और उर्दू, दोनों ही भाषाओं के साहित्य का योगदान है। इसी लिए उनकी रचनाओं में जो भी आभा व्याप्त है उसमें हिन्दी की चाँदनी भी है और उर्दू की धूप भी। 'शैदी' जी की धूप छाँही रचनाएं सहज ही पाठक का ध्यान आकर्षित कर लेती है।

'शैदी' जी के दोहे जहाँ एक ओर तो ऐसी नवीन विम्बमयता है कि वे लैण्डस्केप जैसे लगते हैं। प्राकृतिक द्रश्यों को शब्दित ही नही करते साकार भी कर देते हैं -

घाटी में संगीतमय, आयोजन भरपूर।
लहरों की सारंगियाँ, झरनों के संतूर।।(64)
कदली गंध फटक रही, ले पत्तों का सूप।
उधर बेर की डालियाँ, छान रही हैं धूप।।(65)

दोहा संग्रह में ऐसे भी नाज़ुक खयाली के दोहे हैं जो बिहारी की याद दिला देते हैं -

बडी नुकीली है कली, अभी हुए क्यों दँग?
खोलेगी मुँह जिस घड़ी, तब दीखेंगे रंग।।(66)
गोरी नर्म हथेलियाँ, उनमें जगमग दीप।
मोती को थामे हुए, खुली हुई ज्यों सीप।।(67)

'शैदी' जी के ऐसे दोहों में कल्पना की उडान के साथ-साथ सौन्दर्यबोध की सरसता भी है। किसी भी कवि की संवेदनशीलता का सच्चा परिपाक तब होता है जब वह मौन की आवाज को भी सुनने लगता है क्योंकि दिनकर जी ने कहा है कि -

मैन है, प्रच्छन्न है सबसे बडी आवाज़।

इसी संदर्भ में शैदी जी का भी यह दोहा ध्यान से पढने के योग्य है -

निर्जन बन, अनुपम छटा, दृश्य सभी अनमोल।
कानों में गूँजा किए, बस चुप्पी के बोल।।(68)

कविता एक स्वयं की व्यक्तिगत उपलब्धि ही नही है। बल्कि विरासत भी है। इसीलिए स्वाभाविक है कि आजकी आधुनिक कविता के स्वर किसी पुरानी कविता से मेल खा जाएँ। ऐसे ही भाव शैदी जी के निम्न दोहे में नज़र आते हैं।

छिपे पडे भू गर्भ में, हीरा पन्ना-लाल।
ज्यों, पैसों की पोटली, बुढिया रखे सँभाल।।(69)

कहने का तात्पर्य है कि धरती के नीचे से जो भी फूल निकलकर आता है। वह हाथों मे सोना लिए होता है। क्या कांरूँ ने अपना खज़ाना रास्ते मे लुटा दिया था? इन पारम्परिक अभिव्यक्तियों से आगे बढकर 'शैदी' जी ने अपने लिए एक नई राह भी बनाई है और अपने दोहों को आज की मनःस्थितियों और परिस्थितियों से भी जोडा है। आधुनिक भावों के धरातल पर छुनेवाले 'शैदी' जी के भाव भरे दोहे से इस बात की पुष्टि अवश्य होती है-

ऐसा तुमने क्या बुना? समझ न पाया मर्म।
स्वेटर मेरा ऊन से, कई गुना है गर्म।।(70)

ऐसे भावों से ग्रस्त दोहो में प्रेम की गर्माहट ही नहीं है। बल्कि उनमें आधुनिक जीवन की विसंगतियों, विषमताओं के साथ-साथ मोह भंग की दाहकता भी है। उदाहरण के लिए हम 'शैदी'

दोहा संग्रह में ऐसे भी नाज़ुक खयाली के दोहे हैं जो बिहारी की याद दिला देते हैं -

बडी नुकीली है कली, अभी हुए क्यों दँग?
खोलेगी मुँह जिस घड़ी, तब दीखेंगे रंग।।(66)
गोरी नर्म हथेलियाँ, उनमें जगमग दीप।
मोती को थामे हुए, खुली हुई ज्यों सीप।।(67)

'शैदी' जी के ऐसे दोहों में कल्पना की उडान के साथ-साथ सौन्दर्यबोध की सरसता भी है। किसी भी कवि की संवेदनशीलता का सच्चा परिपाक तब होता है जब वह मौन की आवाज को भी सुनने लगता है क्योंकि दिनकर जी ने कहा है कि -

मैन है, प्रच्छन्न है सबसे बडी आवाज़।

इसी संदर्भ में शैदी जी का भी यह दोहा ध्यान से पढने के योग्य है -

निर्जन बन, अनुपम छटा, दृश्य सभी अनमोल।
कानों में गूँजा किए, बस चुप्पी के बोल।।(68)

कविता एक स्वयं की व्यक्तिगत उपलब्धि ही नही है। बल्कि विरासत भी है। इसीलिए स्वाभाविक है कि आजकी आधुनिक कविता के स्वर किसी पुरानी कविता से मेल खा जाएँ। ऐसे ही भाव शैदी जी के निम्न दोहे में नज़र आते हैं।

छिपे पडे भू गर्भ में, हीरा पन्ना-लाल।
ज्यों, पैसों की पोटली, बुढिया रखे सँभाल।।(69)

कहने का तात्पर्य है कि धरती के नीचे से जो भी फूल निकलकर आता है। वह हाथों मे सोना लिए होता है। क्या कांरूँ ने अपना खज़ाना रास्ते मे लुटा दिया था? इन पारम्परिक अभिव्यक्तियों से आगे बढकर 'शैदी' जी ने अपने लिए एक नई राह भी बनाई है और अपने दोहों को आज की मनःस्थितियों और परिस्थितियों से भी जोडा है। आधुनिक भावों के धरातल पर छुनेवाले 'शैदी' जी के भाव भरे दोहे से इस बात की पुष्टि अवश्य होती है-

ऐसा तुमने क्या बुना? समझ न पाया मर्म।
स्वेटर मेरा ऊन से, कई गुना है गर्म।।(70)

ऐसे भावों से ग्रस्त दोहो में प्रेम की गर्माहट ही नहीं है। बल्कि उनमें आधुनिक जीवन की विसंगतियों, विषमताओं के साथ-साथ मोह भंग की दाहकता भी है। उदाहरण के लिए हम 'शैदी'

जी के ही निम्न दोहों को देख सकते हैं -

गमलों मे सिमटे चमन, कमरो में आकास।
महानगर में यूँ प्रकृति, भोगे कारावास॥(71)
जिस मिट्टी में खेलकर, बडा हुआ परिवार।
आज उसी से बन रही, आँगन में दीवार॥
कहाँ न जाने खो गया, अपना साँझा गाँव।
इसके घर में पेड़ था, उसके घर थी छाँव॥

दोहाकार शैदी जी ने ऐसे दोहों के माध्यम से आधुनिक युगीन विडम्बनाओं पर प्रहार भी किये है। और आज के समय की सचाई को स्पष्ट शब्दों में उधेल कर रख दिया है। दोहा छन्द में गठित कवि के ऐसे भावाभिव्यक्ति से कवि का महान व्यक्तित्व व गहरी सोच उभर कर हमारे सामने आती है। ऐसे ही आधुनिक यथार्थ का वर्णन निम्न दोहे में देखने को मिलता है-

अपने गंधित पुष्प भी, रहे दृष्टि-प्रतिकूल।
लोग प्रशंसा पा रहे, ले काग़ज़ के फूल॥(72)

कवि एवं दोहाकार श्री व्रज किशोर वर्मा 'शैदी' का ''तिराहे पर खड़ा दरख्त'' दोहा एवं ग़ज़ल के बीच की कडी है। इस संग्रह में 'शैदी' जी के दोहे व श्रेष्ठ ग़ज़लों का सुन्दर संगम हुआ है। जितनी आधुनिकता और यथार्थ उनके दोहों में देखा जा सकता है उतना ही प्रभाव उनकी ग़ज़लों में भी है। उनमें एक तरफ रिवायत की झलक भी है और निजता का रंग भी। उनमे बहर की खानी भी है और भावनाओं का प्रवाह भी, इनमें सोज़ भी है और शोखी भी परम्परित शिकवा-शिकायत भी है और आज की ज़िंदगी की तकलीफ भी -

हर शख्स से उम्मीदें-वफा हो नहीं सकती।
यह रस्म सभी से तो अदा हो नहीं सकती॥(73)
पिघलेगा, तो हर शक्ल में ढल जायेगा 'शैदी''।
पत्थर में ये शीशे की अदा हो नहीं सकती॥(74)

शैदी साहब की ग़ज़लों की ही तरह उनकी नज़्मों में भी रोमानियत और तलखियों के रंग घुले-मिले हैं। उनकी नज़्मे आधुनिक हिन्दी कविता की अनौपचारिक अभिव्यक्ति के काफी निकट पडती है -

"हर घड़ी चेहरा तेरा है मेरी निगाहों में,
जैसे अखबार की सुर्खी में खबर हो कोई।[75]
चाँदनी रात में पूनम का चाँद हो जैसे,
या अँगूठी में जड़ा लालो-गुहर हो कोई॥"

शैदी साहब की हाल ही में प्रकाशित दोहा संग्रह (दोहा सतसई) "हम जंगल के फूल" में कवि ने आधुनिक भावों से अभिव्यक्तिकर सैकड़ों दोहों का सृजन किया है जिनमें से कुछ दोहे तो आज अभी की विडम्बनाओं और समस्याओं का मार्मिक वर्णन करते हैं। ता.26-1-2000 में आये गुजरात की भूकम्प त्रासदी पर उन्होंने भावों को सजीव करनेवाले शब्दों में ढाला है। इन दोहों को पढ़कर समय की मार्मिकता हमारे सामने साच्छात आ जाती है -

किसे पता था? वह सुबह लेगी सब कुछ छीन।
निद्रा से जग कर, हुए चिर निद्रा मे लीन॥[76]

सुना आज, लेकर गई, मृत्यु उसे भी साथ।
कल ही तो की फोन पर, मैने उससे बात॥

यह है कैसी एकता?, यह कैसा भुज पाश?
महा चिता की गोद में, सजीं लाश पर लाश॥[77]

खेल प्रलय का विश्व में, दिखलाती दिन-रात।
नया पता था मृत्यु का, "जनपद भुज, गुजरात"॥
क्या मन्दिर, क्या मस्ज़िदें, क्या गिरजे, गुरुद्वार।
सिद्ध हुआ, सब एक हैं, जब होता संहार॥[78]

जाने किसकी याद में, थी धरती बेहाल।
हिचकी से आते रहे, रह-रह कर भूचाल॥

शैदी साहब ने 13-12-2001 को हुए संसद भवन पर हमले को दोहा छन्द में अभिव्यक्ति देते हुए यह सिद्ध किया है कि साहित्य समाज का दर्पण है। और समाज में जो घटना होती है। उसका असर साहित्य पर अवश्य आता है। ऐसे सजीव ताजें भावों को रचकर शैदी जी ने अपने श्रेष्ठ व्यक्तित्व का परिचय दिया है और समाज को नई राह दिखाते हुए आगाह भी किया है-

प्रजा स्तब्ध, भौंचक सभी, सुन सहसा यह बात।
कैसे राज किरीट तक, पुहंचे उसके हाथ॥[79]

कहाँ गये रक्षा-पुरुष? प्रहरी है किस ओर?
लगे घूमने राजपथ पर अब डाकू-चोर॥

जिसको दावत में बुला करते थे सत्कार।
वही अदावत में लगा, करे पीठ पर वार॥[80]

श्रीकृष्ण शर्मा

हिन्दी काव्य साहित्य के आधुनिक दोहा कारों में **श्री कृष्ण शर्मा जी** एक वरिष्ठ दोहाकारों में उल्लेखनीय हैं। डॉ. देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र' द्वारा सम्पादित 'सप्तपदी' श्रृंखला के वे महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। देश की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं तथा अनेक चर्चित संकलनो के माध्यम से आपकी रचनाएं हिन्दी काव्य साहित्य जगत में अपना एक विशिष्ट स्थान रखती है। श्री कृष्ण शर्मा के दोहे हमें बरसात की प्रथम फुहार की तरह रोमांचित करते हैं। आपके दोहों में अनुभूति के सूक्ष्मतम बिन्दु को पकडकर उसको अभिव्यक्त कर देने की अद्भुत क्षमता है उनके दोहों का सृजन अनुभव की आँच पर पक कर होता है।

हिन्दी काव्य के ऐसे वरिष्ठ रचनाकार का जन्म 17 अक्टूबर सन 1933 ई. मे आगरा, उ.प्र. मे हुआ। पिता स्व. श्री फूलचन्द्र शर्मा थे। श्री कृष्ण शर्मा जी ने एम.ए., बी.एड. (हिन्दी) तक शिक्षा प्राप्त करें। सम्प्रति मे उन्होंने म.प्र. शासन मे राजपत्रित अधिकारी पद तक प्राचार्य के रूप में सेवा दी और निवृत्त होकर आज साहित्य-सर्जना मे रत् है। उन्हे साहित्य एवं हिन्दी की सेवा के लिए अनेक संस्थाओ द्वारा सम्मानित किया है। देश की प्राय सभी पत्र-पत्रिकाओं में सन 1952 से कविता/गीत/बालगीत आदि का प्रकाशन और आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से इनका प्रसारण भी किया जाता रहा है। श्री शर्मा जी ने तेलुगु और बंगला से हिन्दी में अनेक कवितओं का अनुवाद किया है।

मरीचिका, विकाल, ताज की छाया में, हिन्दी के मन मोहक गीत, हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ मुक्तक, स्पन्दन, सप्तपदी 5 तथा दोहादशक जैसी समवेत काव्य-संग्रहों में उनकी श्रेष्ठ रचनाएं संकलित है।

आज चारों तरफ लेखन में दोहा का दौर चल रहा है। सभी रचनाकार इस छंद को लेकर अपने काव्य की श्री वृद्धि कर रहे हैं। यद्यपि दोहा काफी पुराना छन्द है तथापि आज भी उसमें अपनी बात बड़े जोर-शोर से कही जा रही है।

जहाँ तक शर्मा जी के दोहों का स्वंध है। वे भी अपनी युगीन परिस्थितियों पर परिसीमाओं

के सांचे में ढले हैं। आज का जीवन विसंगतियों से भरा पड़ा है। राजनीति, धर्म, समाज, साहित्य, शिक्षा हर क्षेत्र में विद्रूपताएं मुह फैलाए खड़ी हैं। श्री शर्माजी के दोहों में इन सभी समस्याओं का चित्रण बखूबी हुआ है। अनुभवी दायरे में बँधे उनके भाव कहते हैं -

वायु, अग्नि, जल, भू, गगन और समय का खेल।
जंगल दब कोयला हुए, जल दब-घुटकर तेल॥(81)

मानव जीवन में अनेक उतार चढाव आते हैं। कहीं सफलता है तो कहीं असफलता भी देखनी पडती है। ऐसे में लक्ष्य को प्राप्त करने में असफल है तो निराश क्यों होना -

असफलता पर क्यों भला मचता है यों शोर।
मोती लेकर क्या सभी, आते गोता खोर॥(82)

श्री शर्मा जी के दोहे भारतीय संस्कृति का जयघोष करते हैं वही इसके निरन्तर होते क्षरण पर क्षोभग्रस्त भी है। साथ ही दोहे राष्ट्रभाषा हिन्दी की दयनीयता पर भी खिन्न हैं -

अंग्रेजी के कुचक्र को परिभाषित करते हुए आपने कहा है कि -

अंग्रेजी की शक्ति है, बस कुचक्र औ स्वार्थ।
कहा कृष्ण ने व्यूह यह, बडा जटिल है पार्थ॥(83)

समकालीन दोहो की शिराओं मे नयी ऊर्जा का संचार करने तथा श्रेष्ठ दोहाकारों को एक स्थान पर जुटाने की दिशा में श्री देवेन्द्र शर्मा की सप्तपदी के बाद अशोक 'अंजुम' द्वारा सम्पादित 'दोहा दशक' दोहा संग्रह एक माइल स्टोन है। श्री कृष्ण शर्मा जी के दोहों का प्रकाशन दशक 2 में भी हुआ है। उनके दोहों के भाव आधुनिक व्यवस्थाओं पर चोट करते हैं। देश की हर राजनैतिक पार्टी हर सरकार गरीबी मिटाने का नारा लगाती है, वायदा करती है। मगर ये नारे और वायदे नितान्त खोखले साबित होते हैं। दोहाकार कहता है कि -

जले गरीबी मोम-सी, मँहगाई की आग।
खेल रही सत्ता मगर, सुख सत्ता के फाग॥(84)
जिसको अपना कह सकें दिखा न ऐसा ख्वाब।
रंग बदलकर रह गये अब वे सुखि गुलाब॥(85)

आँखों से मजबूर हम, साथ न देते हाथ।
फिर भी खेले जा रहे, हम शकुनी के साथ॥(86)

किसी तरह जिसने सिमिट, सिकुड़ बचायी लाज।
सब मर्यादा तोड़ वह नदी बह रही आज॥[87]

श्री कृष्ण शर्मा आधुनिक कविता के श्रेष्ठ कवि महाप्राण 'निराला' के बारे में कहते हैं कि-

महाप्राण को बाँधकर नहीं रख सके ''पाद''।
सच तो यह है 'वाद' भी हैं, सब उसेक बाद॥
सम्पादक के द्वार जो तिरस्कृता-निष्पन्द।
वह 'जूही की कली' थी नव कविता की गंध॥

श्री शर्मा जी पुस्तक व उसके रचनाकार को केन्द्र में रखकर कहते हैं कि -

'झण्डा-गीत' प्रसिद्ध है, 'पार्षद जी' गुमनाम।
ज्योति जगा, बुझना रहा, है कवियों का काम॥[89]
सत्ता का ये सुख सभी को कर देगा भ्रष्ट।
'झूठा सच' 'यशपाल' का, या भविष्य का पृष्ठ॥[90]

श्री कृष्ण शर्मा जी अपने व्यक्तित्व व दोहों के बारे में कहते हैं कि -

मैं दोहों के बारे में क्या कहूँ कुछ समझ में नहीं आता। दूसरा क्या और कैसे कर रहा है। देखकर कुछ सीमा तक जाना जा सकता है। लेकिन अपने किये हए को उधेडना इतनी संश्लिष्ट प्रक्रिया है कि उसे खुद के लिए देख पाना आसान नहीं है। मैने आपातकाल में पहल पहल दोहे लिखे थे -

अपने पर ही जुल्म है अपनों से ही वैर।
आज़ादी के बाद सब नेता बन गये गैर॥[91]

इसके बाद 8-7-95 को कुछ दोहे लिखे जिन्हे पढकर 'देवेन्द्र शर्मा' 'इन्द्र' ने अपने 50-60 दोहे भेजे और मुझसे कुछ और दोहे लिखने का तथा 11-11-95 को सप्तपदी-5 में शामिल होने का आग्रह किया। और यही वह दौर है। जहाँ से दोहा लेखन मे मेरा क्रम शुरु हुआ। मैंने अपने दोहों में भाव व्यक्त किये हैं। जो जीवन में देखा, भोगा महसूस किया।

श्री कृष्ण शर्मा ने जिस आतुरता व ईमानदारी से दोहों में लिखना शुरु किया था वह आज अपने पूरे वैभव में है। उनके दोहों में अभिधा लक्षणा और व्यंजना तीनों ही शक्तियों का संगम है। मुहावरों से सम्पृक्त भाषा अपनी सरलता और सुबोधता के कारण भावों को पाठक तक सम्प्रेषित करने में सक्षम है।

जीवन में आत्मीयता का अभाव, स्वार्थ परता, वक्त की निर्ममता, युवाश्रम का गाँव से शहर की ओर पलायन, भटका हुआ आज का नेतृत्व, दौलत की हवस, आम आदमी की पीडा-भरी ज़िंदगी, अप-संस्कृति का विकास आदि वर्णित विषयों की विविधता ने श्री कृष्ण शर्मा जी के दोहों को बहुरंगी बना दिया है। अनुभूति और अभिव्यक्ति दोनों ही दृष्टियों से उनके ये दोहे हिन्दी जगत में अपने अपेक्षित स्थान बनाने में सफल होंगे।

कृष्णेश्वर डींगर

अपनी आयु के पैंसठ वर्ष पूरे करने वाले और पत्र-पत्रिकाओं में अपेक्षा कृत अल्पप्रकाशित होते हुए श्री कृष्णेश्वर डींगर ने जैसे दोहों का सृजन किया है वे पूर्णतः नये आधुनिक दोहों की सीमाओं में आते हैं।

श्री कृष्णेश्वर डींगर का जन्म 5 मार्च सन 1931, खैराबाद (अवध), जिला सीतापुर, उ.प्र. मे हुआ। इनके पिता स्व. श्री आदित्य प्रसाद डींगर थे । श्री कृष्णेश्वर जी ने लखनऊ विश्व विद्यालय से विज्ञान में स्नातक तथा अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विद्यापीठ से साहित्य-सुधाकर (उत्तमा) की पदवी हाँसिल की। कविता के प्रति लगाव बचपन से ही रहा है। अतः डींगर जी ने स्कूल स्तर से ही कविताएं लिखना प्रारम्भ कर दिया था। आज लेखन के उच्च मुकाम पर पहुंच कर डींगर जी की अनेक पुस्तकों का प्रकाशन भी हुआ जिनमे से -

- परिधि से केन्द्र तक (काव्य संग्रह)
- गांधारी (खण्डकाव्य)
- अपने-अपने इरादे (व्यंग्य कहानियां)
- एक बूढ़ा पेड़ (व्यंग्य कविताएं)
- सोता अनपढ़ जागा (बाल कविताएं)
- गौरैया और पागल हाथी (पद्य कविताएं)

तथा प्रकाश्य पुस्तकों में -

- घिर गयी है शाम (गीत संग्रह)
- अब न आम बौराएगा (दोहा संग्रह)
- यथा स्थिति (काव्य संग्रह)
- सत्यबोध (पद्य कथाएं)
- माटी की गंध (ग्रामीण परिवेश की कविताएं)
- आखिरी दिन (कहानियां)

- समीक्षाएं, लेख, संस्मरण आदि।

इन पुस्तकों के साथ साथ डींगर जी ने अनेक पत्र पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया है।

इनके उपरान्त श्री डींगर जी के आधुनिक दोहों का संग्रह श्री देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र' द्वारा सम्पादित ''सप्तपदी-5'' के संकलन में संग्रहित है। डींगर जी के ये दोहे सामयिक देशकाल को लेकर लिखे गये हैं।

श्री डींगर जी ने साहित्य के क्षेत्र में अनेक विधाओं में कार्य किया है। उन्होंने लगभग एक हज़ार दोहों का सर्जन किया है। जिसमें लगभग 100-200 आध्यात्मिक हैं। जो अनेक धार्मिक पत्रिकाओं में छप चुके हैं। आज की यथार्थ परिस्थिति पर सामाजिक व्यवस्था पर चोट करना उनकी रुचि रही है, भ्रष्टाचार, राजनीति के अवमूल्यन आदि पर व्यंग्य करना आवश्यक है। श्री डींगर जी के 101 दोहे ''इन्द्र'' द्वारा सम्पादिक सप्तपदी-5 में प्रकाशित हुए हैं।

दोहा को लेकर श्री डींगर जी कहते हैं कि - ''दोहा लिखना आजकल लोगों ने बहुत आसान समझ लिया है। किन्तु वह इतना है नही मात्राएं तो अपने मन से बढा घटा लेते हैं। ऐसा होना नहीं चाहिए, कम से कम शब्दों में बड़ी बात कहना। वह भी दोहा छन्द के अनुशासन में - यही दोहाकार की विशेषता होनी चाहिए।

श्री डींगर जी का कहना है कि दर्पण एक हो या अनेक सब में एक ही चेहरे का प्रतिबिम्ब दिखायी पडता है। कहने का तात्पर्य है कि देश काल, जाति वर्ण और वर्ग भेद होते हुए भी हर व्यक्ति की समस्या, पीडा और दुःख, दर्द कमोवेश एक जैसे ही होते हैं। डींगर जी का व्यक्तित्व व उनकी सूझ बूझ उनकी रचनाओं में भी दिखाई पडती है । आज के हितात्मक दौर से रचनाकार व्यथित है। उसे दुःख है प्रकृति का उदा. देते हुए डींगर गेंदे को कभी उससे प्रताडित नहीं करता। बरगद और तुलसी साथ साथ रहकर भी आपस में तकरार नहीं करते। ऐसे ही भावों की अभिव्यक्ति निम्न दोहों में मिलती है -

यद्यपि काँटे की छड़ी, है गुलाब के पास।
गेंदे के सँग बन्धुता, रखता बारह मास।।(92)
बरगद तुलसी में नहीं, होती है तकरार।
रहते हिल मिल प्यार से, कदली औ कचनार।।(93)

कवि प्रजातंत्र और षडयंत्र मे हुए आपसी तालमेल को लेकर भी कम चिंतित नहीं है। वह देखता है कि -

सत्ता की माया प्रबल, देख बुद्धि हैरान।
कल तक गाँधी सन्त थे, आज हुए शैतान॥[94]
बहरों को कुर्सी मिली, गूंगों को अधिकार।
अन्धो को दर्पण दिये, लूलो को हथियार॥[95]

कहने का तात्पर्य देश की सत्ता से है। जो जिस लायक नहीं है। राजनीति में वही सत्ता उसे मिल रही है। आज राजनीति ने समाज, अर्थनीति और साहित्य को भी अपनी घुस पैठ से दूषित कर रखा है। दोहाकार के दोहों में सर्वत्र व्यंग्य प्रधान शैली में रचना हुई है। कवि के ऐसे दोहे आधुनिक साहित्य में अपनी अलग ही पहचान बनाते हैं। कवि ने विभिन्न प्रतीकों व उपमानों का सहारा लेकर व्यंग्य किया है-

ले उधार की रोशनी, नाप रहा आकाश।
बँधुआ बन कर सूर्य का, कब पाता अवकाश॥

कुर्सी पर बौना चढ़ा, होने लगा गुमान।
कुर्सी के आकार का उसे न कुछ था ज्ञान॥

चींटी के परिवार-सा बौनो का माहौल।
लपक वहीं पर जा चढे, जहाँ दिखे कुछ डौल॥[97]

अमर बेल से ग्रसित तरु, कीडों का आहार।
गिद्धों का कोटर बना, दूर स्वजन परिवार॥[98]

भैंस वुद्धि से कह रही, बीन हमें लौटा।
बजा बजा कर थक चुकी, अब तू भी पगुरा॥[99]

इस प्रकार बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न कवि ''डींगर'' जी के काव्य की उदात्त भावना आधुनिक हिन्दी के साहित्य में रेखांकनीय श्रीवृद्धिकारक है।

श्री माहेश्वर तिवारी

आधुनिक दोहा छन्द के सशक्त हस्ताक्षरों में श्री माहेश्वर तिवारी उन सुकण्ठ रचनाकारों में हैं जिन्होंने अपने सुन्दर नाजुक कमनीय और हृदयस्पर्शी स्वर के माधयम से देश भर के काव्य मंचों पर दिग्विजय की ध्वजा फहरायी है।

श्री 'माहेश्वर' जी का जन्म 22 जुलाई सन् 1936 में उत्तर प्रदेश के, बस्ती जनपद के

मलौली गाँव में हुआ। उन्होंने उच्चतम शिक्षा प्राप्त की परन्तु अपनी शैक्षिक उपलब्धियों के प्रति उदासीन रहे हैं।

उसके श्रेष्ठ प्रकाशनों में -

हर सिंगार कोई तो हो (नवगीत संग्रह),

सागर मुद्राओं पर तर्जनी (स्वतंत्र काव्य संग्रह)

पांच जोड बाँसुरी, एक सप्तक और

नवगीत दशक-2 तथा यात्रा में साथ-साथ तथा नवगीत अर्ध शती जैसे कई महत्वपूर्ण संग्रहों में सहयोगी रचनाकार तथा उन्होने रचनाओं का पंजाबी, गुजराती, उडिया और अंग्रेजी भाषा में अुवाद भी किया है।

'दोहा' के क्षेत्र में श्री तिवारी द्वारा रचित 101 दोहों का संग्रह देवेन्द्र 'शर्मा' इन्द्र द्वारा सम्पादित ''सप्तपदी-5'' में संग्रहीत हैं। इस संग्रह में आपकी आधुनिक यथार्थवादी अभिव्यक्ति के दर्शन होते हैं। देश समाज की दशा का मार्मिक वर्णन है। वे जितने श्रेष्ठ स्वरकार है उतने ही विदग्ध शब्द शिल्पी भी है। गीत और नवगीत के इस दुलारे रचनाकार के दोहे भी उतने ही हृदयावर्जक़ है उनके सीधे साधे वाक्यों में वर्णन होनेवाली शैली व गेयता शब्दों में जान डाल देती है। वे अपने दोहों के द्वारा आधुनिक व्यवस्था पर सामने से चोट करते हैं।

राजनीति व्यवस्था पर क्षुब्ध होते हुए कहते हैं कि- परिवर्तन के नाम पर हमने पूरे देश को ही बिहार बना दिया है। साँपों ने सम्पूर्ण चंदनगाछ को विषाक्त कर दिया है। किन्तु उन पर कोई अभियोग नहीं लगाया जा रहा है। कवि का हृदय व व्यक्ति सरल और स्वभाव कोमल है। अतः देश व समाज के जधन्य रूप को देखकर वे व्यथित होते हैं। आज रिस्तों में आयी हुई कटुता को लेकर वे कहते हैं कि-

रिश्तों के बदले हुए, दिखते सभी उसूल।
भैया कड़वे नीम-से, दीदी हुई बबूल।।(100)
रेत रेत जब से हुए आपस के व्यवहार।
मुरझाये दिखने लगे, सब उत्सव त्यौहार।।(101)

देश की व्यवस्था पर वे लिखते हैं कि -

धीरे-धीरे देश में, आया अजब सुराज।
आँखों में पानी नहीं, घर में नहीं अनाज।।(102)

दाने-दाने के लिए, चिडिया है बेहाल।
उधर साजिशों के नये, बुने जा रहे जाल॥(103)

श्री माहेश्वर तिवारी जी के दोहों में हमें जीवन के प्रत्येक अनुभव होते हैं। इनमें होली के रंग भी हैं और दिवाली का प्रकाश भी कवि ने अनेक प्रतीकों व भावनाओं को शब्दों में गढकर एक नया रूप देकर साकार किया है उनके दोहों में धूप की बाँसुरी, अँखुआये संवाद, झरनो का संगीत, सुनती यात्रायें थोडी-थोडी आगे बढनेवाली लम्बी नदी की राहें, पुल की बाँहों में बेचैनी-सी छटपटाती नदी, जैसे बिम्बों की अनन्त शृंखला इन दोहों में नवगीतों जैसी ताज़गी देती है। माहेश्वर जी के कृतित्व की यह विशेषता है कि उनमें स्थान-स्थान पर जीवन के ललित और मधुर प्रसंग भी बखूबी से चित्रित हुए है।

फागुन आकर दे गया, कुछ ऐसा आदेश।
आँखों-ऑखों में मिले, फूलो के दरवेश॥(104)

महुआ पका सिवान में, महका सारा गाँव।
धीरे-धीरे गंध ने, खूब पसारे पाँव ॥(105)

श्री कैलाश गौतम

उन विरल दोहाकारों में से हैं जो सीधी-साधी भाषा में गहरी से गहरी चोट कर जाते हैं। आधुनिक (नये) दोहे का जब भी साहित्य में कहीं संदर्भ आयेगा तब गौतम जी व उनके दोहे अनायास ही लोगों की स्मृति पटल पर बिजलियों की तरह कौंधने लगेंगे।

श्री कैलाश जी का जन्म 8 जनवरी सन 1944 मे उ.प्र. राज्य के गांव डिग्धी, चन्दौली वाराणसी जनपद में हुआ। हिन्दी के प्रति बचपन से ही आपका लगाव था। साथ ही अपनी लोक भाषा भोजपुरी में रचना करना भी प्रिय रहा है। एम.ए., बी.एड. हिन्दी विषय से करने के पश्चात उन्होंने साहित्य सर्जन में और रुचि दिखाई। श्री गौतम जी की रचनाएं देश की अनेक पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। साथ ही आकाशवाणी दूरदर्शन भी इनकी रचनाओं का प्रसारण करते रहे हैं।

श्री गौतम जी की प्रकाशित रचनों में काव्य संग्रह एक (गीत संकलन), गीली माचिस की तीलियाँ (कविता संग्रह), जोडा ताल (गीत संग्रह) आदि हैं। तथा इसके अतिरिक्त अनेक गीत संग्रह हास्य-व्यंग्य-निबंध संग्रह और भोजपुरी कविता का संग्रह शीघ्र प्रकाशन की तैयारी में है । हो सकता है। कुछ प्रकाशित भी हो चुके हों। श्री कैलाश जी के कई आधुनिक दोहों का संग्रह श्री देवन्द्र शर्मा द्वारा सम्पादित सप्तपदी-5 में संग्रहीत हैं। ये दोहे आधुनिक समस्या व देश की यथार्थ स्थिति

का वर्णन करते हैं। रचनाकार ने इन्हे समय के अनुसार ही गढ़ा है। दोहा छन्द में लिखी ये रचनाएं उनके साहित्य की अवश्य ही श्री वृद्धि करती है। और इसके भाव इतने सजीव है कि यथार्थ का दृश्य साकार हो जाता है।

कछार की गोरी धूप में सरसों के फूल की तरह खिलनेवाले गौतम जी मूलतः राग, उल्लास और मौज मस्ती के गायक कहे जा सकते हैं। इसी लिए उनके दोहों में फागुन की छटा, होली के रंग उन्माद वासन्ती, प्रकृति का वैभव स्थान-स्थान पर बिखरा पडा हैं। जब आम के बौर गुलाबी शँख फूंकते हैं। तब उनके यहाँ मयूर के पंख बन्द किताबों से बाहर निकल आते हैं। सौत होती चूड़ियाँ, पहाड बनती पायलें, ओस नहायी चाँदनी फूलों डूबी घाटियां और अंजुरी मे खुलते हुएं जूडे के रंगीन माँसल और उल्लसित विम्बों वाले गौतम के दोहे, नये दोहों की दुनियां मे एक नये आधुनिक रीतिकाल का आयाम जोडते हैं। शृंगार एवं ऐसे विम्बों का उभार रीतिकाल के कवियों ने किया है। यही कुछ कुछ भाव लिए गौतम जी के दोहे हिन्दी साहित्य में अपना अलग स्थान रखते हैं ।

गोरी धूपकछार की, हम सरसों के फूल।
जब जब होंगे सामने तब तब होगी भूल।।(106)

उठने लगीं चिकोटियाँ, चढने लगा बुखार।
जिसको, जिसको छू गये, फागुन के दिन चार।।(107)

बिल्ली काटे रस्ता, तोता काटे आम।
मै विरहिन चढ़ती उमर, कैसे काटूं राम।।(108)

हाथ रंगे आँखे रँगी, रंगे गुलाबी गाल।
सारा पानी जल गया, फिर भी गली न दाल।।(109)

बिन आँगन का घर मिला, बसे पिया भी दूर।
आग लगे इस पूस में, खलता है सिन्दूर।।(110)

अँजुरी मे जूड़ा खुला, साँसं बसी सुवास।
संयम धोखा दे गया, टूट गया उपवास।।(111)

गौतम जी के ऐसे दोहों में हमें रीतिकाल का द्रश्य नज़र आता है। गौतम जी के दोहों का दूसरा पक्ष है। वर्तमान लोक जीवन का पैना और लीखा यथार्थ जहाँ भोर होते ही नंद किशोर बाल्टा भर दूध शहर में बेचकर गये रात दारु में धुत्त होकर घर लौटते हैं, जहाँ मास्टर जी ने

भीरे को, हड़पलिया और मुंशी ने ताल को हडप लिया। बच्चा और बंशीलाल जैसे लोग लाचारी मे टापते रह जाते हैं। जहाँ गोपी और रामदुलार जमकर तस्करी करते हैं क्योंकि उनके बाबू एम.पी. हैं तो भैया थानेदार। देश, समाज मे चलने वाली ऐसी ही विभूषिकाओं का वर्णन हमें गौतम जी की रचना में मिलता है। वे समाज को राजनीति का यथार्थ रुप दिखाते हैं। यह समाज लोग सभी धन के लालची हैं। सेवा, धर्म, पाप, पुण्य कोई नहीं देखता है। सब सत्ता में अंधे हो जाते हैं -

बूढी काकी की भला, अब किसको परवाह।
थैली आयी हाथ में, मैली हुई निगाह॥(112)

खेत बिका रुक्का लिखे, बाकी रहा दहेज।
तेल छिड़ बिट्टो मरी, देख न पायी सेज॥(113)

नहीं रहे वे आचरण, नहीं रहे प्रतिमान।
जिनके आगे प्रेम से झुकता था इंसान्॥

कितना उलटा हो गया, आज कार्य व्यापार।
थाने मे जन्माष्टमी, आश्रम में हथियार॥(114)

बंधे में पानी नहीं, नयी नहर का प्लान।
ठंडे घर में बैठकर, बना रहे श्रीमान्।(115)

सोच रहे सब पैंतरा चलें कौन सी चाल।
भाषा, पानी, ताजिया, या पूजा पंडाल॥(116)

इस प्रकार हम गौतम जी के कृतित्व में उनके व्यक्तित्व के अनुसार ही सीधी-साधी भाषा में बडी से बडी बात निकल आती है। जो उनके साहित्य में सहजता का निर्वाह करती है। गौतम जी के ये दोहे हिन्दी साहित्य की श्री वृद्धि में अपनी भूमिका अवश्य निभाते हैं।

डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय

का नाम आधुनिक दोहाकारों में बडे ही कुशल दोहाकारों में लिया जाता है। श्री पाण्डेय जी आधुनिक दोहा लेखन में श्रेष्ठ भूमिका निभा रहे हैं। उनका अभी हाल ही में प्रकाशित दोहा संग्रह 'बढने दो आकाश' आज के श्रेष्ठ दोहा संग्रहों में गिना जाता है। श्री वेद प्रकाश पाडेय जी का जन्म ग्राम खोरिया जिला गोरखपुर में 29 अक्टूबर सन 1944 में हुआ। श्री पाण्डेय जी बचपन से ही साहित्य के प्रति लगाव रखते रहे हैं। उन्होंने हिन्दी साहित्य में एम.ए. पीएच.डी. तक शिक्षा प्राप्त की और किसान डिग्री कालेज सेवरही पड़रौना में अपनी सेवा प्रदान की।

श्री पाण्डेय जी आज के उन सशक्त दोहाकारों में है। जो अनेक पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से जन जन तक परिचित हो चुके हैं। श्री पाण्डेय जी के दोहे इन पत्रिकाओं के साथ साथ कई दोहा संकलन में प्रकाशित हो चुके हैं। ऐसी ही देवेन्द्र शर्मा द्वारा सम्पादित सप्तपदी 5 उल्लेखनीय है। जिसमें श्री पाण्डेय जी के दोहों का संकलन हुआ है। साथ ही पाण्डेय जी का रुझान कविताके पठन-पाठन में रहने से, आकाशवाणी और दूरदर्शन से उनकी कविताएं एवं वार्ताएं निरन्तर प्रसारित होती ही रहती हैं। जिससे वे एक श्रेष्ठ कवि के रुप में सामने आते हैं। आधुनिक मानव जीवन में व्याप्त अनेक विडम्बनाओं को उन्होंने अपने स्वतंत्र दोहा संग्रह ''बढने दो आकाश'' में संग्रहीत किया है। श्री वेदप्रकाश पाण्डेय जी स्वयं कहते हैं कि जब वे कविता बनकर जी रहे थे तब संसार उनसे रुठा हुआ था और अब तो वे दोहे के द्वार पर आकर स्वयं ही दोहा बन गये हैं। उन्हें यह भी शिकायत है कि लोग आज के युग में व्यास बनकर भाषण देते हैं परन्तु समास बनकर सक्रिय नहीं हो पाते । आधुनिक जीवन की विषमता और विसंगतियों पर कटाक्ष करते हुए वे लिखते हैं कि अब कौवे हंसो को चलना सिखा रहे हैं। भौतिकवादी चमक दमक मे व्यक्ति रिश्तों की सहजता को गँवां बैठा है। उपज, रेल, पुल, रोशनी, शिक्षा सडकें तथा आकाश चुम्बी मकान बनाने में आज का व्यक्ति जितना अग्रसर है। घर के रिश्तों को निबाहने में उतना ही पिछडा हुआ है। पाण्डेय जी महाविद्यालय में प्राचार्य हैं। अतः नई पीढी के भटकाव को उन्होंने भरपूर देखा है वे इस पीढी के पतन में शिक्षा पद्धति को मूलतः दोषी मानते हैं। श्री पाण्डेय जी का मानना है कि ऊँचे-शिक्षा सदनो में प्राध्यापक वाद्य यंत्रो की भांति हो गये हैं। जिन्हे शिष्य समूह बजाता रहता है। उन्हे ऐसे शातिर राजनेताओं को देखकर क्लेश होता है। जो भोली-भाली जनता से भी हेय वचन बोलकर अपनी शरण वंदना करवाते हैं। सिर्फ मानव समाज या जीवन पर ही पाण्डेय जी अपनी दृष्टि नही डालते बल्कि प्रकृति के मनोरम रूपों ने भी पाण्डेय जी को आकर्षित किया है। फागुन, होली, वसन्त से सम्बद्ध भाव उनके दोहों में साकार हुए हैं।

श्री पाण्डेय जी आधुनिक भारतीय कवि हैं। अतः उनके हृदय में सभी प्रकार के रस, भाव निसरित होते हैं। दोहा जैसी विद्या को अपनाकर कवि अपनी अनुभूति को बड़ी कुशलता के साथ अभिव्यक्त कर देते हैं। और साथ-साथ ही सुन्दर सूक्तियों का प्रयोग भी वे अनायाश कर देते हैं। उनके दोहों में यह भाव सहज ही देखे जा सकते हैं। जिसमें उन्होंने कहा है कि शूरवीर ही अपनी छाती पर वार सहते हैं। तलवार कभी आलू या बैगन पर नहीं गिरती या फिर लोमडी जब ग्रन्थ लिखती हैं। तब सियार उसकी व्याख्या करते हैं। कुल मिलाकर देखा जाय तो पाण्डेय जी का सीधा साधा व्यक्तित्व ही हमारे सामने आता है। जिसका प्रतिबिम्ब उनकी रचनओं में देखा जा सकता है। पाण्डेय जी ने सीधी साधी भाषा में आज के कथ्य को अपने दोहों में बांधते है - श्री वेदप्रकाश

पाण्डेय जी व्यंग्यात्मक कविताएं लिखने में अधिक प्रवीण रहे हैं। अतः उन्होंने दोहा विद्या को अपनाया क्यों कि दोहा में वह गुण हैं जो प्रत्येक भाव का उसी रुप में वहन करता है। जो कवि की सोच में निहित होता है- श्री पाण्डेय जी के दोहों में इस व्यंग्य शैली के भी स्पष्ट दर्शन होते हैं। और अपनी बात बखूबी कह देते हैं -

पाण्डेय जी कहते हैं कि -

दोहा लिखना चाहता, बडे-बडे हैं नाम।
थोडे में, ज्यादा कहो, बहुत कठिन यहा काम।।(117)

सज्जन सूरज की तरह, करता है व्यवहार।
ले सागर से खींच, जल सींचे फ़सल हज़ार।।(118)

जीवन की सरिता सहज, सूख हो गयी रेत।
पूँजी पानी पी गयी, बंजर सारा खेत।।(119)

हंसो की मजलिस सुने, कौवो के उपदेश।
कुत्ते हाथी हाँकते, धरे महावत वेश।।(120)

लिये हवाला आ गया, बादल करता शोर।
यों चमकी नभ बीजुरी दिखे छिपे कुछ चोर।।(121)

नेता जी आये-गये, बहुत हमारे गाँव।
वहाँ-वहाँ काँटे उगे, रखे जहाँ भी पाँव।।(122)

देश हो गया भैंस है, दुहते काले चोर।
मालिक भकुसा-सा खड़ा, करता तनिक न शोर।।(123)

डॉ. देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र'

हिन्दी के वरिष्ठतम नव दोहाकार एवं गीतकार श्री देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र' जी का नाम सामयिक हिन्दी साहित्य में बडे ही आदर के साथ लिया जाता है। 'इन्द्र' जी ने हिन्दी की एक पुरानी विद्या को समसामयिक बोध से जोड़ा है और अनेक दोहाकारों की एक पूरी पीढी तैयार की अतः दोहा-साहित्य के विकास में उनका अप्रतिम योगदान सप्तपदी के सात भागों के रुप में हमारे सामने है। उन्होंने स्वयं लगभग ढाई हजार दोहों की रचना की है। सामयिक विषयों से जुडे दोहों की इतने बडे पैमाने पर रचना करनेवालों में वे सर्वोपर हैं। साथ ही उनके स्वयं के मौलिक दोहा संग्रह भी प्रकाश में आ चुके हैं।

असाधारण कृतित्व एवं व्यक्तित्व के धनी डॉ. देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र' जी का जन्म आगरा जिले के नगला अकबरा गाँव में सन 1934 ई. की पहली अप्रैल को हुआ, पठन, पाठन एवं काव्य कथन के प्रति बचपन से ही रुचि रही है। श्री 'इन्द्र' जी जीवन के प्रत्येक पल को इस्तेमाल कर जी रहे हैं। उन्हे फालतू समय, गँवाना अच्छा नहीं लगता। अतः साहित्य सृजन एवं साधना में लगातार अग्रसर रहने के कारण इन्द्र जी का कृतित्व विशालतम् पैमाने पर प्रस्तुत हुआ है, साहित्य की सभी विद्याओं का ज्ञान आपके द्वारा प्रस्तुत हुआ है जो हिन्दी साहित्य के लिए अमूल्य है।

हिन्दी और संस्कृत दोनो भाषाओं में मास्टर की डिग्री प्राप्त करने वाले श्री 'इन्द्र' ब्रजभाषा पर विशेष रुप से अपना अधिकार रखते हैं। परन्तु समय की मांग और जरुरत के कारण उन्होने खड़ी बोली हिन्दी को अपने भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया है।

आपकी प्रकाशित कृतियों में बिहारी सतसई 1957 में प्रकाशित हुई, जयशंकर प्रसाद तथा आँसू, महाकवि हरिऔध और उनका प्रिय प्रवास, लक्ष्मी नारायम मिश्र और उनका जगद्‌गुरु नाटक, रश्मिबंध तथा सुमित्रा नंद महाकवि निराला और 'राम की शक्ति पूजा', आदि 'इन्द्र' जी की समीक्षापरक एवं भाष्य परक कृतियाँ हैं -

तथा 'इन्द्र' जी की मौलिक रचनाओं में

- कालजयी (खण्ड काव्य)
- आँखों खिले पलाश (दोहा संग्रह)
- तनहा खड़ा बबूल (दोहा संग्रह)
- अफ़वाहो के पंख (दोहा संग्रह)
- दिन सेंदुर सा धुल गया (दोहा संग्रह)

आदि 'इन्द्र' जी की अति उल्लेखनीय प्रकाशित कृतिआँ हैं। साथ ही सम्पादन के क्षेत्र में भी श्री देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र' का नाम विशेष महत्व रखता है, सामयिक विषयों से गठित दोहों का विकास 'इन्द्र' जी की संपादकीयता का परिणाम है।

सप्तपदी के एक से लेकर सात खण्डों का संपादन 'इन्द्र' जी ने ही किया है। प्रत्येक खण्ड में सात दोहोकारों के सौ-सौ दोहों का संग्रह हुआ है, साथ ही ताज की छाया में नामक कविता संग्रह और यात्रा में साथ-साथ नवगीत संग्रह का सम्पादन हिन्दी साहित्य में आपको विशेष सम्मान दिलाता है। इसके अतिरिक्त उनके मौलिक नवगीत संग्रहों में - पथरीले शोर में, पंख कटी मेहरावें, कुहरे की प्रत्यंचा, चुप्पियों की पैजनी, दिन पाटलि पुत्र हुए, आँखों में रेत-प्यास, पहनी हैं चूडियाँ

नदी ने, अनान्तिमा, घाटी में उतरेगा कौन, हम शहर में लापता हैं, गंधमादन के अहेरी आदि नवगीत संग्रह श्री 'इन्द्र' जी के कृतित्व में चार चांद जड़ देते हैं।

इनके अतिरिक्त अनेक अनुसंधान ग्रंथों में श्री 'इन्द्र' जी को विशेष स्थान दिया गया है। साथ ही अनेक हिन्दी सेवी संस्थाओं द्वारा समय समय पर आपको अनेक सम्मान व पारितोषिक प्राप्त हुए हैं।

जब किसी रचनाकार का विशाल व्यक्तित्व और कृतित्व होगां तो यह निश्चित है कि वह देश की अनेकों पत्र-पत्रिकाओं से जुडा होगा। इसी संदर्भ में श्री 'इन्द्र' जी देश की अनेकानेक लगभग सौ से अधिक पत्र-पत्रिकाओं में स्थान रखते हैं, कृतित्व की विराट सम्पदा उन्हे एक असाधारण व्यक्तित्व प्रदान करती है। विशेषकर श्री देवेन्द्र शर्मा ने जो दोहा छंद को सम्मानित कर उसे पुनः विकास की परम्परा में अग्रसर किया है। उसके लिए उनका हिन्दी साहित्य में अद्वितीय स्थान रहेगा। जब भी नये दोहे का जिक्र आयेगा श्री शर्माजी के योगदान को निश्चय ही याद किया जायेगा, उनके दोहों में मानव जीवन की उन सभी संगतियों, विसंगतियों का वर्णन मिलता है। जिसके कारण मानव को अनेक उतार-चढाव वाले पलों का सामना करना पडता है।

'इन्द्र' जी जीवन भर साहित्य के अध्येता और प्रवक्ता रहे हैं। उन्हे स्नाकोत्तर व विश्वविद्यालय स्तर की कक्षाओं को पढाने का गहन अनुभव है। उन्हे एक प्राध्यापक व कवि के रूप में ही ख्याति प्राप्त नहीं है, अपितु अपनी पैनी समीक्षक-दृष्टि के कारण उन्हे एक सफल आलोचक के रुप में भी साहित्य-जगत में मान्यता मिली है। वे एक जागरुक रचनाकार हैं, पारिवारिक जटिलताओं और अपने खराब स्वास्थ के बावजूद कविता को पूरी ईमानदारी और सभ्यता से जीने वाले कवि हैं, नवगीत के प्रति 'इन्द्र' जी का समर्पण व उनके काम के आधार पर इन्द्र जी की नवगीत के क्षेत्र में अपनी एक विशिष्ट पहचान है।

चार दशकों से अधिक अपनी काव्य यात्रा के दौरान इन्द्र जी ने अनेक पड़ाव देखे और सफलता की कई मंजिलें तय की हैं। इक्कीसवीं सदी के आते-आते एक सफल व सशक्त नवगीतकार, दोहाकार के रुप में इन्द्र जी का नाम हिन्दी साहित्य में प्रसिद्ध हो गया, अपनी रचनाओं के माध्यम से, व अन्य संपादित कृतियों (नवगीत संग्रह, सप्तपदी 1 से 7) के साथ जुडकर दोहा साहित्य को एक नया आयाम प्रदान किया।

यदि हम संक्षेप में इन्द्र जी की समस्त कृतियों पर कुछ कहें तो, काव्य युग की त्रासदी, साहित्य जगत में पनपते छल-छद्म प्रकृति का अनुपम सौंदर्य, जीवन की विद्रूपता मानवीय सम्बंधो को जीने की ललक, व्यक्तिगत जीवन की विवशता, विकलता और विडम्बना के चित्र तथा इस

जीवन जगत के जुडते-जुडते संदर्भो की स्मृति आदि के अनेक नवीन व ताजे विषयों की सरल अभिव्यक्ति इन्द्र जी की लेखनी से सम्भव बन पडी है।

इन्द्रजी का दोहा साहित्य उनके जीवन के विशाल अनुभवों का दर्पण हैं, जीवन के विशाल अनुभवों का दर्पण है । जीवन के तिक्त तथ्यसत्यों और विद्रूपताओं के नंगे पन को आधुनिक संवेदना से जोडकर उसे यथार्थ के धरातल पर उद्घाटित किया है। साथ ही युग चेतना की प्रखर अभिव्यक्ति और प्रकृति के सांस्कृतिक स्वरुप का चित्रण कवि को विशिष्टता प्रदान करता है। विषयगत व्यापकता से परिपूर्ण इन्द्र जी के दोहे सामयिक युग संदर्भ से जुडे हैं। जिनमें मानव जीवन से सम्बंधित प्रत्येक पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। इन्द्रजी स्वयं के बारे में ही प्रस्तुत दोहे में कहते हैं कि मै एक साहित्यकार हूँ, कवि हूँ अतः मुझे वारिसे शब्दों की ही दौलत मिली है। जिसका में प्रयोग कर रहा हूँ, इसी कारण मेरे ख्वाबों कोई और नहीं कबीर खुसरों जैसे कवि आते हैं -

विरसे में मुझको मिली, लफ़्ज़ों की जागीर।
आते मेरे ख्वाब में, खुसरो, मीर, कबीर।।(124)

सामयिक राजनीतिक व सामाजिक वातावरण को केन्द्र में रखकर इन्द्र जी कहते हैं कि आज प्रजा गूंगे पक्षियों के समान और नेता शिकारी हो गये हैं। जहाँ सिर पर तलवारें लटक रही हों ऐसे समाज में फरियाद क्या की जा सकती है -

शमशीरों की छाँव में, कौन करे फरियाद।
पंछी सी मूँगी प्रजा, शाह हुए सय्याद।।(125)

साथ ही वे आज की निराशावादी विडम्बना को प्रस्तुत करते हैं, जिन पर विश्वास है वे आज झूठे खोखले हो गये हैं। इन्द्र जी निम्न दोहे में बडी ही मार्मिकता से एक कटु सत्य के दर्शन कराते हैं -

मेघ रुई के देखरक बादल हुआ उदास।
हर अंकुर की आँख में, एक कथ्थई प्यास।(126)

मानव जीवन में आनेवाले विभिन्न उतार चडाव, उत्पीड़न, समस्याएँ तथा उनके आसपास के जनजीवन व जीवन से जुड़े अनेक परिबलों पर इन्द्र जी की कलम चलीं है। अतः हिन्दी साहित्य की इन्द्र जी ने बड़ी ही श्री वृद्धि की है। उनके इस योगदान के कारण उन्हे हिन्दी साहित्य में विशिष्ट स्थान प्राप्त है।

डॉ. शैल रस्तोगी

हिन्दी साहित्य को समर्पित डॉ. शैल रस्तोगी एक वरिष्ठ प्राध्यापिका, प्रतिष्ठित शोध निर्देशिका के अतिरिक्त बहुमुखी कवियत्री प्रतिभा सम्पनन रचनाकार हैं। वे जितनी सरस एवं प्राण स्पर्शिणी गीत-रचना करती हैं उतनी ही सिद्धहस्त 'हाइकु' लेखिका भी हैं, नारी-सुलभ संकोच पारिवारिक दायित्वों के निर्वाह और अन्तर्मुखी प्रकृति के कारण वे सदैव आत्म-विज्ञापन से दूर रहीं हैं, स्वभाव की शालीन डॉ. शैल का व्यक्तित्व बड़ा ही कोमल एवं सरल है।

डॉ. शैल जी का जन्म 1927 में उ.प्र. के मेरठ जिले में हुआ। शिक्षा के रुप में एम.ए., पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। डॉ. शैल जिस समय में इतनी बडी शिक्षा प्राप्त कर रहीं थी वह समय नारी जाति को अशिक्षित रखने में समझदारी रखनेवालों का था। ऐसे में अपनी प्रतिभा के बल पर डॉ. शैल ने समय को पीछे छोडकर आगे निकली और नारी जति को सम्मान दिलाया। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी जो स्वयं हिन्दी साहित्य के स्तम्भ रचनाकार हैं। उनके निर्देशन में डॉ. शैल ने पीएच.डी. का अनुसंधान किया। और स्वयं डॉ. शैल ने मेरट में ही 34 वर्षों तक रघुनाथ गर्ल्स कॉलेज के हिन्दी विभाग में अध्यापन का कार्य किया। आपके निर्देशन में अनेक विद्यार्थी पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं।

डॉ. शैल स्वयं एक अच्छी लेखिका हैं, उन्होंने एकांकियों की रचना के साथ-साथ समय-समय पर कहानियाँ और उपन्यास भी लिखे हैं। कहने का तात्पर्य है कि जिस विद्या को भी अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया, उसे नये-से नये आयाम देकर पूर्णता तक पहुँचाया। आपने कई विद्याओं में रचनाएं की हैं। डॉ. शैल रस्तोगी की प्रकाशित पुस्तकों में - पराग (काव्य संकलन), जंग लगे दर्पण, प्रतिबिम्बत तुम, सन्नाटा खींचे दिन, मन हुए है काँच के, धूप लिखे आखर आदि संकलनो की रचनाएं की हैं। इसके अलावा एक जिन्दगी बनजारा, बिना रंगो के इन्द्र धनुष, सावधान, सासू जी आदि ऐकांकी संकलन का सृजन किया है।

आपके आलोचनात्मक साहित्य में हिन्दी उपन्यास में नारी, भूषण एवं उनका काव्य, प्रेमचंद और उनका गोदान, हिन्दी एकांकी एवं एकांकी कार, आदि अनेक आलोचना परक रचनाएं डॉ. शैल जी द्वारा सृजित हुई है।

इसके अतिरिक्त अनेक कहानी एवं काव्य संकलनों में अनेक रचनाओं का समावेश हुआ है, साथ ही देश की अनेक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रमुखतः से उल्लेख मिलता है आपका सामयिक विषयों से जुडा दोहा संग्रह 'कोने खुली किताब' हिन्दी साहित्य को एक और अमूल्य योगदान है।

डॉ. शैल रस्तोगी जी के दोहों में स्वानुभूति एवं जग की वास्तविकता के सीधे दर्शन होते हैं। जीवन की व्याख्या करना ही उनके दोहों की प्रथम-प्रति श्रृंति रही है। आज सारे रिश्ते-नाते स्वार्थ की कील पर घूम रहे हैं। किसी के हृदय में आत्मीयता नहीं रही। डॉ. शैल समाज में व्याप्त ऐसे भावों को दोहा छन्द में व्यक्त करते हुए कहते हैं कि -

लाख पते की बात है, ओ मेरे मन मान।
अपना कोई भी नहीं सबको अपना जान।।(127)

आज चारो तरफ भेद-भाव, मारामारी घृणा, गला काट स्पर्धाएं और प्रतिद्वंदिता की उद्वेजक स्थितियाँ सुरसा की भांति अपना मुख फैला रही हैं। धर्मान्धता चारों और फैली है। ऐसे में दोहाकार कहता है कि-

मन्दिर मस्जिद टूटते, मन में बसी सड़ाँध।
न्याय बिचारा क्या करे, लोग हुए धर्मांध।।(128)

छुप-छुप कर हमला करें, डरे-डरे हैं लोग।
बन्दर या रोबोट हैं, नहीं जानते लोग।।

उपर्युक्त दोहों में जिस सत्य को डॉ. शैल ने प्रस्तुत किया है वह आज की अखबारी घटनाओं से वाबस्ता है। शैल जी के अधिकांश दोहे इसी समकालीन मानवीय विडम्बना को मुख्यतः समय की शिला पर उत्कीर्ण करते - से प्रतीत होते हैं क्योंकि -

ये दोहे हैं आज के, जीवन जुड़े यथार्थ।
मत जोडो श्रृंगार से ये नवयुग के सार्थ।।(130)

डॉ. शैल जी एक सीधी साधी विचार धारा को मानने वाली हैं। उन्हें किसी खास विचार धारा का बिल्ला लगाना स्वीकार नहीं। उन्होंने अपने कर्तव्य पालन को ही जीवन का उद्देश्य माना है। साथ ही उनकी सहानुभूति समाज के उस वर्ग के प्रति रही है जो अन्न, वस्त्र और गृह विहीन हैं । प्रस्तुत दोहा संग्रह 'कोने खुली किताब' में ऐसे बीसियों दोहे मिल जायेंगे जिनमें बेगार करतीं सुरसुतिया, सूखी रोटी खाता हुआ भूखा माँगे राभ, बासन माँजती किसनीं, झाडू लगाता हुआ राम और परदेश में खटता हुआ राम दरस अपनी पूरी बेचारगी और विवशता के साथ जिन्दगी की विषम स्थितियों से जुझते नजर आते हैं -

सूखी रोटी खा रहा, भूखा माँगे राम।
चलने को तो पाँव हैं, हाथों को ना काम।।(131)

बैरी मौसम हो गया, किशना है बेचैन।
सूखा पड़ जाता कभी, कभी बाढ़ दिन-रैन।।

बिशना मन में सोचता बस बिटिया की बात।
अबके बरस ज़रुर ही, आयेगी बारात।।

डॉ. शैल ने संयुक्त परिवारों को बड़ी ही निकटता से विघटित होते हुए देखा और विघटन के तनाव को अपने दोहों में रुपायित भी किया है।

पहले पूरा एक घर, अब टुकड़ों में बाँट।
भाई-भाई की करे देखो कैसी काट।।(133)

दो खटिये, दो बिस्तरे दो टूटे सन्दूक।
सारी पूँजी देखकर, बूढ़े मन दो टूक।(134)

डॉ. शैल जी ने अपने जीवन में अनेक दायित्वमयी भूमिकाओं को निभाया है, उनके विचारों मे नारी के व्यक्तित्व का विकास स्वच्छन्द जीवन शैली की अपेक्षा मर्यादा-पालन में ही सम्भव है-

कठ पुतली कहने लगी, मेरे हाथ न पाँव।
डोर आपके पास है, नगर रखो या गाँव।।(135)

दाना, चुग्गा, घोंसला, बच्चे सब तकदीर।
हर चिडिया लगती मुझे, औरत की तस्वीर।।(136)

'कोने खुली किताब' दोहा संग्रह में लेखिका ने ऐसे अनेक चित्रों को प्रस्तुत किया है जो शृंगार एवं वर्णन की एक नयी रुप रेखा तैयार करते हैं। इन दोहों में विम्बित भाव चित्र स्वतः ही ध्यान को आकृष्ट करता है । ये दोहे दोहाकार को एक विशिष्ट सर्जनात्मक बिन्दु पर ले जाकर प्रतिष्ठित करते हैं -

दूर पहाड़ी झील में दिखता एक तिलिस्म।
कटा-कटा सा चन्द्रमा, कुछ तारों के जिस्म।।(137)

वह बबूल पहने खड़ा, काँटो वाले वस्त्र।
पास न आती चाँदनी, दूर खड़े नक्षत्र।।

'कोने खुली किताब' में संग्रहित 721 दोहे डॉ. शैल के व्यक्तित्व की झलक पेश करते

हैं। उदार मन एवं सीधा सरल स्वभाव आपके व्यक्तित्व की पहचान है। डॉ. शैल रस्तोगी का यह दोहा संग्रह निश्चय ही हिन्दी साहित्य में विशेष स्थान रखता है।

श्री सुरेशकुमार शुक्ल

हिन्दी काव्य-जगत को समर्पित श्री सुरेश कुमार शुक्ल ''सन्देश'' ऐसा व्यक्तित्व हैं, जिसने अपनी साहित्य-साधना का शुभारम्भ ''दोहा'' विद्या से किया है। नदी-काव्य के सारस्वत कवि डॉ. अनन्त राम मिश्र 'अनन्त' के एक मात्र कवि-शिष्य श्री सुरेश कुमार शुक्ल एक प्रतिभा सम्पन्न, सहज, अध्ययन शील परिश्रमी एवं आस्तिक साहित्यकार हैं, जिन्होंने साहित्य के साथ-साथ अध्यात्म पर भी एक साथ आरुढ होना सीखा है। एक देवालय पर उपासक के पद पर कार्य करते हुए भी कवि ने अपनी साहित्य-ऊर्जा को सविशेष जीवन्त रखा है और दोहा धनाक्षरी, सवैया, मुक्तक, गीत गज़ल आदि विधाओं के द्वारा काव्य-संसार को पल्लवित-पुष्पित करते रहे हैं।

श्री सुरेश कुमार का जन्म गोला गोकर्णनाथ जिला-खीरी (उ.प्र.) मे 5 फरवरी सन 1972 में हुआ उनके पिता का नाम श्री राम शुक्ल है। सुरेश कुमार बचपन से ही भगवान के प्रति श्रद्धावान रहे हैं। उन्होंने अपनी सतभाषा हिन्दी पर विशेष अभिरुचि दिखाई और हिन्दी साहित्य में मास्टर डिग्री प्राप्त की । श्री सुरेश कुमार पठन पाठन के साथ-साथ लेखन का कार्य भी करते रहे। अतः कम उम्र में ही उन्होंने साहित्य जगत में अपना नाम प्रसिद्ध करवा लिया। इसका श्रेय उनके गुरु डॉ. अनन्तराम मिश्र को जाता है। जिनके मार्गदर्शन में श्री सुरेश कुमार हमेशा प्रगति की नई ऊंचाई छूते रहे।

देवालय मे उपासक होने से उनका ध्यान अध्यात्म की ओर अधिक रहा। अतः उन्होंने अध्यात्मिक जगत में कई रचनओं का सृजन किया जिसमें श्री तपेश्वरी-दुंर्गा चालीसा और श्रीराम जीवनम् उल्लेखनीय है। उनकी प्रकाशित कृतियों में यही (1) श्री तवेश्वरी चालीसा (2) सिद्ध तपेश्वर नाथ (3) श्रीराम जीवनम् (खण्ड काव्य) रचनाएं उनके जीवन में अध्यात्म की महानता बताती हैं।

श्री सुरेश कुमार 'सन्देश' की अप्रकाशित कृतियाँ तो अनेकों है। जिसमें साहित्य सृजन की अनेक विद्याओं का वर्णन हुआ है उन्होंने जय विवेकानन्द (महाकाव्य), भारत गौरव (स्फुट काव्य), उत्सर्ग (खण्ड काव्य), मील के पत्थर (सवैया संकलन), नागफनी के फूल (दोहा संग्रह), चाँदनी के घर (गज़ल संग्रह), पीडा के शहर (गज़ल संग्रह), प्रकृति-सुन्दरी (निबन्ध संग्रह) आदि अनेक कृतियों का सृजन किया है, उनके दोहा संग्रह ''नागफनी के फूल'' में उन्होंने पीडाओं के

वंश शीर्षक के अंतर्गत आज के परिवेश-समग्र की कुव्यवस्थाओं के प्रति जन-साधारण का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया है-

फैल रहा है आज माँ! कण-कण में विद्वेष।
पर में देना चाहता, सौ मनस्य सन्देश॥

आज सम्पूर्ण जगत में व्याप्त विद्वेष-भाव को अपने सौमनस्य सन्देश से समाप्त करने की अभिलाषा से कवि अपने हर गीत में माँ वाणी का मधुर-प्यार याचित करता है और फिर अगले पल कवि की नज़र शान्ति-कपोतों की ओर लग जाती है, जिसका देश से पलायन हो चुका है। फिर अन्वेषणा के क्रम में गंधहीन पलाश वन, नागफनी की वाटिकाओं के साथ जाने कहाँ-कहाँ कवि मन जाता है, मगर पाश्चात्यता की आंधियों और द्वेष भाव की निशा से भयभीत हो निराश वापस लौटता है। कवि कहता है -

रीति-नीति बदली सखे ! बदल गया व्यवहार।
आँसू-आँसू हो गया, टूट-टूटकर प्यार॥(139)

पुरातन सुस्थापित मंडन मिश्र के तोते जहाँ वेद-मंत्रों का वाचन करते थे वहीं आज 'राम' रटने का अधिकार तोतों की जगह सामिष कौओं ने ले रखा है। तोते 'रावण' के नाम का जाप कर रहे हैं। मानसर में राजहंसों का स्थान बगुलों ने ले रखा है, जिससे प्रजा पर प्राण-संकट आया है, निश्चित ही रुप में कवि का मन आज की शासन व्यवस्था से चिंतित है जो इस दोहे में परिलक्षित होता है-

बस इतना ही बन सका इस युग का इतिहास।
शोषण, दोहन, त्रासदी, दंश-घुटन-संत्रास॥(140)

श्री सुरेश कुमार के दोहों में जहाँ एक ओर भारतीय संस्कृति और सभ्यता के क्षीण होते जीवन-मूल्यों की कसक है। स्वार्थ और लोभ के प्रति घृणा है, मित्रों के दोहरे-व्यक्तित्व पर व्यंग्य है। पाश्चात्यता के बढते प्रभाव के प्रति चिन्ता और असहाय मानवता के प्रति सत्य अहिंसा और न्याय की अन्वेषणा का उपक्रम है। वहीं दूसरी ओर निष्ठा की सिसकारी, वैमनस्यता का ताण्डव-नृत्य, गृधों का उल्लास नेताओं की अवसरवादिता, उजडे हुए गाँव, दहेज की त्रासदी, विनाशोन्मुख विज्ञान, पर्यावरण का विक्षत स्वरुप आदि आदि आयामों का आवर्तन भी आगत हुआ है -

भय चिन्ताओं से ग्रासित, जीवन का हर छोर।
मँहगाई की बिजलियाँ, चमक रहीं सब ओर॥(141)

पाश्चात्यता के शोर गुल एवं मानव के बदलते रंग ढंग में आज का युग कवि की नजरों में -

बस इतना ही रह गया, इंस युग का वर्ताव।
तोड-फोड, ईर्ष्या-जलन, कपट-द्वेष दुर्भाव।।(142)

युग-भक्षक बने 'युग-सर्जक' विज्ञान को कवि की कलम अन्तिम चेतावनी देते हुए कह उठती है -

युग-सर्जन, विज्ञान तू ! और जहर मत घोल।
नवोत्कर्ष कर बचा ले, पर्यावरण अमोल।।(143)

श्री सुरेशकुमार ''सन्देश'' जी श्रमिकों की समस्या से अत्यंत चिन्तित है और आश्चर्य तो तब होता है जब मजदूर बदहाल और पूँजीपति खुशहाल दिखायी देते हैं। मजदूरों की समस्याओं को सुलझाने के लिए प्रयत्नरत श्रमिक-नेताओं को पैसे के बल पर शान्त कर दिया जाता है-

श्रमिक-रहनुमा थे बने, लोग यहाँ जो चन्द।
लक्ष्मी माता ने किये, उनके भी मुँह बन्द।।(144)

पत्थर के बाजार में जहाँ आँसुओं के सौदागर को निराशा मिलती है वही कोयल को दुतकारने के साथ कौओं को दूध-भात खिलाते हुए लोग भी नजर आते हैं, और फिर मरुभूमि में अपनी अनबुक्षी प्यास को लिए पानी की चाह में नायिका भी परिलक्षित हुई है।

इतना सबकुछ होते हुए भी युग की त्रासदी से त्रस्त कवि की वीणा तार-तार होते हुए रो उठती है -

व्यथा कथा इस दौर की लिख न सका है राम।

युग का व्यतिक्रम फिर भी शान्त नही हुआ मँहगाई ने दीपावली के आनन्द को किरकिरा किया और फागुन को भी बेगुन सा कर दिया मगर कवि के आशावादी-मन ने होली के सा बाबा को देवर वन जाने की बात को युग-पट में बन्द नहीं होने दिया, जो कवि के उत्साह और साहस का परिचायक है -

होली के हुडदंग में, लाज गयी परदेश।
बाबा भी देवर हुए, और रहा क्या शेष।।(145)

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि रचनाकार 'सन्देश' जी हिन्दी साहित्य की अपनी लेखनी से नये नये आयामों व युग सत्य को प्रकट करते हुए श्री वृद्धि कर रहे हैं। वे देश व समाज के

प्रति अपनी एक निष्ठ श्रद्धा रखते हैं। उनके व्यक्तित्व मे मानव समाज के प्रति उपार, लगन है वे सभी धर्म को एक नज़रिये से देखते हैं। ऊँचनीच भेदभाव सभी निम्न कोटि की सोच है। श्री संदेश मानव समाज को सचेत करते हुए नये युग का सही निर्माण करने की सीख देते हैं। और अपनी सोच साहित्य सृजन के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाते हैं। श्री संदेश जी मानव को पाषाण नही बल्कि मनुज बनने का संदेश देते हैं -

कभी किसी के दर्द पर, द्रवते रंच न प्राण।
अब अन्तर रखते नहीं, मनुज और पाषाण।।(146)

कहो मीत! ये कौन-सी, विधा है अनमोल।
छुरी दबाये बगल में, मुँह में मीठे बोल।।(147)

सजे-सजे से लग रहे, बगुले हंस-समान।
आज सरोवर में हुए, दुखी मीन के प्राण।।(148)

आज के साहित्यकार अपनी अपनी शैली में जीवन की विकृतियाँ असांस्कृतिक प्रवृत्तियों राजनीतिक, सामाजिक, साहित्यिक असंगतियों का चित्रण कर रहे हैं। युवा पीढी एक ओर यौवन की तरल व्यक्तिगत भावनाओं का हृदय-संवेद चित्रण करती है तो दूसरी ओर वह जिस संघर्षमय स्थिति से गुजर रही है उसकी अनदेखी नहीं करती। अपितु उसका चित्रण भी उसी कुशलता से कर रही है। युवा पीढी के ऐसे प्रतिभाशाली रचनाकारों में अशोक अंजुम का नाम बड़ी तेजी से उछल कर सामने आया है।

अशोक 'अंजुम'

डॉ. राधेय राघव ने एकबार कहा था कि मौलिकता चमत्कार में नही, गहराई में होती है। गहराई के लिए चिन्तन की साधना है। अशोक अंजुम की रचनाएं मैने पढ़ी हैं। पत्र पत्रिकाओं में वे अपने खेमे में सर्वाधिक प्रकाशित होनेवाले कवि हैं। अंजुम जी का जन्म ग्राम दवथला, अलीगढ़ में सन 1966 में हुआ। उनके पिता श्री जगदीश प्रसाद शर्मा हैं। श्री अंजुम का साहित्य के प्रति रुझान बचपन सी ही रहा है। उन्होंने अपने अध्ययन में साहित्य और विज्ञान दोनों विषयों को अपनाया है। उन्होंने बी.एस.सी. तथा एम.ए. की पदवी प्राप्त की एजुकेशन में भी शिक्षा प्राप्त कर बी.एड. हुए। श्री अंजुम जी अपनी लेखनी के बल पर आज साहित्य जगत में चर्चित हस्ताक्षरों में अपना नाम बना लिया है। उनकी प्रकाशित कृतियों में भानुमति का पिटारा, खुल्लम खुल्ला, दुग्गी, चौके, छक्के (सभी हास्य, व्यंग्य काव्य संग्रह), मेरी प्रिय गज़ले, मुस्काने हैं ऊपर उपर एक सफल श्रेष्ठ गज़ल संग्रह है।

सम्पादन के क्षेत्र में भी अंजुम पीछे नहीं हैं। उन्होंने हिन्दी सहित्य की अनेक विद्याओं का संपादन किया है। उनके द्वारा सम्पादित पुस्तको की संख्या लगभग डेढ दर्जन से अधिक है। जिसमें **प्रयास** पत्रिका व दोहों को लेकर प्रकाशित **दोह दशक** (संकलन) जैसी कृतियां उल्लेखनीय हैं। जिसके द्वारा कवि अंजुम का कृतित्व सफलता की नई ऊँचाइयों को छु रहा है।

श्री अशोक अंजुम की रचनाएं सौ से अधिक समवेत संकलनो में तथा देश की प्रतिष्ठित सैकड़ों पत्र पत्रिकाओं मे प्रकाशित होती आयीं हैं। उनका नाम अनेक शोध-ग्रंथों में प्रमुखता के साथ उल्लेखित हुआ है उन्होंने साहित्य जगत के अनेक पुरस्कार प्राप्त किए हैं। साथ ही उनका व्यक्ति एक सफल हास्य-व्यंग्य कवि, गजलकार एवं दोहाकार के रुप में हमारे सामने आता है। उनकी गज़लों के शेर ऐसे हैं जो जीवन के अंधकार में सांसों के साथ सोते हैं, संग्रह के अनेक शेर चिहित हैं जो भी शेर उनका पढ़ा जाता है तो इससे आगे वाला शेर कहता है कि मै इससे कम नही बल्कि सवा शेर हूँ। युवा मन की धड़कन से लेकर, समाज की विकृत मानसिकता की अभिव्यक्ति तक ये गजलें हैं। गजले तो निराला के युग में भी लिखी गई और बच्चन के समय मेंभी पर उनमें रंगजी की गज़लों का अपना विशिष्ट स्थान है वे हिन्दी कवि नहीं बल्कि गज़ल की अदाकारी में पूरा वावस्ता उर्दू शायर नज़र आता है। यहाँ पर भी वे आम बोलचाल में आनेवाली उर्दू गज़ल की खूब सूरती लिये हुए हैं। अत्यन्त सरल शब्दो में हृदय की अनुभूति को व्याकुल कर देने वाली और उनमें जानी पहचानी आत्मीयता भर देने वाली गज़ले अंजुम जी ने कहीं है। इस प्रकार भाव भाषा और शिल्प की दृष्टि से अशोक अंजुम एक सफल एवं विशिष्ट रचनाकार हैं।

जो रचनाकार प्रत्येक विद्या में अपनी प्रतिभा का चमत्कार दिखाता है। वह सचमुच प्रतिभावान होता है। अशोक ने दोहों की रचना में भी अपनी प्रखर प्रतिभा का परिचय दिया है। इन दोहों में उन्होंने एक सुनियोजित युवजनोचित मिलन विरह की अनुभूतियों और पिपासा को बडी सादगी से व्यक्त किया है। उसी प्रकार समाज में जो अनैतिक आचरण दिखाई देता है उसका भी अशोक जी ने बडी ही कुशलता के साथ चित्रण किया है। हिन्दी साहित्य में सभी कवियों ने ऋतुओं का किसी न किसी रुप में वर्णन किया है। श्री अशोक अंजुम ने आज के जीवन को केन्द्र में रखकर ऋतुओं का जो वर्णन किया है। वह मेरी दृष्टि में कवि की एक नवीन उपलब्धी है।

आज बिजली संकट एक आम बात हो गयी है। गर्मी का चित्रण करते हुए अशोक जी कहते हैं -

बढ़ी तपिस यूँ हो रहे, जीव सभी बेचैन।
ऐसे में हड़ताल पर, घर का टेबुल फैन।।[149]

कवि अंजुम द्वारा चित्रित श्लेष का अत्यन्त सुन्दर उदाहरण जिसमें समाज नारी के प्रति क्या भाव रखता है। साथ ही दूसरी ओर संकुचित घर की विवशता -

घुटी-घुटी सी कोठरी, नहीं हवा का नाम।
नयी बहू का जेठने जीना किया हराम।।(150)

इसी प्रकार अंजुम जी के अनेक दोहे हैं जिसमें आज का जीवन बोलता है, आँसू बहता है और समय की कठोरता को कोसता है। आज अंजुम जी ने देश के अनेक दोहाकारों को लेकर कुछ संकलन भी प्रकाशित किये हैं जो साहित्य की इस विद्या के लिए मील का पत्थर सिद्ध होंगे।

श्री अशोक अंजुम का व्यक्तित्व श्रेष्ठ प्रतिभा का धनी हैं। गंभीर लेखन के साथ हास्य व्यंग्य की भी उनकी अपनी अलग ही शैली है। आज के युग में हास्य की जो दशा है वह अधिक उद्धरणीय नहीं है। मंचो पर हास्य ही रह गया है। उसमें हास्य की प्रतिभा के दर्शन तो नाम मात्र को ही होते हैं। आज साहित्य के इतिहास में इस हास्य का कोई स्थान नहीं है। मुझे तो ऐसा लगता है कि इस हास्य का उद्देश्य साहित्येत्तर है। इस सबके बीच भी अंजुम जी ने हास्य व्यंग्य के मर्मको समझकर उसकी सृष्टि की है। अंजुम जी का यह व्यक्तित्व उनकी कृतियों में देखा जा सकता है-

खुशियाँ जल की बूंद हैं, जीवन रेगिस्तान।
प्यास कभी बुझती नहीं सच मानो श्रीमान।।(151)

हुए आधुनिक इस तरह, बढ़ा दोस्त अनुराग।
बरगद काट उगा लिए नागफनी के बाग।।(152)

घर के भीतर आग है, घर के बाहर आग।
है अंजुम चारो तरफ, यही आग का राग।।(153)

बच्चे माँगे बालपन, पुस्तक, कॉपी, स्लेट।
पर मिल वाले सेठ का, बहुत बड़ा है पेट।।(154)

दर्शन करना बाद में पहले दे दो दाम।
हुई बिकाऊ आस्था, हुए बिकाऊ राम।।(155)

इस प्रकार अशोक जी ने दोहों के माध्यम से आधुनिक जीवन शैली व सामाजिक, राजनैतिक, स्थिति का वर्णन किया है। कहने को तो अशोक जी सीधी साधी जनभाषा के माध्यम से ही कथ्य को प्रस्तुत करते हैं। परन्तु उनमें जो भाव है वह निश्चित ही किसी मार्मिक विषय की ओर ले जाता है। क्योंकि उन्हे पता है कि यदि भावों का वहन दोहा छन्द में करना है तो गागर मे सागर

भरने की स्थिति का भी ध्यान रखना पडता है।

इस सब के साथ अशोक अंजुम साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान कर रहे हैं। प्रयास जैसी पत्रिका प्रकाशित करने का प्रयास कर रहे हैं। इस पत्रिका के अन्तर्गत गीत, गज़ल दोहा आदि सभी विद्याओं को स्थान मिलता है। इसमें दी गयी रचनाओं का स्तर भी ऊँचा है। आज के साहित्यिक वातावरण में पत्रिका क ाप्रकाशन दुस्साहसिक काम है, अभी यह सब करना अशोक जी के साहित्य के प्रति समर्पित भाव का ही परिणाम है वे अपने आपको निरन्तर रुप से इस साधना के पथ पर अग्रसर कर रहे हैं। यह यात्रा तो बहुत ही लम्बी है साथ ही बाधाओं से घिरी है। परन्तु उनमे विनम्रता और साधुता जैसे गुण होने से यह निश्चित है कि श्री अंजुम का योगदान हिन्दी साहित्य को निरन्तर प्राप्त होता रहेगा जिससे हिन्दी साहित्य की श्री वृद्धि होगी।

डॉ. अनन्तराम मिश्र 'अनंत'

डॉ. अनन्त राम मिश्र 'अनंत' उन विशेष प्रमुख सशक्त हस्ताक्षरों में हैं जिनका नाम हिन्दी साहित्य जगत में बड़ी ही सरलता व सम्मान के साथ लिया जाता है। डॉ. अनंत का व्यक्तित्व और कृतित्व सभी प्रकार से शुभ गुण लक्षणों से सम्पन्न है। उनका गहन गम्भीर अध्ययन, व्यापक चिंतन एवं निकट से जिया हुआ लोक-जीवन सभी कुछ उनके साहित्य में प्रतिबिम्बित होता है ऐसे श्रेष्ठ रचनाकार का जन्म सन 1956 के सितम्बर महीने में हुआ। उनके पिता का नाम स्व. विश्वम्भर दयाल मिश्र है। डॉ. अनंत ने हिन्दी भाषा के साथ साथ संस्कृत भाषा पर भी गहन अध्ययन किया है। उन्होंने एम.ए., पीएच.डी. की उपाधियाँ पाप्त की और केन ग्रोअर्स नेहरु पी.जी. कालेज खीरी में एक रीडर के रुप में अपनी सेवाएँ प्रदान की श्री अनंत जी का कृतित्व विशाल साहित्य भण्डार से भरा हुआ है। उनकी अनेक रचनाओं का प्रकाशन हो चुका है और अनेक रचनाएं प्रकाशाधीन हैं। सन 1979 से अब तक हिन्दी एवं संस्कृत में उनकी चौदह कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी है। डॉ. अनन्त नदी काव्य के प्रणेता हैं। हिन्दी कविता में गंगा के अतिरिक्त प्रमुख भारतीय नदियों - यमुना, सरयू, नर्मदा, कृष्णा, पंच गंगा और सप्तसिन्धु- नदी काव्यों का नवीन व मौलिक अवदान हो चुका है। डॉ. अनंत ने अनेक मानद-उपाधियां प्राप्त की और उनके व्यक्तित्व कृतित्व की चर्चा व उल्लेख अनेक शोध ग्रंथो में हुआ है।

उन्होंने अपने जीवन के एक एक क्षण का सदुपयोग करके अमूल्य साहित्य रत्नों को गढ़ा है। उनके साहित्यिक पृष्ठों पर कहीं इतिहास बोलता है तो कहीं शृंगार के मधुर स्वर गुंजित हैं। कही युग बोद मुखरित है, तो कहीं विज्ञान के विनासकारी उत्कर्ष पर उनका मन चिन्तित होता है। कहीं प्रकृति का नेत्र हर्षक असीम सौन्दर्य है तो कहीं अध्यात्म-दर्शन की ज्वलन्त पिपाशा।

अतीत से वर्तमान तक साद्योपात्त रुप में सम्पूर्ण भारत अपनी संस्कृति का ध्वज उठाये हुए डॉ. अनंत जी की कविता के माध्यम से अखिल-विश्व को मानवता का सन्देश दे रहा है।

हिन्दी कविता में दोहा छन्द एक लम्बे काल खण्ड से अपना स्थायी एवं अखण्ड वर्चस्व बनाये हुए हैं। दोहा अपने पारम्परिक स्वरुप में भी युगानुरुप भाषा-शैली, कथ्य आदि को समाहित किये हुए काव्य की अन्य विद्याओं के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रहा है। यद्यपि दोहा मुक्तक छन्द है फिर भी प्रबंध काव्यों में दोहे का प्रयोग निरन्तर होता रहा है और आज भी हो रहा है। आज कल तो गीत गज़ल भी दोहा शैली में लिखे जा रहे हैं। जो दोहा छन्द के विकासशील रहने का प्रमाण है।

यदि देखा जाय तो डॉ. अनन्तराम मिश्र सम्पूर्ण राष्ट्र में नदी-काव्यों के सारस्वत कवि के रूप में चर्चित, पठित एवं सम्मानित हैं, किन्तु उन्होंने नदी-काव्यों के सृजन पथ पर भी अनेक मुक्तक कविताओं के ग्रन्थ प्रणीत किये हैं, जिनमें ''अंगारों के देश'', ''ऋचाएं ज्योति की'' (गीत-मुक्तक) ''छन्द ये मेरे'' सवैया-धनाक्षरी, नचिकेता नहीं कोई (गज़ल संग्रह), 'नावक के तीर' (दोहा संग्रह), उग आई फिर दूब (दोहा संग्रह) दोग्धक शतकम् (दोहा संग्रह) इत्यादि। इतने व्यापक फलक पर हिन्दी कविता सृजन के समानान्तर गद्य में निबन्ध, संस्मरण, समीक्षा एवं शोध पत्र भी लिखे हैं। उन्होंने हिन्दी के अतिरिक्त संस्कृत मे भी साहित्य सृजन किया है। प्रमुख भारतीय नदियों पर सरस स्त्रोत लिखे है। डॉ. अनन्त जी का सद्य प्रकाशित दोग्धक शतकम् ''उनकी उभय पक्षीय काव्य-साधना का पुष्ट प्रमाण है। इन्द्रधनुषी परिवेश मे रचा-बसा दोग्धक शतकम्'' यथार्थ की पूर्ण अभिव्यक्ति करने में अक्षरशः सफल है। आज की राजनीति पर अपनी व्यंग्यधर्मी द्रष्टि से कटाक्ष करते हुए उनका मत दर्शनीय है -

छद्ममयी दुःख प्रदा चंचलास्ति कुटिलापि।
राजनीति वेश्या सखे! वरणीया न कदापि ।।(156)

आज का उपभोक्तावादी जनमानस पश्चिमी मोहावेश मे अपनी परम्परा, सभ्यता एवं संस्कृति को ध्वस्त करता हुआ उस मरुमरीचिका में तृप्ति का साधन खोज रहा है। जहाँ जीवन की एक बूँद भी शेष नहीं -

मरुमरीचिकायां जलं यद्यपिनास्ति कदापि।
विषयतृषितमानसमृगो, धावति ततस्तथापि ।।(157)

''अपने घर की आँधियाँ'' शीर्षक से सम्बद्ध शताधिक प्रेरक दोहे डॉ. अनन्त द्वारा प्रस्तुत दोहा दशक में उपहृत है, जिनमें युगीन संदर्भ, आत्म परक, पर्यावरण, नीतिपरक, पत्थर, जिन्दगी,

शृंगार, अन्योक्ति इत्यादि विविध सन्दर्भ उनके दोहों में ध्वनित होता है। इनमें सबसे अधिक रुप से युगीन संदर्भो को सर्वाधिक उच्चस्वर प्रदान किया गया है।

डॉ. अनन्त का राष्ट्रवादी कवि वर्तमान सामाजिक पर्यावरण की बदलती बिगड़ती हुई स्थिति से अत्यन्त चिन्तित है। आस्था के ढहते हुए कगार, बिच्छुओं के दंशों से तृषित मानवता, कुण्ठा ग्रस्त युवा पीढी और उस पर बेरोजगारी की मार, आँगन में उगती (पड़ती) हुई दीवारें, नैतिक मूल्यों का पतन, शूली पर लटका हुआ सत्य, उजडती हुई अमराइयाँ, राज-रोगों की चपेट में श्रद्धा और विश्वास इत्यादि द्रश्यों से कवि का मन क्षुब्ध है। वह आज के प्रतिनिधियों को धिक्कारते हुए अपने तीखे व्यंग्य बाणों से आहत करता है -

धन्य आप गुणधाम हैं, धन्य आपके काम।
सेवन किया समाज का, ले सेवा का नाम॥(158)

युग-दर्शन से पीड़ित तृषित जीवन अपनी व्यथाकथा को वांचती हुई सर्वत्र दिखाई देती है। युगीन जीवन को कवि ने बड़ी ही नज़दीक से जिया है। वह उसके सभी पक्षों से भलीभांति परिचित है। आज के मरुस्थली में रस कहाँ जिसे पानकर वह सुखानुभूति कर सके, आज के जीवन का द्रश्य तो यह है कि -

अंगारे तकिया बने, कुण्ठा-कण्टक सेज।
पूरा जीवन हो गया, दुःख का दस्तावेज॥(159)

समय की धरातल पर डॉ. अनन्त जी के दोहे सत्य को उजागर करने में पूर्ण समर्थ हैं। उनका एक एक दोहा रत्नों के समान अमूल्य है। वे भुक्तभोगी मन को अपने जीवन के कटु अनुभव सहेज कर रखने की सलाह देते हैं। क्योंकि अनुभव से बडा कोई प्रेरक नहीं होता -

रखले निज बहुमूल्य दुख, मन मे छिपा सयत्न।
लोग लुटाते हैं नहीं, यों ही अपने रत्न॥(160)

डॉ. अनन्त राम मिश्र के दोहों में समग्र राष्ट्र की सांस्कृतिक चेतना एवं भावात्मक समेकता एक साथ झंकृत हो उठी है। उनकी प्रथम दोहा सतसई **''नावक के तीर''** इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। नावक के तीर गाँव से दिल्ली तक, अतीत से वर्तमान तक समस्त युगीन सन्दर्भो से सुसज्जित सतसई परम्परा का अद्यतन एवं पुष्ट सोपान है। साहित्य जगत का व्यक्ति पर्यटक उनकी सहजता सरसता एवं कलात्मकता से आकृष्ट होकर सांगोपांग देखे बिना नहीं रह सकता।

उनके प्रत्येक दोहे में पूरे-पूरे कथानक समाविष्ट हैं। लोक कहावतें, मुहावरे, प्रतीक, विम्ब

नये नये उपमान आदि उनके कथ्य को सम्प्रेषणीयता प्रदान करते हैं। अलंकार प्रसंगानुकूल स्वयं आकर उनके दोहों में बस गये हैं। रस तो प्रत्येक दोहो में सहज ही लिपटे हुए हैं। ''नावक के तीर'' के सम्बन्ध में प्रख्यात समीक्षक पं. गोमती प्रसाद मिश्र 'अनिल' का कथन द्रष्टव्य है-

चिरन्तन काल से चली आ रही प्रथा-परम्पराओं के स्मारक हैं ये दोहे, जिनका शाश्वत मूल्य है देशकी मिट्टी से जुडी हुई भावनाएं। इन दोहों में सहेज कर रखी गयी हैं। राष्ट्रीय उत्थान-पतन का हर्ष विषाद व्यंजित हुआ है। इन दोहों में कहीं बिहारी का लालित्य है तो कहीं कबीर का कटु सत्य, कहीं रहीम का लोकाचार है तो कहीं तुलसी का विधि-निषेध।''

नावक के तीर के दोहों के अनुशीलन से स्पष्ट है कि कवि के विचार प्रत्येक समस्या की गहराई तक पहुंचे हैं। समाज मेंव्याप्त भ्रष्टाचारों, कुरीतियों, कुप्रथाओ, विषमताओं के प्रति कवि के मन में गहरा क्षोभ है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में जहां एक ओर लोक जीवन की झांकी है, वहीं लोक जीवन के साथ कवि के गहराई से जुडे होने का प्रमाण भी है। समाज का अन्तरंग एवं वहिरंग चित्र उकेरता हुआ कवि निश्चय ही अपनी सूक्ष्म द्रष्टि का प्रमाण प्रस्तुत करते हुए चलता है। ग्राम्य जीवन की ओर आकर्षण एवं नगर जीवन से विकर्षण का भाव भी नावक के तीर की विशेषता है -

युग-बहाव में बह गये, आस्थावान कगार।
पूछो डोली को किधर, ले जा रहे कहार।।(161)

शान्ति, प्रेम, विश्वास को, कर-करके खल्लास।
भय, शंका, आतंक अब, बन बैठे बिन्दास।।(162)

डाल पात, फ तोडना, जिसका प्यारा खेल।
उस बन्दर के हाथ दी, तूने आज गुलेल।।(163)

क्यों पिसते हैं व्यर्थ ही, धुन गेहूँ के साथ।
जब कि रेंगने की कला, आयी उनके हाथ।।

यदि समुद्र से भी कभी, बुझती पगली प्यास।
तो सीपी क्यों पालती, स्वाति-बिन्दु की आस।।

ईंट-ईंट जुडकर हुई, बरसों में तैयार।
नहीं एक दिन में बनी, इस घर की दीवार।।(164)

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि डॉ. अनन्तराम मिश्र के दोहों मे पूरे के पूरे कथानक ही समाये हुए हैं जो स्वतंत्र रूप से प्रत्येक दोहे में देखे जा सकते हैं। डॉ. अनन्त का कृतित्व अपने आप में ज्ञान का सागर भरे हुए है। उनका कृतित्व हिन्दी साहित्य की गरिमा को बढ़ाने मे अपना भरपूर सहयोग देता है।

शृंगार की रसोक्ति हो या नीति की सूक्ति, प्रबंध काव्य हो या मुक्तक काव्य, इसका प्रयोग प्रचुरता से पाया जाता है। एक छोटे से छन्द में परिस्थितियों की सघनता लाना बड़ा ही कठिन होता है, पर रसिक कवियों ने ध्वनि चित्रों सटीक सादृश्य विधानो, उक्ति की सहजता से दोहे को अनुपम बना लिया है। तुलसी हो या रहीम, बिहारी हो या रसखान, सभी ने दोहों से पैने वार किये हैं। तुलसी ने निर्व्याज भंगिमाओं द्वारा संक्षिप्त शब्दों में गहरे अर्थ भरे दोहे लिखे। रहीम ने नीतिपरक, शृंगार परक, भक्ति परक दोहे रचे हैं। बिहारी तो शृंगार व सूक्तिपरक छन्दो (दोहों) के लिए चर्चित ही है। रसखान यद्यपि सवैया के लिए प्रसिद्ध हैं लेकिन उन्होंने भी अपनी ''प्रेम वाटिका'' दोहा छन्द में ही लिखी है।

श्री ओम वर्मा

परिवेश में व्याप्त विसंगतियाँ, विद्रूपताएँ संवेदनशील व्यक्ति को चिंतनशील बना देती हैं। यदि कोई भावुक भी हो तो उसे यंग्यकार बनने से कोई रोक नहीं पाता। **श्री ओम वर्मा** की रचना धर्मिता इसी पृष्ठभूमि की देन है। श्री ओम वर्मा जी का जन्म विदिसा (म.प्र.) में हुआ। उनके पिता का नाम श्री बाबूलाल वर्मा। बचपन से ही श्री ओम वर्मा का रुझान साहित्य से रहा है। अतः 1977 से उन्होंने कहानी कविता, गीत, गज़ल, दोहा, लघुकथा व्यंग्य व समसामयिक विषयों पर लिखना शुरु कर दिया। उनकी लगभग इन सभी विधाओं में रचित 250 से अधिक रचनाएं देश की अनेक पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी है तथा कुछ रचनाएं विभिन्न सम्पादकों द्वारा सम्पादित संकलनों में संकलित हैं। श्री ओम वर्मा ने कागज़ी शिक्षा विज्ञान व अंग्रेजी विषय मे प्राप्त की फिर भी हिन्दी के प्रति उनका लगाव निरन्तर लगा रहा।

दो विपरीत प्रकृति वाले विषयों में स्नातकोत्तर उपाधि धारक हिन्दी में अपनी भावाभिव्यक्ति हेतु व्यंग्य विद्या को अपनाता है। विज्ञान के अध्येयता अधिक लेखनी लिखने से अक्सर बचते हैं वे सूत्रों से काम चलाते हैं। वही सूत्रात्मकता वर्मा जी को दोहों की ओर खींच लाई और आपने बिहारी सूक्ति ''देखन में छोटे लगें घाव करें गम्भीर'' को अपना लिया और दोहों के माध्यम से अपनी कथा-व्यथा को अभिव्यक्त करने लगे।

प्रारम्भ में इन्होंने कुछ गजलें भी लिखीं, कुछ गीत भी लिखे। लेकिन व्यंग्यकार ओम वर्मा गीतों की बजाय दोहों में अधिक मुखर व जेनुइन हैं। आज उनकी लेखनी से प्रत्येक विषय पर, भाव पर, स्थिति में दोहे अनायास ही निकलते चले जाते हैं, उन्होंने दोहा बनाने के लिए प्रयत्न की आवश्यकता नहीं पडती। भाषा भाव और शब्द उनके साथ पूरा सहयोग करते हैं। कुछ व्यंग्यात्मक भाव निम्न दोहा में देखे जा सकते हैं -

चीलों के हों घोंसले, या कि सियासत दान।
इधर न होता माँस ज्यों, उधर नहीं ईमान।।(165)

इसमें निहित अर्थ, भाव और उसका पैनापन संवेदनशील व्यक्ति के अन्तरतम को बेंधने की शक्ति रखते हैं। यही कवि श्री ओम वर्मा का इष्ट और प्राप्य है। श्री वर्मा ने काफी अध्ययन किया है। उनका अपना निजी पुस्तकालय है जिसमें कई प्राप्य-अप्राप्य पुस्तकों का संकलन है। वह जितना अधिक पढते हैं उसकी तुलना में उनका लेखन न्यून है पर है प्रभावी।

वर्मा जी अंग्रेजी मे मास्टर हैं। अतः उनके दोहों पर अंग्रेज कवियों की ध्वनियाँ भी स्पष्ट सुनाई देती हैं। प्रसिद्ध कवि ''जॉन कीट्स'' की एन्द्रिकता और प्रकृति का मानवीयकरण, दोनों का प्रतिरूप है यह दोहा -

टेसू महुआ गा रहे, वन में फागुन-राग।
लगा न दे ये बाबरे, कहीं विपिन में आग।।(166)

दोहा जैसे मात्रिक छन्द में अनुप्रासों, रुपकों, उपमाओं, उत्प्रेक्षाओं के साथ-साथ यमक और श्लेष अलंकार भी इन्हे महत्तर बनाने में नहीं चूकते। श्री वर्मा जी द्वारा दी गयी उपमाएं और रुपक तुलसी कालीन नहीं बल्कि इक्कीसवीं शताब्दी के हैं -

तुम जीवन से क्या गये, गई फूल से गंध।
जैसे कविता से गये, रस, पिंगल, औ छंद।।(167)

श्री वर्मा जी ने फुटकर दोहे नहीं लिखे बल्कि चुन चुनकर विषय लिए हैं और प्रत्येक विषय पर एक-दो नहीं दर्जनों दोहे लिखकर अपनी भावाभिव्यक्ति के साथ-साथ माँ भारती के भंडार में अपना किंचित योगदान करने का प्रयास किया है। श्री वर्मा जी द्वारा नारी जाति पर लिखे गये दोहों की वानगी देखें, नारी जो बेटी है, नारी जो माँ है, पत्नी है, इन सबके अलग-अलग रुपों और प्रकृति को वर्मा जी ने अत्यन्त सहजता पूर्वक निरुपित किया है -

बेटी से ऐ बाप तू, बढ़ा न राग-विराग।
खिलती है इस बाग में, खुशबू दे उस बाग॥

बीबी रहती निर्जला, मर्द उडाता जाम।
फिर भी अन्तिम साँस तक ढोती उसका नाम॥

सीधे साधे व्यक्तित्व वाले वर्मा जी को राष्ट्रभाषा, राजभाषा, जनभाषा और अपनी मातृभाषा हिन्दी से बहुत स्नेह, अनुराग है इस लगाव से भरे हुए उनके भाव अनेक दोहों में व्यक्त हो चुके हैं। वर्मा जी ने इसी भाषा की तरक्की के लिए हिन्दी चालीसा लिखी है जिसमें इन्होने नागरी के प्रति अपनी संवेदनाओं को शब्द देने का प्रयास किया है। भाषा के लिए सचेष्ट रहने के लिए वह चेतावनी देने में पीछे नहीं रहते -

यह हिन्दी जय नागरी, करता चल उद्घोष
माता के सम्मान का रहे निरन्तर होश॥(170)

हिन्दी (मालवी, निमाडी, राजस्थानी सहित) उर्दू, अंग्रेजी भाषाओं के शब्द, कहीं भी खटकते नहीं हैं। बल्कि भावों की अभिव्यंजना को सहज और गेय बनाने में सहायक हैं। काव्य के अन्तर्गत वर्मा जी की भाषा उनके भावों को बिना रुके, प्रवाहमान बनाने में महत्वपूर्ण साथी है। दोहे को लेकर वह कहते हैं कि -

दूहा, दोहा, दोहरा हैं तीनों ही नाम।
हर युग में कवि को पडा, इसी छंद से काम॥

नारी के प्रति सम्मान भाव व्यक्त करते हुए वर्मा जी कहते हैं कि-

जिस नारी के सामने, झुके कभी यमराज।
हर पल नर के सामने, क्यों झुकती वह आज॥(172)

कवि वर्मा जी ने संसार को बडी ही नजदीक से देखा है। वह समाज में निरंतर अपनी दृष्टि बनाये रहते हैं। रंगों की पहचान तो वे बखूबी ही जानते हैं। फिर चाहे वह रंग व्यक्तित्व का हो या गुलाल का, समाज की झलक दिखाते हुए वर्मा जी कहते हैं कि -

सूरज देखो छुप गया, फिर बादल की ओट।
नेता ज्यों छुप जाय है, जनता से ले वोट॥(173)

हल्कू से मुन्नी कहे, मत खरचो इफरात।
बिन कम्बल कैसे कटे, माघ पूस की रात॥(174)

लगती है निज प्रशंसा, किसे बुरी अब यार।
खुश होता है शेर जब, इस्तुति करे सियार।।(175)

श्री ओम वर्मा जी के दोहों को देखकर यही कहा जा सकता है कि भाषा, भाव, शैली, पदावली सहित, सभी रुपों में दोहे ही श्रेष्ठ हैं। इनकी कोमलकान्त पदावली ही नही बल्कि शृंगार (संयोग-वियोग) और व्यंजना, रसों के माध्यम से अभिधा, लक्षणा और व्यंजना तीनो शब्द शक्तियों का अवसरानुकूल प्रयोग करके मानवीय संवेदनाओं को दोहा जैसे छोटे किन्तु सार्थक छन्द के माध्यम से अभिव्यक्त कर अपने कवि कर्म को श्री ओम वर्मा ने सार्थकता और महत्ता प्रदान की है।

दोहा जब हृदय की गहराई से मानवीय दृष्टिकोण और संस्कारों के प्रति पूरी निष्ठा के साथ सामने आते हैं। तो पाठकों के हृदय के तार-तार झंकृत हो जाते हैं। आज के दोहाकार आज के परिवेश से अपनी भाषा, शब्द और संस्कार चुनते हैं। राजनीति, सामाजिक और सांस्कृतिक हालातों के प्रति अपनी स्वीकार और अस्वीकार से अपनी अभिव्यक्ति को दोहों के छन्द में बुनते हैं। समकालीन कविता के लिए यह एक शुभ संकेत है।

संवेदनशील कहानीकार, विद्रूपताओं पर तीखे कटाक्ष करनेवाले व्यंग्य लेखक और मंचीय काव्यपाठ में हास्य व्यंग्य कवि के रुप में प्रतिष्ठित **'श्री ब्रज किशोर पटेल'** की दोहाकार के रुप में भी पहचान बन पाई है। समकालीन कविता में अपनी प्रभावी प्रस्तुति के साथ आये दोहों मे अचान श्री पटेल का ध्यान इस विधा के सामर्थ्य की तरफ आकर्षित हुआ। श्री पटेल अपनी स्वभाव में ही व्यंग्य शैली के कवि हैं। हिन्दी पर उनका रुझान बाल्यावस्था से ही रहा है। एक मध्यम वर्गीय कृषक परिवार से आनेवाले श्री ब्रजकिशोर का जन्म सन 1952 में इटारसी जिला के सोना सांदरी गाँव में हुआ। उन्होंने कई व्यंग्य कहानी व नाटकों की रचना की है। साथ ही पटेलजी फिल्मी कथा लिखने में अग्रसर रहे हैं। कविता में हास्य व्यंग्य के साथ साथ गज़ल एवं दोहा के माध्यम से गम्भीर कविताओं का भी आप ने सृजन किया है। आपका "प्रस्ताव" नामक गज़ल संग्रह हिन्दी साहित्य में विशिष्ट स्थान रखता है। एक प्रौढ शिक्षा अधिकारी के पद पर सेवारत होकर भी वे अपने लेखन में समय व्यतीत कर लेते हैं। और धीरे धीरे वे अल्प समय में ही दोहा लेखन के माध्यम से देश के श्रेष्ठ दोहाकारों में पहचान बनाने में समर्थ हुए हैं। श्री पटेल जी के दोहों में एक अलग ही प्रकार की सुगन्ध है, अलग तेवर हैं एक भिन्न ही पहचान भी है और कम शब्दों में गहरी बात कह देने की अपनी मौलिक कुशलता भी है।

यदि देखा जाय तो श्री पटेल के दोहों के प्रमुख विषय, प्रकृति, समाज, राजनीति, संस्कृति, सभ्यता, वर्तमान शासन व्यवस्था मानवीय संवेदना से लेकर आध्यात्मिक चेतना तक विस्तृत है।

इन सभी विषयों पर नये हालातों में नवीन द्रष्टि युक्त चिंतन, सरस-सरल भाषा शैली कहावतों, मुहावरों व उपयुक्त प्रतीक बिम्बों के साथ आपने दोहों का सृजन किया है। गाँव की सौंधी महक व्यंग्य का पैनापन इनके दोहों की निजी विशेषता है। जीवन का गहरा अध्ययन ज्ञान व अनुभव भी आपके दोहों में झलकता है। सर्दी, गर्मी, वर्ष, पेड, नदी, पक्षी, चिडिया, पत्थर आग आदि प्रकृति की शाश्वत सुन्दरता में वे मानवीकरण करके सार्थक और आस्था परक बातें सामने रखते हैं। इन दोहों में प्रेरणा के स्रोत दिखाई देते हैं -

हवा स्वयं रचने लगी, जीवन का संगीत।
चिड़िया जब गाने लगी, फुदक-फुदक कर गीत।।(176)

उजियारे की आत्मा, अँधियारे की देह।
अपने भीतर झाँकिये, मिटें सभी संदेह।।(177)

श्री ब्रज किशोर पटेल के दोहों में जहाँ एक ओर विषमता, प्रदूषण, विद्रूपताएँ, विसंगतियां व अनैतिकता का चित्रण मिलता है। वहीं दूसरी ओर निराशा के अंधकार में से ही आस्था, विश्वास की उजली किरणें भी खोजकर प्रस्तुत करता है -

वही बजा पाता सदा, यहाँ विजय का शंख।
छू लेता आकाश जो, पकड़ समय के पंख।।(178)

समय उछाले कालिमा, रंग हुये बदरंग।
काले सबके मुँह हुये, पडी कुँए में भंग।।(179)

कवि पटेल अपने राष्ट्र की संस्कृति के पतन को लेकर भी अपने दोहों में सर्वत्र चिंतित दिखाई देते हैं। साथ ही उन्हे अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं पर्व, त्योहारों आदि पर भी गर्व है । उनके ऐसे दोहों में -

दिल में एक सवाल है, अब क्या मलें गुलाल।
लाज शरम से हो गये, लाल स्वयं ही गाल।।(180)

दीपक ने साँसें करीं, उजियारे के नाम।
अंधियारा करने लगा, दिया तले विश्राम।।(181)

इसी आश पर है टिका, जीवन का विश्वास।
अँधियारे की कोख से, निकलेगा उजियास।।(182)

श्री पटेल के 'दोहे', दोहों की वर्तमान लहराती फसल में सजग किसान की कवि द्रष्टि लिए हुए अपना योगदान सम्मिलित करेगा।

जाने कैसी कब बहे, कैसा रहे बहाव।
राजनीति अब हो गई, बिना पाल की नाव।।(183)

श्री दिनेश रस्तोगी हिन्दी साहित्य की व्यंग्य विद्या के सशक्त हस्ताक्षर हैं जिन्होंने अपनी रचना धर्मिता से न केवल साहित्य को समृद्धि के नये आयाम दिये हैं, अपितु प्रसुप्त जनचेतना को जागरण का नव संदेश देकर साहित्य संज्ञा को सार्थक भी किया है। अतुकान्त कविता से लेकर क्षणिकायें, दोहा, गीत, बाल कविता, गज़ल तक का विस्तार नापती उनकी लेखनी वर्ण्य विषय को इतना प्रभविष्णु बना देती है कि पाठक उसे पढ़कर केवल जगता या हँसता ही नहीं उस पर सोचता भी है।

श्री दिनेश जी का जन्म उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर में पहली अगस्त सन 1946 में हुआ उनके पिता स्व. श्री हरि नारायण रस्तोगी थें। श्री दिनेश जी ने अपनी कागजी शिक्षा विज्ञान विषय में प्राप्त की उन्होंने प्राणीशास्त्र में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की । विज्ञान से जुड़े होने के बावजूद भी श्री दिनेश जी का लगाव हिन्दी साहित्य के प्रति विशेष रहा है। उन्होंने अपनी राष्ट्र भाषा में अपने भावों को व्यक्त करके, बाल साहित्य व हास्य व्यंग्य की प्रत्येक विद्या में लेखन करके पत्र पत्रिकाओं मे प्रकाशन हुआ। साथ ही उनकी रचनाएं कई प्रतिष्ठित संकलनो में संकलित हुई हैं। आपकी रचनाओं का प्रसारण आकासवाणी व दूरदर्शन केन्द्र पर से भी होता रहा है। श्री रस्तोगी जी का नाटक व रंगमंच के प्रति विशेष रुचि रही है। साथ ही आधुनिक चित्रकला और छायांकन में भी वे विशेष लगाव रखते हैं। इन सब बातों से तो यही सिद्ध होता है कि श्री दिनेश जी का व्यक्तित्व कला के प्रति हमेशा सम्माननीय रहा है। फिर चाहे भले ही उन्होंने विज्ञान विषय में योग्यताएं प्राप्त की हों ।

विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाओं के प्रकाशन का बिन्दु हो या मंच पर श्रोताओं को काव्य-पाठ द्वारा विभोर करने का बिन्दु दिनेश जी की कविता ने दोनों स्थलों पर अपनी प्रभाविष्णुता की गहरी पद-छाप छोडी है। भारत भर की विभिन्न पत्रिकाएं आज उनकी उत्कृष्ट सर्जना-शक्ति का उन्मुक्त उद्‌घोष करती हैं और देश के बडे-बडे मंच उनकी काव्य प्रतिभा की गवाही देते हैं। दोहा की रचना में कवि कल्पना की भाव समष्टि को कल्पना की समाहार शक्ति से संयोजित करता है और फिर उसे सामासिक पदावली में बांधकर इस तरह प्रस्तुत करता है कि पाठक उसे पढते या श्रोता सुनते ही वाह-वाह कर उठता है।

दोहा लेखन के क्षेत्र में श्री दिनेश रस्तोगी एक ऐसे ही सशस्त हस्ताक्षर है जिन्होंने सामयिक विषयों को अभिव्यक्ति देकर अपने दोहों को सारगर्भित और मर्मस्पर्शी बना दिया है। सामाजिक प्रदूषण पारिवारिक विघटन नैतिक अवमूल्यन, प्रशासनिक भ्रष्टाचार, चुनावी विकृति, खोखला जनतंत्र, स्वार्थ केन्द्रित नेतृत्व, शहरों की बदरंग चमक-दमक हिन्दी की उपेक्षा और अंग्रेजी प्रेम, सिसकता बचपन, दुर्घटनायें, रक्तपात रत धाकि उन्माद, बढती आवारी, कमर तोड मँहगाई आदि जैसे विषय उनके दोहों के वर्ण्य विषय बनकर आते हैं तो वे सच्चे अर्थों में सामाजिक दर्पण बन जाते हैं -

गुरु-ग्रन्थ, गीता कभी, बाइबिल कभी कुरान।
कुछ बंदो के कृत्य से सब हैं लहू लुहान॥(184)

पारिवारिक विघटनों को लेकर कवि चिंतित है -

सहादरों में उठ गयी, खेतों वाली मेड़।
पर बेचारा कट गया, साये वाला पेड़॥(185)

आज की चढती हुई महगाई के प्रति कवि कहता है कि -

उतरेगा यह सत्य है, नशा अगर चढ़ि जाय।
चढकर जो उतरे नहीं, मंहगाई कहलाय॥(186)

धंधा मंदा हो गया, बन जा पुलिस दलाल।
फिफ्टी-फिफ्टी बाँटकर, हो जा माला माल॥(187)

श्री दिनेश जी के दोहों की एक प्रमुख विशेषता यह है कि उनका व्यक्तित्व व्यंग्य प्रधान है। यही भाव दोहा में भी उतरते हैं। दिनेश जी मुख्यतः व्यंग्य विद्या के कवि हैं और इसी कारण उनके दोहे व्यंग्य को तीखे और मर्म को छू जाने वाले रंग फूंकते हैं -

नेता बगुलाराम की, सेवा द्रष्टि अटूट।
नोट-चोट से कर रहे, वोट-वोट की लूट॥(188)

न्योला बीन बजा रहा, मस्त सर्प दुलराय।
गठबंधन को देखकर, भैस खड़ी पगुराय॥(189)

कल्पना की समाहार शक्ति और भाषा की सामासिकता श्री दिनेश जी के व्यक्तित्व को सफलता की ओर ले जाती है। इस दिशा में उनके दोहे विशिष्ट स्थान रखते हैं और उनके कृतित्व को निखारते हुए प्रतीत होते हैं। कुछ ऐसे ही दोहे द्रष्टव्य हैं -

नदी दूध, ज्वालामुखी यौवन, धन, अरमान।
जब-जब आते ही मिले, सब में कई उफान।।[190]

अफसर, रुतबा, मातहत, गाडी, फाइल, टूर।
सपने मिले विकास के, खट्टे थे अंगूर।।[191]

आज दोहों की परम्परा पुनर्जीवित होकर नये दोहों के रुप में आ रही है। ग़ज़ल के बाद अब दोहा-विधा गीतकारों को भी आकृष्ट कर रही है। यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि जहाँ सिद्धहस्त ग़ज़लकारों ने दोहों की मारक क्षमता का लोहा माना है, वही नवगीतकारों ने भी दोहों को नये-नये विम्बो एवं नये संस्कारों से संस्कारित किया है।

आचार्य रामानुज त्रिपाठी

आचार्य रामानुज त्रिपाठी उन्ही गीतकारों में एक महत्वपूर्ण नाम हैं। जो दोहों को एक नया कलेवर प्रदान करने में अपनी पूरी क्षमता के साथ लगे हुए नज़र आते हैं।

श्री त्रिपाठी जी अपने व्यक्तित्व से अत्यन्त शालीन एवं सरल हैं, पर उनके दोहे उर्जा से भरपूर हैं। श्री त्रिपाठी जी हिन्दी साहित्य के सृजन में लगे हैं । उन्होंने भारतीय समाज को बड़ी नज़दीक से अनुभव किया है। श्री रामानुज त्रिपाठी का जन्म सुल्तानपुर जिले के गरयें नामक गाँव में सन 1946 में हुआ। बचपन से ही अध्ययन की ओर उनका मन विचरित होता रहा । आज पूरा जीवन अध्ययन और अध्यापन में लगा रखा है। देश की लगभग समस्त पत्रिकाओ और पत्रों में अरसे से अनवरत गीत, ग़ज़ल और दोहों का प्रकाशन होता रहा है। साथ ही अनेक काव्य संकलनों में श्री त्रिपाठी जी की रचनाएं संकलित हैं। इनमें से कुछ संकलन ऐसे हैं जो आधुनिक साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। समय की शिला पर और दोहे समकालीन जैसे संकलन में संग्रहित श्री त्रिपाठी जी के दोहे उनकी गहन सोच व समाज, देश के प्रति उनके भावों को बखूबी व्यक्त करते हैं। हिन्दी भाषा पर उनका अधिकार है। दोहों में उनके द्वारा व्यक्त किये गये शब्द पर्त-दर-पर्त सम्पूर्ण कथ्य खोलते चले जाते हैं। जीवन और ज़िंदगी की परिभाषा लगभग हर एक रचनाकार ने की है। सबके अनुभव इस क्षेत्र में भिन्न हैं। रामानुज जी के अनुभव पर यदि हम नज़र डालते हैं तो पाते हैं कि उनका अनुभव एक सामान्य आदमी का अनुभव है जिसे कदम-कदम पर पीडा, अपान, विसंगतियों एवं सपनों को टूटने का सामना करना पडता है। कवि ने अपने ऐसे ही भाव दोहा में व्यक्त करते हुए कहते हैं -

फटकर चिथडे हो रहे जिसके पृष्ठ तमाम।
साँसों के इस ग्रन्थ का, रखा 'ज़िंदगी' नाम।।[192]

समाज से जुडना प्रत्येक वास्तविक रचनाकार की नियति होती है और उससे जो रचनाकार को अनुभव प्राप्त होता है। उन तथ्यों की बेबाक बयानी उसे रचना में रचित करनी पडती है। श्री त्रिपाठी जी इस विद्या के एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं -

बैठ परिंदे पढ़ रहे, पेडों पर अखबार।
उजडा किसका घोंसला, आँधी में इस बार॥[193]

श्री रामानुज जी के दोहे उनके व्यक्तित्व की तरह शालीन हैं। उनकी यह शालीनता कथ्य, कहन एवं भाषा तीनो स्तरों पर दिखायी देती है। वे आमतौर पर किसी पर दोषारोपण नहीं करते। परन्तु अपना दर्द अवश्य ही कह देते हैं -

खुली खिड़कियाँ व्यस्त हैं, गढने में सिद्धान्त।
लेकिन दरवाजे खडे, चुप्पी साधे शांत॥[194]

चरकसंहिता में मिले, इधर नये कुछ तथ्य।
पानी हुआ अपथ्य अब, आग हो गयी पथ्य॥[195]

जहाँ तक भाषा का प्रश्न है। श्री त्रिपाठी जी की भाषा एक शान्त नदी के समान बढ़ती चली जाती है। वे भाषा और शब्दों के स्तर पर एक प्रयोग धर्मी रचनाकार नहीं मालुम पडते हैं परन्तु उन्हे हम रुढिवादी भी नहीं कह सकते क्योंकि आमबोलचाल की भाषा ही उन्हे प्रिय है और क्लिष्टता से उन्हे परहेज है।

समय के संदर्भों से जुडकर कहनेवाला रचनाकार अपनी सही पहचान बनाता है। आचार्य रामानुज त्रिपाठी समय का गीत, समय की भाषा का समयानुकूल विद्या में प्रस्तुत कर रहे हैं। यही उनके बहुयामी रचनाकार होने का पुष्ट प्रमाण है। श्री त्रिपाठी जी के दोहों में हम उनकी लेखनी के सामर्थ्य को देख सकते हैं -

मन की फटी किताब के, बचे हुए कुज पेज।
उडा ले गई द्वेष की, हवा बही जब तेज॥[196]

पढ़ा व्याकरण ग्रंथ भी, पड़ा न कोई फर्क।
हो न पाया 'कर्म' से 'कर्ता' का संपर्क॥[197]

आग बदलकर बुझ गयी, बस्ती की तकदीर।
रहे खींचते धुएं की, तुम नंगी तस्वीर॥[198]

कवि आज की राजनीति एवं सत्ता की खीचम-खांची व कुर्सी पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि -

यह कुर्सी उसके लिए, जो कर सके कमाल।
भारी भीड़ बटोर कर, खूब बजाए गाल।।(199)

यह कुर्सी दासत्व से, कर न सकी परहेज।
गोरे हटे तो चढ़ लिये, झट काले अंग्रेज।।(200)

कवि के बासंती दोहे जो समाज को ही केन्द्रित करके कवि ने लिखे हैं। शृंगार व्यंग्य के माध्यम से कवि छुपी हुई सच्चाई पर दृष्टि डालते हुए कहते हैं कि -

अभी अधखिली थी कली, चढा न कोई रंग।
लेकिन मंडराने लगे, मधु के लोलुप भृंग।।(201)
कत्ल डकैती, अपहरण, जिसने किये अनेक।
वे ही आज समाज में बने हुए हैं नेक।।(202)

दिन-दिन बढता जा रहा, जाति-धर्म का द्वेष।
मनमुटाव की आग में, आज जल रहा देश।।(203)

डॉ. पाल भसीन

आधुनिक दोहाकारों में डॉ. पाल भसीन एक ऐसा नाम है जो स्वयं दोहा लेखन को समर्पित हो गया इन्होंने यह नहीं चाहा कि इस लेखनी से उन्हे ख्याति प्राप्त हो। डॉ. भसीन के दोहे तो सहज ही मन के भाव हैं। वे कहते हैं कि ''जब कुछ कहानियों की रुप रेखा बनाना चाह रहा था ऐसे में दोहो ने उनके मन पर आकर दस्तक दिये और न जाने मन को क्या हुआ कि सन 1990 से उनके हृदय पर ये दोहे हावी हो गये और दोहा लेखन का कार्य बिना रुके शुरु कर दिया और इतने दोहे लिख दिये कि ''अमलतास की छाँव'' नामक दोहा संग्रह भी बन गया और प्रकाशित भी हुआ। ऐसे सरल स्वाभाविक व्यक्तित्ववाले श्री भसीन जी का जन्म लाहौर में 1 जनवरी सन 1940 में हुआ। शिक्षा उन्होंने हिन्दी साहित्य में भारत में ही प्राप्त की और गद्यकार आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री विषय पर मेरठ विश्वविद्यालय में शोध कार्य करके पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

लेखन के क्षेत्र में डॉ. पाल भसीन निरन्तर कार्यरत रहे। उन्होंने हिन्दी साहित्य को अपनी लेखिनी से कई नेमे दी। जिनमें धुंधली तस्वीरें (कविता संग्रह), सीपीभर प्यास (लघु-उपन्यास),

गुजरते वक्त का दर्द (कहानी संग्रह), चार अंकों का शून्य (कहानी संग्रह), अमलतास की छांव (दोहा संग्रह) आदि रचनाएं अति उल्लेखनीय है जिसमें उनकी लेखिनी के जौहर देखे जा सकते हैं।

जहाँ तक दोहा लेखन को देखे तो वे सम्प्रेष्य विषय को प्रस्तुत करने में सम्भवतः बिम्ब प्रधान शैली का ही प्रयोग करते हैं। दोहा लेखनी के आरम्भ में उन्होंने अपने हृदय के सहज एवं स्वभाविक भावों को ज्यों का त्यों ही व्यक्त कर दिया है।

कहना तो कुछ और था, कह बैठा कुछ और।
तुझे देख रोमांच से, खिले कदम पर बौर॥[204]

सब को छोडा आ गया, यहाँ तुम्हारे द्वार।
तुम्हे छोड़कर मे भला, अब जाऊँ किस पार॥

डॉ. पाल भसीन अपने कथ्य को धूप छाँही रंगो और रेखाओं के माध्यम से चित्रित करने में बड़े ही निपुण हैं। उनके दोहों का फलक विश्व चेतना या वेदना के सूत्रों से कोई तादात्म्य नहीं रखता। बल्कि उनकी लेखनी वैयक्तिक अनुभूतियों के सम्मोहन से संग्रथित है।

डॉ. पाल भसीन के दोहों में जपाकुसुम-से चरणों वाली सिरिस-सरीखी देह के संस्पर्श से खिलते कदम्बो की मलयज गंथ उनकी तितली-चेतना ने पाहन-पाहन भटक कर सेहजा है। उनके दोहों में सीपियों का बडबोलापन और गूंगे शंखों का मौन एकालाप साथ-साथ सुना जा सकता है।

तुम भी खत लिखती कभी, कर लेती यह भूल।
मैं भी हँस लेता ज़रा सुख सपनों में झूल॥[205]

क्यों निश्चित की दूरियां, आकर इतना पास।
कहाँ हुलस तुम पा रहीं, मैं भी रहू उदास॥[206]

डॉ. भसीन के भाव वहाँ तक पहुंचते हैं जहाँ तक एक कवि को निश्चय रुप से पहुंचना चाहिए। उनके दोहों में झुलसती राहों में बिखरे चन्दनवर्णी चाँदनी को अंकित करते पाल भसीन के ये दोहे उन्हे अपनी समसामयिक रचनाकारों की भीड़ से अलग खड़ा कर देते हैं। उनका प्रत्येक दोहा अपने में एक से बढकर एक है-

शरद-जुन्हाई बिछ गयी, अन्हियारे के देश।
तेरे चरणों का हुआ, जब जब यहाँ प्रवेश॥[207]

उसे देखते देखकर, देखा उसे पुकार।
देह-छन्द की गति हुई, मन्द लाज के भार॥[208]

मेरी तितली-चेतना, पंख लिये रंगीन।
पाहन-पाहन डोलती, जुर्म यही संगीन।[209]

श्री दिनेश शुक्ल

हिन्दी गीत एवं ग़ज़ल के बहुचर्चित हस्ताक्षर श्री दिनेश शुक्ल अपने समकालीन लेखन में दोहे की विद्या का पुनर्जीवित करनेवाले विशिष्ट रचनाकार हैं। राष्ट्रीय-स्तर की प्रमुख पत्र पत्रिकाओं में लगभग 900 पत्रिकाओं में विगत 4 वर्षों से इनका नियमित रुप से स्तम्भ का लेखन हो रहा है। धूप का सफर श्री दिनेश जी का प्रसिद्ध ग़ज़ल संग्रह है। व्यक्तित्व से सरल श्री दिनेश जी का जन्म 1 जनवरी 1943 में खण्डवा (म.प्र.) मे हुआ।

हिन्दी साहित्य को समर्पित श्री दिनेश शुक्ल की सबसे बडी विशेषता इनके व्यक्तित्व की सरलता और सिर्फ दो पंक्तियों में रचना को अपने भावों में बाँध देना वह भी सभी गुणी के साथ।

प्रकृति के अप्रतिम सौन्दर्य राशि ने शुक्ल जी को सदैव ही बडी गहराई के साथ प्रभावित किया है। एकांत के क्षणों में जब भी वे निसर्ग से सोचते हैं। तो उनकी भावनाओं को इससे निरन्तर यथार्थोन्मुखी अभिव्यंजना की ताजगी मिली है। ऐसी ही सोच रखनेवाले प्रकृति के प्रेमी श्री शुक्ल जी अपने दोहों में प्रकृति से जुडे हुए बिम्बों के मिथकीय प्रतीकों का प्रयोग निरन्तर अपनी लेखनी में करते हैं। साथ ही साथ आपकी रचना में कहीं कहीं एक ही शब्द को प्रतीक के रुप में रखकर नये प्रयोग भी किये हैं।

जहाँ एक ओर दिनेश जी के दोहों में भोजपत्र पर लिखे गये पदमाकर के छन्दों का अहसास होता है तो वहीं दूसरी ओर आज की त्रासद और भयावह ज़िंदगी की नंगी तस्वीर भी पेश करते हैं। वे सर पर कफ़न बाँधकर चलनेवाले एक ऐसे विशिष्ट रचनाकार हैं जो एक निर्भीक पत्रकार की तरह आधुनिक सच्चाइयों को पेश करते हैं। शुक्ल जी का कर्तव्यनिष्ठ व्यक्तित्व समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व को भली भांति समझता है । उन्होंने समाज में रहकर कई अनुभव किये हैं। जिसका जीता जागता प्रतिबिम्ब उनकी रचना में देखा जा सकता है। उनके दोहों में हवा हाथ में बंदूक लेकर मचान पर जागती हुई पहरा देती है। घर, आँगन, छप्पर हिंसा की आग में जलते हैं। चिड़ियां रक्तरंजित चोंच लेकर धूल में तड़पती हैं, उनके दोहों में सन्नाटों के प्रेत बोलते हैं, धूप में बैठा कोहरा अलाव तापता है। वहीं दूसरी ओर राजनीति की भेड मनुष्य को घास की तरह

चरती है। इस प्रकार समाज व जीवन के प्रत्येक पक्ष को सामने रखनेवाले दिनेश जी के दोहे भाषा, भाव प्रवाह, प्रभ विष्णुता, विश्वधर्मिता और समकालीनता बोध के धरातल पर अपनी एक सर्वथा स्वतंत्र पहचान बनाने में पूर्णतः सफल हैं -

शहरों में कर्फ्यू लगा, लोग घरों में कैद।
बूढे रमजानी मरे, बिनं हकीम बिन वैद ॥(210)

कौन डाल पंछी मरे, बनती कहाँ गुलेल।
कौन हाट जंगल बिका, हैं ये किसके खेल ॥(211)

बिछे गलीचे धूप के, उथले जल के ताल।
जल कुंभी क्या सूखती, मुरझाये शैवाल ॥(212)

माटी का दीपक जले, उजियाले के हेतु।
अंधकार की बेडियाँ, आग, धुएं के सेतु ॥(213)

एक हाथ सचाइयाँ, एक हाथ ईमान।
संविधान इसका कड़ा, समय न सुने बयान ॥(214)

तारे टूटे रात भर, जुगनूं मरे तमाम।
इस बेगानी लाश पर, ढूंढे किसका नाम ॥(215)

श्री हस्तीमल 'हस्ती'

आधुनिक दोहों की श्री वृद्धि में श्री हस्तीमल हस्ती का सहयोग सराहनीय है। उन्होंने अपनी सरल व स्वाभाविक (बिना किसी बनावट) लेखनी से दोहों का स्वागत किया है। 11 मार्च सन 1946 मे राजस्थान के आमेट गाँव में जन्में हस्तीजी अपनी साहित्य साधना में एक सफल योगी की तरह प्रस्तुत है। उन्होंने ''यादों के गुलाब'' आकाश भर पीडाएं, क्या कहें किससे कहें आदि रचनाओं से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया है। आज हस्ती जी अपनी लेखनी दोहा पर चला रहे हैं। उन्होंने अनेक दोहों का सृजन किया जो विभिन्न संकलनों के माध्यम से प्रकाशित हुए हैं।

हस्तीजी सम्पादन और प्रकाशन के क्षेत्र मे भी साहित्य जगत में प्रमुख है। उन्होंने काव्य पत्रिका ''काव्या'' का प्रकाशन भी किया है। संप्रति के रुप में वे निजी व्यवसाय से जुडे हुए है पर हिन्दी साहित्य लेखन में अपना भरपूर सहयोग दे रहे हैं। श्री हस्ती जी के दोहों में मूलतः सामाजिक यथार्थ को प्रतिध्वनित किया गया है। अपनी बात को निहायत सीधी-सादी शब्दावली मे कह देने

की कला को उन्होंने सहज ही सिद्ध कर दिया है। वे कहते हैं कि मजहब की अफ़ीम खा-खाकर आज आमों के कुंज नीम के समान कडवे हो गये हैं। आज के परिवेश में चीजे जितनी बहुमुल्य है मनुष्य का रक्त उतना ही सस्ता हो गया है। देर ही नहीं लगती पल में खून की नदियाँ बह जाती है। आज का आम आदमी भी व्यवसाय और नौकरी छोडकर राजनीति की दिशा में दौड रहा है। अर्थात अपना कर्तव्य अब किसी को भाता नहीं। आज सरे बाजार अन्याय की जय-जयकार हो रहा है। जिसे सुनकर भीष्म और विदुर भी मौन हैं। देश की चिन्ता को छोडकर लोग अपना अपना इतिहास बनाने की दिशा में प्रयत्नशील हैं और यहीं हस्ती जी ने अनुभव किया है। वे एक व्यवसायी है। अतः समाज में उन्हे अपनी-अपनी आपाधापी ही दिखायी पडती है। जो रचनाकार हस्ती जी ने अपने दोहों के माध्यम से समाज के समाने रखी है -

जी चाहे उतना यहाँ लगा लीजिए ढेर।
इतना सस्ता खून है, दाम लगे ना देर।।(216)

बाँगें दे मुर्गा भले, खिले धूप हर ओर।
चूल्हे पर रोटी पके, तब निर्धन घर भोर।।(217)

'भीष्म' जहाँ खामोश हों, और 'विदुर' लाचार।
हस्तीजी उस देश का तय है बंटा धार।।(218)

तन-मन से संतोष की जितनी दूर सुवास।
दूर रहा है साधु से, उतना ही सन्यास।।(219)

रत्ती भर झेले नहीं, काँटों के आघात।
यूँ ही खुशबू चाहिए कितने भोले हाथ।।(220)

'हस्ती जी' इस प्रीत की रही यही तकदीर।
मन को मिलते पंख और पाँवों को जंजीर।।(221)

डॉ. रामनिवास 'मानव'

हरियाणा के समकालीन साहित्यिक परिदृश्य पर दृष्टिपात करें। तो यह निस्संकोच कहा जा सकता है कि डॉ. रामनिवास 'मानव' प्रदेश के सर्वाधिक प्रखर एवं प्रतिभाशाली साहित्यकारों में से एक हैं। 2 जुलाई 1954 को तिगरा, जिला महेन्द्रगढ़ (हरियाणा) में प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी पंडित मातादीन के घर जन्मे डॉ. 'मानव' का व्यक्तित्व सचमुच बहुमुखी-बहुआयामी रहा है। वे अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कारों से पुरस्कृत एवं विशिष्ट कवि-लेखक हैं। रश्मि रथ, साँझी है रोशन और

बोलो मेरे राम, सहमी सहमी आग (दोहा संग्रह), घर लौटते कदम, और इतिहास गवाह है। (लघु कथा-संग्रह), हम सब हिन्दुस्तानी, आओ गाओ बच्चो और मुन्ने राजा आजा (बालगीत संग्रह) आदि विभिन्न विद्याओं की अनेक महत्वपूर्ण साहित्यिक कृतियॉ उनकी प्रकाशित हो चुकी है। साथ ही उन्होंने स्वतंत्रता-संग्राम और हरियाणा, अभिनंदन के स्वर तथा स्मृतिशेष-पंडित मातादीन जैसी कृतियों और अनुमेहा तथा पंजाबी संस्कृति आदि पत्रिकाओं के विशेषांको के सम्पादन के माध्यम से अपने सम्पादन के कौशल का परिचय दिया है। तो वही 'अरुबाभ' 'पक्षधर' अंशुल आवाज, नित्य हलचल आदि पत्र पत्रिकाओं का कुशल सम्पादन कर रचनात्मक पत्रकारिता को नये आयाम दिये है।

व्यवसायिक दृष्टि से डॉ. 'मानव' विगत 24 वर्षो से प्राध्यापक के रुप में शिक्षा-जगत से जुडे हुए हैं तथा वर्तमान सी.आर.एम. जाट कॉलेज, हिसार के स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग में अध्यक्ष पद पर कार्यरत है।

डॉ. मानव हरियाणवी साहित्य के अधिकारी विद्वान होने के साथ-साथ प्रथम शोधार्थी भी हैं। आपने 1987 में हरियाणा में रचित सृजनात्मक हिन्दी साहित्य का मूल्यांकन (1 नवम्बर 1966 से 1983 तक)' विषय पर पीएच.-डी. हेतु शोध-प्रबंध प्रस्तुतकर हरियाणा के समसामयिक साहित्य पर शोधकार्य का विधि वत प्रारम्भ किया। जो आज कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के एम.ए. द्वितीय वर्ष के पाठ्यक्रम में संदर्भ-ग्रंथ के रूप में शामिल किया जा चुका है। एवं हरियाणा साहित्य में ही डी.लिट. की उपाधि भी प्राप्त की। डॉ. 'मानव' हरियाणा साहित्य की सेवा करनेवालों में अद्वितीय है।

आठवें दशक में उभरे युवा कवियों में डॉ. मानव अपनी धारदार पहचान कायम कर सकने मे इस लिए समर्थ हुए हैं क्योंकि उन की कविताएं सुस्पष्ट विचारधारा के बावजूद समस्या का अति सरलीकरण नहीं करती और न ही जनवाद के नाम पर कविता की अस्मिता और उसकी शैल्पिक संरचना को क्षतिग्रस्त ही होने देती है। 'साँझी है रोशनी' संग्रह में डॉ. 'मानव' शोषित पीडित मनुष्यों के बेहद आत्मीय कवि के रुप में उभरकर सामने आये हैं। इन कविताओं के निकट जाना एक जीवित मनुष्य के निकट जाने के समान है। डॉ. मानव की कविताएं अक्सर कथा की तरह शुरु होकर तथ्यों ब्यौरों से गुजर कर किसी भीतरी तनाव-रेखा तक पाठक को ले जाती हैं।

''बोलो मेरे राम'' शीर्षक दोहा-संग्रह में डॉ. मानव के चार सौ दस दोहे संकलित हैं। दोहा जैसे छोटे से छंद में दुनियाँ-जहान की सच्चाइयों को जीवित रुप में प्रस्तुत करने के कारण उनकी समझ और प्रतिभा पर अचरज होता है। वास्तव में इस दोहा संग्रह के दोहे ज्यादा बोलते

नहीं है, शांत और शंयत मुद्रा में जो अर्थ संयोजित होता है। वह पाठक के मन में गहरा उद्वेलन पैदा करता है -

अरी व्यवस्था धन्य तू, रचती क्या क्या रास।
रावण सत्ता भोगते और राम बनवास।।[222]

सूख गई संवेदना मरी मनों की टीस।
अब कोई रोता नहीं एक मरें या बीस।।[223]

डॉ. मानव की खासियत यह है कि उन्होंने अपने दोहों में कथ्य का चुनाव अपने जाने पहचाने संदर्भो से ही किया है। इन दोहों में अपने समय का इतिहास मिलता है। डॉ. मानव दोहाकार होने के साथ-साथ एक अच्छे गज़लकार भी है। उनकी गज़लें महबूबा से गुफ्तगू न होकर ज़िंदगी की तल्खियां से गुफ्तगू करती है। उनकी गजलों को पढते हुए हम सीधे-सीधे यथार्थ से टकराते हैं, जिसे हम रोज मर्रा की जिंदगी में जीते हैं।

उठने लगा है आज फिर धुआं कोई,
यारो खोदो जल्दी से कुआं कोई।[224]
दिल में बसी बेबसी और चेहरा जर्द है।
हादसों से डर गया तू भी कैसा मर्द है।[225]

कविताओं की ही भांति लघुकथाओं में भी डॉ. मानव समकालीन यथार्थ को, जीवन की विसंगतियों और विद्रूपताओं को परतदर परत उघाडते चलते हैं। 'घर लौटते कदम' व 'इतिहास गवाह है'' उनकी प्रकाशित लघु कथा संग्रह हैं, जिनमें संकलित लघुकथाओं में अनुभवों की सघनता के साथ-साथ आसपास के परिदृश्य की विषमताओं के अनेक विषयों को डॉ. मानव ने न केवल छुआ है, बल्कि उनको एक नयी तरकीब देकर अपनी बात कही है।

समसामयिक विषयों को लेकर डॉ. मानव ने दो दोहा संग्रहों की रचना की है। क्रमशः बोलो मेरे राम, सहमी-सहमी आग इन दोहा संग्रहों में आज के समाज, राजनीति, व्यवहार आदि अनेक विषय लिए गए हैं। साथ ही सामयिक विषय-वैविध्य व व्यंग्य की गजब की भूमिका है। इससे कृतिकार के साहसी-सचेत व्यक्तित्व की प्रखर पहचान होती है। समकालीन बोध तो जैसे डॉ.मानव के दोहों का सहज मुहावरा ही बन गया है।

गाँव बने है छावनी, बस्ती-बस्ती जेल।
फिर भी होता है यहाँ, खुला मौत का खेल।।[226]

तुमने हमको क्या दिया, अरी सदी वे पीर।
छुरी, मुखौटे, कैचियां और विषैले तीर।।(227)

साथ ही 'बोलो मेरे राम'' संग्रह के दोहों में सत्ता-लोलुप राजनेताओं पर जो निशाने साधे गये हैं। वे अचूक है। गाँधीजी के महान देश में सत्ताधारियों के जो काले कारनामें उजागर हुए हैं। वे अत्यंत प्रभावशाली है -

प्रदूषित माहौल हुआ, और भ्रष्ट आचार।
बापू तेरे देश में, कैसी बही बयार।।(228)

चरखा साधे मौन है, कतली पड़ी उदास।
कर्ता सब नेता हुए, काते कौन कपास।।(229)

राजनीति ने यह किया, सबसे पहला काम।
सरे आम बेचा गया, बापू तेरा नाम।।

साज़िश और घोटाले, रोज चढें परवान।
कहने को क्या खूब है, मेरा देश महानं।।(230)

वर्तमान दूषित पर्यावरण-परिवेश, छिनार-सी सियासत और सड़ी शासन व्यवस्था के विरुद्ध दोहों द्वारा, जैसे आक्रोश की चिंगारी वातावरण में फैलाई गई है। इसीलिए दोहाकार कहता है कि-

जुडे सभी इकतार से, क्या दक्षिण क्या वाम।
नंगे सभी हमाम में, बोलो जय श्रीराम।।(231)

क्या नेता, क्या नीतियाँ, क्या सत्ता क्या तन्त्र।
सारे बनकर रह गये, लूटपाट के मन्त्र।।(232)

डॉ. मानव एक संवेदनशील कवि हैं। जो दोहों में अपनी काव्य कला को जीते हैं तो अपनी मुट्ठीभर खुशी में महत्त हैं -

मुट्ठीभर खुशियाँ मिलें, प्यार भरे दो बोल ।
और भला क्या चाहिए, जीवन तुझको बोल।।(233)

यदि 'बोलो मेरे राम' शीर्षक पर ध्यान दें तो डॉ. मानव की कविता के प्रति दृष्टि और कविता से उनकी अपेक्षाओं के नए आयाम हमारे सामने खुलते हैं। बोलो मेरे राम एक टेक के रुप में उस भारतीय आस्था को हमारे सामने रखता है जो कविता की प्रथमतः और अन्ततः लोक

मंगलकारी भूमिका का निर्वाह करती है। वास्तव में इस दोहा संग्रह के दोहे नफ़रत और संदेह के बियाबान में प्यार और विश्वास की नई जमीन तलाश करते हैं। इस संग्रह के दोहे पाठक के मन में गहरा उद्वेलन पैदा करते हैं। डॉ. मानव ने प्रायः दोहों में संकेतो से काम लिया है। निम्न दोहा में देखे कैसे उन्होंने दो पंक्तियों में गाँव के अंतः पतन के लिए जिम्मेदार ताकतो का पर्दाफास किया है -

ठेके थाने क्या खुले, बीच गाँव-देहात।
कौरव-सभा विनाश की, मानों बिछी बिसात।।(234)

सामाजिक न्याय का स्वांग भरने वाले झंडाबरदारों की असलियत को वे निम्न दोहे से व्यक्त करते हैं -

खूब किया है आपने, यह सामाजिक न्याय।
गदहे तो गन्ना चरें, भूखी मरती गाय।।(235)

दोहाकार के दोहों में प्रेम की मौजूदगी भी हमारा ध्यान आकृष्ट करती हैं। लेकिन यह प्रेम उथला नहीं है। इन दोहों में प्रेम एक जीवनानुभव और एक जीवन-मूल्य के रूप में सामने आया है-

सावन की फुहार कहूँ, या फागुन की धूप।
सबको अपना सा लगे, प्रिये तुम्हारा रुप।।(236)

इसी प्रकार डॉ. मावन का हाल ही में प्रकाशित दोहा संग्रह ''सहमी-सहमी आग'' आज के दौर में साहित्य जगत में विशेष उल्लेखनीय है। इसमें डॉ. मानव के 444 दोहे संकलित हैं। ये दोहे अपने बुनियादी चरित्र में डॉ. मानव की प्रतिबद्ध अनुभव-सम्पन्नता का नतीजा हैं। दोहाकार के दोहे हर स्तर पर व्याप्त पाखंड का भंडाफोड करके हमें झकझोर कर निंद्रा से जगाते हैं।

डॉ. मानव के दोहों में इस्तेमाल व्यंग्य दुधारी का काम करता है और पाठक को हालात की भयावहता के रु-ब-रु लाकर, उसकी चेतना में गहरी बेचैनी पैदा कर देते हैं।

अंध धर्म-उन्माद का, कौन मिटाये मर्ज।
पूछ रहे हैं अब यही मन्दिर-मस्जिद चर्च।।(237)

'सहमी-सहमी आग' में दोहाकार की एक विलक्षण जनवादी चेतना का तेवर उभरा है। जहाँ आज राजनीति अपराधीकरण का दूसरा नाम बन गई है। वहीं डॉ. मानव की निगाह इसके

असली कारणों की ओर गई है। साथ ही देश समाज की अनेक समस्याएं उनके दोहों में मिलती हैं।

राजनीति जब से बनी पद की बैध रखैल।
ग्राफ बडा अपराध का, देश बना है जेल।।(238)

पहले थे हैं आज भी, रावण-कौरव-कंस।
नाम-रूप बस भिन्न हैं, नगर एक है वंश।(239)

संकट है विश्वास का अब तो चारों ओर।
एक रूप सारे हुए, लेखक, नेता, चोर।।

देव यहाँ दो-चार हैं, दानव मगर हज़ार।
जिये कैसे फिर भला, सुध से यह संसार।।

झूठ करे अठखेलियां सत्य फिरे लाचार।
पड़ी धर्म के बेडियां, गले पाप के हार।।(240)

अर्थ-व्यवस्था देश की, चले कुढंगी चाल।
निजीकरण का है तभी, उठा तेज भूचाल।।(241)

बदल-बदल देखे सभी-नेता, दल, सरकार।
बाहर-बाहर भिन्न हैं, भीतर एकाकार।।(242)

फूट-फूट रोई धरा, सिसक-सिसक आकाश।
मनुज आज करने लगा, अपना आप विनाश।।(243)

खनिज-तेल भूगर्भ से, सारे लिए निकाल।
भूखी भू के क्रोध की अभिव्यक्ति भूचाल।।(244)

क्या से क्या जीवन हुआ, आहत और उदास।
बुझी आग तन की मगर, मिटी न मन की प्यास।।(245)

इस प्रकार मन की संवेदना के अलग-अलग द्वीपों को उकेरते हुए भी इन दोहों का एक समह पाठ बनता है। परम्परा के रचनात्मक स्वभाव के साथ जुडने का, लोक संस्कृति के आस्वाद को रेखांकित करने का और शांत तथा संपत मुद्रा में कविता को हस्तक्षेप की भूमिका में उतारने का। ये तीनों खासियतें डॉ. मानव के कवि-कर्म को एक अलग हैसियत देती हैं।

डॉ. महेश ''दिवाकर''

सृजन, सम्पादन और प्रकाशन तीनों क्षेत्रों में समान रुप से सक्रिय डॉ. महेश दिवाकर वर्तमान हिन्दी जगत में सुपरिचित हैं। 25 जनवरी, सन 1952 ई. को मुरादाबाद (उ.प्र.) के दिल्ली मार्ग स्थित ग्राम महलकपुर में जन्में डॉ. दिवाकर के पास अध्ययन और अनुभव की विशाल संपदा सुसंचित है। अध्ययन के क्षेत्र में उन्होने 'डी.लिट.' की उपाधि अर्जित की है तथा विगत तीन दशकों में अनेक महत्वपूर्ण सामाजिक-साहित्यिक संगठनों में कार्य करते हुए अनुभव अर्जित किया है। वर्तमान में वे जी.एस.एच. (पी.जी.) कॉलेज चाँदपुर बिजनौर के हिन्दी विभाग में अध्यक्ष, रीडर और शोध निर्देशक हैं। उन्हें देश विदेश की अनेक हिन्दी सेवी संस्थाओं ने विभिन्न अलंकरणो और उपाधियों से सम्मानित किया है।

डॉ. महेश दिवाकर का मौलिक सृजन कविता मुक्तक, गीत, दोहा, कहानी, निबन्ध, शोध, समीक्षा, पत्रकारिता, अनुवाद, सम्पादन आदि विविध विद्याओं के व्यापक फलक पर प्रस्तुत हुआ है।

डॉ. दिवाकर के शोध ग्रंथों के अतिरिक्त 'वीर बाला कुंवर अजबेद पंवार' (खण्ड काव्य), पथ की अनुभूतियाँ (दोहा-मुक्तक), अन्याय के विरुद्ध (कविता संग्रह), काल भेद (कविता-संग्रह), भावना का मंदिर (गोति संग्रह), महासाध्वी अपाला (खण्ड काव्य), आस्था के फूल (गीत-संग्रह), विविधा (दोहा-मुक्तक सग्रह) और युवको! सोचो (दोहा संग्रह), और मेरी प्रिय कहानियां आदि ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं।

साहित्य की विविध विधाओं पर उनकी लेखनी सृजनरत है। उनके काव्य में व्यापक सम्भावनाएं दिखाई देतीं हैं। डॉ. दिवाकर बहुमुखी काव्य प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार हैं। वे अपने प्राध्यापकीय कर्म के प्रति सचेत रहते हैं। उन्हें देखकर ऐसा नहीं लगता कि एक प्राध्यापक में एक असाधारण रचनाकार भी छुपा है। वे मिलनसार एवं निश्छल हैं और एक अच्छे इन्सान हैं । डॉ. दिवाकर हिन्दी साहित्य के उन श्रेष्ठ सशक्त हस्ताक्षरों में हैं जिसने कभी लिखने के लिये नहीं लिखा। यही वजह है कि उनकी प्रत्येक रचना पाठकों को बेहद प्रभावित करती है। अपने जीवन के गहरे अनुभव, अध्ययन, मनन, चिंतन की मौलिकता व सहजता से पूर्ण उनकी काव्य रचनाएं सचमुच कविता हैं। शिष्ट भाषा-शैली या अलंकारों का मात्र चमत्कार नहीं जो प्रायः आज अनेक विद्वानो ने अपना रखी है। वर्तमान समय, हालातों व व्यवस्था पर जहाँ उन्हें दुःख है। अन्याय, शोषण, स्वार्थमय राजनीति आदि से जहाँ उनका मन पीड़ित है तो वहीं इस दूषित प्रदूषण के काले बादलों के हटने के प्रति आश्वस्त भी है। डॉ. दिवाकर के सृजन में आस्था व विश्वास को भी देखा जाता है।

डॉ. दिवाकर उन रचनाकारों में से हैं जिनका व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों ही समान रुप से प्रभावित करते हैं। आपके द्वारा लिखित और संपादित पुस्तकों की संख्या लगभग तीन दर्जन से अधिक है।

युवको! सोचो! डॉ. दिवाकर का दोहा संग्रह है। जो आज की भटकती युवा शक्ति को इकट्ठी कर आज का परिवेश सुधारने का कार्य करती है। दोहाकार की इस रचना संग्रह में आम आदमी की कसक है। उसका दर्द है, छटपटाहट है, लेकिन कुंठा निराशा पालयन कहीं नहीं। प्रस्तुत दोहा संग्रह में सादी भाषा सरलता और सहजता के दर्शन होते हैं। कवि, साहित्यकार डॉ. महेश दिवाकर के समाज व देश के प्रतिभावों का वर्णन इन दोहों में हुआ है -

जीवन-हीरा का दिया, सहज भाव उपहार।
यार! कभी भूलूं नहीं, तेरा मधुमय प्यार।।(246)

माधव! जब तू चाहता, सुख-दुख बढता जाय।
तेरी कृपा के बिना कुछ भी मिलता नाय।।(247)

मन में दृढ विश्वास हो, और आस्था संग।
देर भले ही कुछ लगे, तू दिखलाता रंग।।(248)

हाय! आचरण राम का, बिल्कुल असफल आज।
कूटनीति से कृष्ण की, सुलझें अब तो काज।।(249)

युवको! सोचो! दोहा संग्रह में दोहों का संग्रह, विभिन्न अलग-अलग विषयों को केन्द्र में रखकर किया गया है। जिसमें लगभग तैंतीस विषयों को डॉ. दिवाकर ने उद्घाटित किया है। मातृभूमि के प्रति भाव प्रकट करते हुए रचनाकार लिखता है कि-

आते-जाते ही रहे, संवत्सर चुपचाप।
भारत भूमि पर इसलिए, रहे फूलते पाप ।।(250)

आज देश की अस्मिता है अंधों के हाथ।
गूंगों बहरों का मिला सहज रुप में साथ।।(251)

डॉ. दिवाकर का वाह्यरुप उनके उदार व्यवहार और संवेदनशील हृदय के अनुरुप है। वे स्वाभिमानी, निर्भीक एवं गम्भीर व्यक्तित्व के धनी हैं। पाकिस्तान के प्रति आपके वचिार निर्भीकता की ओर इशारा करते हैं। रचनाकार सत्य को किसी लीप पोत के बिना सहज ही अपनी बात करते हुए कहता हैं -

बिना बज़ह करता रहा, तू पैदा दूर्घात।
हमने तो समझा अनुज, मार रहा है लात॥(252)

सत्ता के मद चूर है, अरे पाक! नृशंस।
महा शक्तियाँ साथ थीं फिर भी बचा न कंस।(253)

आज की बदलती हुई मावनता को देखकर कवि का मन चिंतित है। वह पुकार उठता है कि -

लुप्त सभ्यता हो रही, हुआ आदमी मौन।
आतंकित माहौल है, इसे बचाये कौन॥(254)

यह कैसी पछुआ चली, सूखा दरिया-सोच।
मनुज-किनारा हो गया, देखो! कितना पोच॥(255)

डॉ. दिवाकर अपनी मातृभाषा पर आते हुए संकट को देखकर व्यग्र हैं। वे हिन्दी की मान मर्यादा को लेकर अपने चिंतित भावों को समाज के सामने रखते हैं और उसे समझाते हुए सही मार्ग दिखाते हैं -

कहाँ यार ! गुम हो गयी, वह हिंदी की तान।
भूले अपने राग को, सुन अंग्रेजी गान॥(256)

रोज़ निखरती जा रही, भारत की तस्वीर।
पर भाषाई द्रष्टि से, उलझ गयी तकदीर॥(257)

इस प्रकार डॉ. महेश दिवाकर एक सच्चे अर्थ में अपनी रचनाओं के माध्यम से हिन्दी साहित्य की श्री वृद्धि कर रहे हैं।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में डॉ. उर्मिलेश साहित्य जगत के आकाश का वह सितारा है जिसने सूर्य पर सात सौ दोहे रचने का सफल कार्य किया है। बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न रचनाकार होने के साथ डॉ. उर्मिलेश एक श्रेष्ठ व्यक्तित्व प्रधान नागरिक भी हैं। उन्होंने कम उम्र में ही कई सफलताओं को प्राप्त किया है। वे कवि सम्मेलनों में सर्वाधिक पसंद किये जाने वाले और व्यस्ततम कवि हैं।

डॉ. उर्मिलेश

6 जुलाई सन 1951 को,इस्लाम नगर बदायूं उ.प्र अपने ननिहाल मे जन्में डॉ. उर्मिलेश

के पास अध्ययन और अनुभव की विशाल संपदा संचित है। अध्ययन के क्षेत्र में आपने एम.ए., पीएच.डी. (हिन्दी) की उपाधि प्राप्त की है। हिन्दी भाषा में आपकी विशेष रुप से रुचि रही है। सीधे साधे व्यक्तित्व के धनी डॉ. उर्मिलेश की लेखनी हिन्दी साहित्याकास में सितारे के समान चमकती है। उन्होंने विशेषतः गज़ल विद्या पर अपनी सहज लेखनी की कलम चलाई है। उनका गज़ल संग्रह ''धुआं चीरते हुए'' अत्यधिक प्रसिद्ध हुआ है। शांत नदी बहती वहती है। (गीत संग्रह) चार काव्य संग्रहों का भी प्रकाशन हुआ है। डॉ. उर्मिलेश विशेष रुप से अनेक पत्र पत्रिकाओं में अपना स्थान रखते हैं। कविता वाचन, कवि सम्मेलन आपके बिना अधूरे लगते हैं।

आज दोहा जैसे प्राचीन छन्द को लेकर डॉ. उर्मिलेश ने अपने भावों की अभिव्यक्ति की है। जो साहित्य में अपना विशेष स्थान रखती है। आपने गीत, नवगीत, वीर, हास्य और श्रृंगार भावना प्रधान कविताएं गज़लें समीक्षा, शोध निर्देशन आदि सभी क्षेत्रों में अपनी एक विशिष्ट पहचान बनायी है। उनके दोहों में नयी ओजस्विता, प्रखरता और दीप्ति को देखा जा सकता है, मंच से संपृक्त होने के कारण वे अपने कथ्य को अधिक से अधिक बोधगम्य दूर मारक और प्रभविष्णु बनाने में पूर्तः सफल हुए हैं। व्यंग्य की पैनी तलवार से वार करना आपके कवित्वपन में सहज ही देखा जा सकता है। जब कवि समाज से यह प्रश्न करते हैं कि हनी मनी स्वीटी, सनी, डाली और प्रिंस बच्चों के नाम हैं या कुत्तो के तो उससे आज का पाश्चात्य-सभ्यता परस्त नवधनाढ्य नंगा होने लगता है। कवि को यह विषमता देखकर आक्रोश होता है कि नगर पिता तो नगर वधू की गोद में सोये हैं और भूखे प्यासे नागरिक उदास भटक रहे हैं -

हैं उदास चौपाइयाँ, दोहे हैं हैरान।
फिल्मी धुन में हो रहा, है मानस का गान।।(258)

भूखे प्यासे नागरिक, फिरते रहे उदास।
नगर पिता लेटे रहे, नगर-वधू के पास।।(259)

आतिशबाजी गुम हुई बैण्ड हुए ना पैद।
बारातों के रतजगे, होटल मे हैं कैद।।(260)

कोलतार, सीमेण्ट से लथपथ और उदास।
महानगर की भीड़ में, मिला हमें मधुमास।।(261)

डॉ. उर्मिलेश आज की सामाजिक सच्चाई को सामने रखते हुए कहते हैं कि जहाँ अंधी-बहरी टीम का कप्तान ही लंगडा हो वह खेल कैसे जीता जा सकता है। साथ ही कवि को यह

देखकर बड़ा ही कष्ट होता है कि मंचों पर कवियों के लिफाफे जितने जितने भारी होते जा रहे हैं, उनकी कविता उतनी ही हल्की होती जा रही है । डॉ. उर्मिलेश एक श्रेष्ठ दोहाकार होने के साथ-साथ एक अच्छे गज़लकार भी हैं। अतः उनके दोहों में गज़लगो शायर की छाप भी देखी जाती है जैसे -

मै तुझसे नाराज हूँ और तू मुझसे नाराज।

शायद यह भी प्यार करने का एक अंदाज हो। इस प्रकार डॉ. उर्मिलेश दोहालेखन में भिन्न-भिन्न विम्बों को भी अपना कर अपनी भावाभिव्यक्ति करते हैं -

कोई मन के पास है, कोई तन के पास।
राधा हो या रुक्मिणी, दोनों खड़ी उदास।।(262)

कभी दिया-बाती बनीं, कभी विहँसती भोर।
घर खुद ही सजने लगा, देख तुम्हारी ओर।।(263)

पीला कुर्ता रेशमी, पहन हरी सलवार।
पंचरंग चूनर ओढकर, मधु ऋतु आयी द्वार।।(264)

एक रात बस चाँद को, लिया रात ने चूम।
वही चिह्न ले आज कत, चाँद रहा है धूम।।(265)

दोहा के बारे में दोहाकार उर्मिलेश कहते हैं कि - विषय-वैविध्य तथा कहन के नये नये तेवरों से उद्घाटित कर दोहा को आज गज़ल के समकक्ष ही नहीं बल्कि उससे और ऊँचाई पर प्रतिष्ठित कर दिया है। नयी कविता से ऊबे पाठक कवि सम्मेलनों से निराश श्रोताओं को दोहा छंद ने नयी स्फूर्ति और उत्साह प्रदान किया है।

हिन्दी साहित्य में 'दोहा' को लेकर काव्य रचनाकारों में फिर से नयी जागृति आयी है। अतः इस छंद को पुर्नप्रतिष्ठा मिली है और अनेक रचनाकार दोहे लिख रहे हैं। विगत मास ही उनका असामयिक निधन हो गया।

हरेराम 'समीप'

गज़लों तथा कहानियों में अपने भाव बिम्बों, कथ्य और शिल्प के अनूठेपन के लिए प्रतिष्ठित रचनाकार श्री ''हरेराम समीप'' के दोहे उनकी सृजन धर्मिता के नये आयाम का उद्घाटन करती हैं। आधुनिक हिन्दी साहित्य में विशेष प्रतिष्ठा पात्र श्री समीप जी 13 अगस्त सन 1951 में म.प्र.

के जिला नरसिंहपुर में जन्मे, श्री समीप जी का बचपन विद्वानों के साथ ही बीता। बचपन से ही पठन पाठन का व विषय की गम्भीरता पर सोचना रहा। काग़जी शिक्षा के रुप में उन्होंने स्नातक डिग्री तत्कालीन प्राप्त की। परन्तु साहित्य के प्रति विशेष आदर होने से उन्होंने जीवन में कई पठन पाठन व लेखन किये हैं। साथ ही पत्र पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया। संप्रति के रुप में आज वे जवाहरलाल नेहरु स्मारक निधि तीनमूर्ति भवन, नई दिल्ली में लेखाधिकारी पद पर कार्यरत हैं।

उनकी लेखनी समय की धार को देखते हुए चलती ही रहती है। विशेषतः समीपजी ने हिन्दी साहित्य को गज़लो की अनेक नेमें दी है। इनके गज़ल संग्रहों में -

हवा से भीगते हुए (गज़लें), आँधियों के दौर में (गज़लें) जो हरियाणा साहित्य अकादमी से पुरस्कृत हुई हैं । कुछ तो बोलो (गज़ल संग्रह), गज़लो के कैसेट व चर्चित धारावाहिकों के लिए कथा व गीत का लेखन आदि श्री समीप जी के कृतित्व से धन्य हुए हैं।

श्री समीप जी कहन के अनूठेपन, भाव-व्यंजना की मौलिकता से भरी ताज़गी तथा युगीन वैचारिकता के तेवरों का बांकपन उनकी अपनी खास विशेषताएं हैं। जिसके कारण श्री समीप गज़लों और कहानियों के लेखन के क्षेत्र में अग्रणी हस्ताक्षर के रुप में प्रतिष्ठित हुए हैं।

श्री समीप जी ने आज अपनी लेखनी का रुख दोहा जैसे लघुकाय लेकिन विराट भाव-बोध के लिए जाहिर छन्द की ओर मोड़ा है। उनके दोहे जिस भोलेपन और ताजगी भरे अनुभवों से समन्वित अभिव्यक्ति को संप्रेषण देते हैं, वह निश्चित ही एक अछूती भावुकता की ही धरोहर है।

जो जैसा जब भी मिला, लिया उसी को संग।
यारो मेरे प्यार का पानी जैसा रंग।।

कवि 'समीप' का 'जैसे' नामक दोहा संग्रह कमाल की सादगी और गजब का भाव-विम्ब विधान को संजोये हुए है । ऐसे अनूठे दोहों का यह संकलन कवि 'समीप' की रचना धर्मिता का बेजोड़ उदाहरण है। कवि के युग के विरोधाभासों से जूझने के तेवर बाँके भी हैं और साहस से भरे हुए भी वे बुलंदी से आवाज देते हुए कहते हैं कि -

मुझको थोडी आग दे, तनिक हवा का साथ।
अँधियारे से मैं करुं, खुद ही दो दो हाथ।।[267]

कवि 'समीप' की लेखनी निराली सृजनशीलता का आह्वान है। हमें आशा है कि नाम

छोटे और दर्शन बडे वाली कहावत को इस संग्रह के दोहे चरितार्थ करेंगे। एक दोहाकार के रुप में 'समीप' जी श्रेष्ठ नज़र आते है। सामान्यतः एक रचनाकार की प्रारंभिक अभिव्यक्ति में अर्थ इकहरापन देखा जाता है। किन्तु 'समीप' के दोहे इस दोष से लगभग मुक्त ही हैं। कविता चाहे नवगीत के रुप में प्रस्तुत की गयी हो अथवा गज़ल या दोहे के रुप में, पर उसे सर्वसंवेद्य बनाने के लिए ऐसी भाषा की अपेक्षा होती है जिससे पाठक या श्रोता अपने अभीष्ट अर्थका सन्धान कर सके जैसे -

यूं तो मेरे पास हैं, कितनें ही औजार।
मेरी मुश्किल है यही, कैसे करुं प्रहार ।।(268)

सीधा अर्थ यही है कि उपकरणों का भण्डार तो है पर प्रयोग की योग्यता नहीं। इसका अन्य एक अर्थ निकालते हुए कवि यहाँ यह भी कहता है कि जीवन में ऐसी परिस्थिति भी आती है जब व्यक्ति न चाह कर भी आरोप अपने ऊपर झेल लेता है। ऐसे ही भाव का यह दोहा द्रष्टव्य है -

यहाँ वक्त लेकर खडा, प्रक्षेपात्र अचूक।
और हमारेपास है, जंग लगी बन्दूक ।।(269)

कहने का तात्पर्य है कि साधन और साध्य के मध्य समय सापेक्ष औचित्य होना आवश्यक है। पुराने विचारों को माध्यम बनाकर नये युग के साथ नही चला जा सकता है। आज जो अधिक समर्थ है वह अल्प समर्थकतावाले को नष्ट कर देना चाहता है। 'समीप' जी कहते हैं कि -

बस्ती में दो वर्ग हैं, जालिम औं मज़लूम।
इससे ज्यादा दोस्तो, मुझे नही मालूम ।।(270)

आज का मानव, आजीवन संघर्ष के नाम पर उसे हताशा, अवसाद, पराजय, विफलता और अकेलापन के अलावा मिलता ही क्या है। अकेले व्यक्ति की इस छटपटाहट को समीप जी ने अपने दोहों में व्यक्त किया है -

रोज खींचता मैं रहा बालू बीच लकीर।
हवा मिटाती ही रही आशा की तस्वीर ।।(271)

खाली माचिस जोड़कर एक बनायी रेल।
बच्चे-सा हर रोज़ मैं इसको रहा धकेल ।।(272)

सूरज सिर पर तप रहा, धरती बनी अँगार।
कहाँ रुकूँ इस राह में, पेंड न छायादार ।(273)

कवि समीप जी के दोहों में मावन जीवन यापन की गहरी सच्चाई का प्रतिविम्ब देखा जा सकता है। आज जो रक्षक हैं वही भक्षक हैं। किसी पर भी भरोसा नहीं किया जा सकता। ऐसे ही भावों को व्यंग्य के माध्यम से कवि कहता है -

सांस उखड़ती जा रही, रोगी चीखे हाय।
और डाक्टर पी रहा, चुस्की चुस्की चाय।।(274)

बचा रहा हूँ इस तरह अपना आज वजूद।
जैसे बच्चा खा रहा चोरी का अमरूद।।(275)

रचनाकार श्री हरेराम 'समीप' की यह विडम्बना है कि उन्हे एक कवि का, एक इंसान का धडकता हुआ संवेदनशील हृदय मिला और साथ ही सोचनेवाला जेहन भी परन्तु इस बीच समय ही मांग है कि वह अपने हृदय पर पत्थर रख ले और जेहन को सात तालों के भीतर बन्द कर ले। परन्तु समीप जी के व्यक्तित्व ने रुकना नहीं सीखा, झुकना नहीं सीखा। वे हर हाल में जूझते रहे। संकटों पर चलते हुए यह सिद्ध किया कि घोर अंधकार के पीछे ही सुनहरी रोशनी वाला सूरज चमकता है। समीप जी के दोहों में ऐसे ही आशावादी स्वर भी यथास्थान मुखर होते हैं जो उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश भी डालते हैं।

तट पर आकर सोचता, यह मैं बारम्बार।
जाने कैसे हो गया मुझसे सागर पार।।(276)

अपनी छतरी साथ रख घर से चलते वक्त।
मरुथल में मिलते नहीं छाया दार दरख्त।(277)

दुःख पर्वत-सा है मगर करना होगा दूर।
काम असंभव तो नहीं, लेकिन कठिन ज़रुर।(278)

श्री राजेन्द्र वर्मा

''श्री राजेन्द्र वर्मा'' बहु आयामी रचनाकार हैं, पत्र पत्रिकाओं में उनकी रचनाएं अक्सर पढ़ने को मिलती रहती हैं। गीत गजल, हाइकु, व्यंग्य, लघुकथा के अतिरिक्त उन्होने दोहा लेखन में भी अपनी पहचान बनायी है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में विशेष रूप से प्रतिष्ठित श्री वर्मा जी का जन्म 8 मार्च सन 1955 को बाराबंकी (उ.प्र.) में हुआ। पठन-पाठन एवं लेखन का शौक बचपन से ही रहा। आधुनिक

हिन्दी साहित्य को वर्मा जी ने अनेक लेखन की नेमे दी हैं। मुझे ईमानदार मत कहो (व्यंग्य), नव सृजन के स्वर (गीत), अन्तर सन्धि (गीत), अभिमन्यु की जीत (लघुकथाएँ), और चुटकी भर चाँदनी (दोहा संग्रह) आदि प्रकाशित ग्रंथ उल्लेखनीय हैं। जिनके द्वारा वर्मा जी की श्रेष्ठ लेखनी के तेवर देखे जा सकते हैं। सम्पादन के क्षेत्र में भी श्री वर्मा जी ने गीत-शती, गीत-गुंजन, अविरत मंथन आदि का सम्पादन भी किया। श्रेष्ठ लेखनी के लिए श्री वर्मा जी को अनेक पुरस्कारों से सम्मानित भी किया गया है।

आज की आपाधापी में फँसे काव्य रसियों के लिए सम्भव कहाँ है कि वो लम्बी कविताओं को पढ़े उसके पास समय नहीं है। अतः समय की नज़ाकत को समझते हुए श्री वर्मा जी ने भी दोहा संग्रह (चुटकी भर चाँदनी) की रचना की जिससे उनके कृतित्व में चार चाँद और लग गये। श्री वर्मा जी के प्रस्तुत काव्य-संग्रह (चुटकी भर चाँदनी) में कुल 511 दोहे संग्रहित हैं। जिसमें उनकी व्यापक दृष्टि, चिन्तन का विस्तृत क्षेत्र युग एवं परिवेश के प्रति प्रतिक्रिया प्रभावी और त्वरित है।

श्री राजेन्द्र वर्मा के दोहों में विषय की पर्याप्त विविधता है। उनकी दृष्टि व्यष्टि और समष्टि दोनों पर रही है। अध्यात्म परक दोहों में पंच तत्व अद्वैतवाद, मोक्ष आदि का निरुपण सहजता से हुआ है -

चक्कर खाती जिन्दगी, ज्यों कुम्हार का चाक।
गीली मिट्टी घूम-फिर, हो जाती है खाक॥[279]

आज धर्म, समाज, शिक्षा, राजनीति आदि हर क्षेत्र में अवमूल्यन बढ़ा है। अनैतिकता विषमता, भ्रष्टाचार, प्रदूषण का बोलवाला है। छल-प्रपंच झूठ और स्वार्थ हावी है -

नीलामी पर चढ़ गये, सत्य और परमार्थ।
बोल रहे हैं बोलियाँ झूठ और निहितार्थ ॥[280]

आज की गरीब विडम्बना पर लेखनी की कटार चलाते हुए कवि दोहाकार कहता है कि किस तरह की विसंगति है। पत्थर के देवता को तो भोग लगाया जाता है पर भूखे पेट को रोटी नहीं मिलती -

पत्थर केसब देवता, पत्थर के ही लोग।
दुखियाँ को रोटी नहीं, ठाकुर जी को भोग॥

समाज में व्याप्त अनीति को लेकर कोई रचनाकार अपनी लेखनी रोक नहीं सकता। राजेन्द्र

वर्मा भी उसके अपवाद नहीं। उन्होंने लोकतंत्र की विडम्बना, नेताओं की अवसरवादिता, जनता-जनार्दन की बदहाली आदि पर खुलकर लिखा है। सत्ता-लोलुपता आज की राजनीति का मुख्य आधार है। कुर्सी पाने के लिए सबकुछ सम्भव है -

कुर्सी की खातिर गया, मतभेदों को भूल।
कल तक जो प्रतिकूल था, आज हुआ अनुकूल॥[282]

वर्मा जी के दोहों में दिवाली-होली आदि पर्वो के साथ-साथ 'बारहमासा' तथा ऋतु सम्बंधी दोहों की रचना भी की है। ग्रीष्म ऋतु का भाव पूर्ण दोहा द्रष्टव्य है -

गर्मी की ऋतु आ गयी, अकुलाया संसार
'दुर्वासा' सूरज हुआ, अर्ध्य हुए बेकार॥[283]

दोहों में रिस्तों के विविध रंग भी प्रकट हुए हैं। आज रिस्ते जहाँ पक्षाघात से ग्रसित है। रातदिन सन्नाटों के केचुल छुटते रहते हैं। वहीं वे मार्मिकता पूर्वक मन को छूते भी है। एक साथ दो-दो विभिन्न अनुभूतियों को संजोये हुए निम्न दोहा द्रष्टव्य है -

गौने की तिथि आ रही, जैसे-जैसे पास।
बिटिया के मन गुदगुदी, अम्मा हुई उदास॥

श्री वर्मा जी के कथन में जो बाँकपन है। वही बाँकपन उनके दोहों को सार्थकता प्रदान करता है। उनके दोहों की भाषा सरल व मुहावरे दार है। एक दोहे में तेते पाँव पसारिए जेती लम्बी सौर की कहावत बड़ी खूबी के साथ व्यंजित हुई है। मन की इच्छाएँ और महत्वाकांक्षाएँ स्वाभाविक है। लेकिन उनके लिए सामर्थ्य भी तो जरुरी है -

पगले मन तू ही बता कहा चलू किस ढाँव।
गज भर की चादर लिए, मीटर भर के पाँव॥[285]

कवि की दृष्टि में सम्पूर्ण मानव जाति के लिए एक ही कानून होना चाहिए। न्याय व्यवस्था के भ्रष्ट हो जाने के कारण आज अपराधी को दण्ड नहीं मिल पा रहा है और निरपराध दण्डित हो रहे हैं -

सभी व्यक्तियों में बहे, एक रंग का खून।
किंतु धर्म के नाम पर, अलग-अलग कानून॥[286]

बाँधे पट्टी आँख पर लिए तराजू हाथ।
बैठी, प्रतिमा न्याय की, अन्यायी के साथ ॥(287)

कवि को अपने देश से प्रगाढ़ प्रेम है। उस पर आत्मोसर्ग करने वालों को यह देवताओं जैसा सम्मान का पात्र मानता है। चैत में बौराए आम्रवृक्ष, वैशाख में गेहूं के रुप मे स्वर्ण की आमद, अषाढ से भादों तक अपने स्नेह से धरती को तृप्त करती कजरारी मेघावलियों और ऋतुरस वसंत के अलौकि उत्कर्ष से कवि को आत्मीयता है। राजेन्द्र वर्मा जी के दोहों में जीव के सत्य विद्यान हैं उसमें सर्व ग्रासी पतन से उभारने की ललक है -

क्या मेरा, क्या आपका, जग अपना परिवार।
अस्तु, परस्पर हम करें, भेद रहित व्यवहार ॥(288)

भाषा की मर्यादा के मामले में भी राजेन्द्र वर्मा सजग दिखायी देते हैं। सभी दोहों की रचना उन्होंने खड़ी बोली में की है। परन्तु यत्र तत्र वे बोली के कतिपय शब्दों की स्थापना से भी नहीं चूके हैं। जो निम्न दोहें में द्रष्टव्य है -

मेघ दूत आये मगर, बनकर पीर फकीर।
लाई पुरवाई मुई, पोर-पोर में पीर ॥(289)

कम्बल अपना आस्मां और जमीं कालीन।
पूस-माघ छीने उन्हे, दिखा शीत-संगीन ॥

श्री वर्मा जी के दोहों में उनके व्यक्तित्व का प्रतिबिम्ब झलकता हुआ दिखायी देता है। उनके जीवन के विभिन्न अनुभव चुटकी भर चाँदनी में सिमट आये हैं। प्रस्तुत संकलन मे वर्मा जी अनावश्यक औपदेशिकता या सपाट बयानी से बचते हुए विषय वैविध्य को पकडकर रखा है। जिससे पाठक कथ्य से जल्दी ऊबे नहीं। लेखनी की ऐसी छटा श्री वर्मा जी के दोहों में देखी जा सकती है-

बिना बिचारे बढ़ गया, यदि मैत्री का हाथ।
देना पडता ''कर्ण'' को दुर्योधन का साथ ॥(290)
अपनों से तो जीत भी लगती जैसे हार।
जीत लिया खुद को अगर, जीत लिया संसार ॥(291)

बँटवारे की नीति ने दिया मंत्र-साम्राज्य।
पहले बाँटा देश को बाँट रही अब राज्य ॥(292)

गंगा मैली हो गई धोते धोते मैल।
रेती पर प्यासा खडा, शंकर जी का बैल॥

हमको तो मालुम था क्या है बन्दर बाँट।
किन्तु सुलझवाते रहे हम नेता से गाँठ॥[293]

आँगन में साहित्य के उगने लगे बबूल।
शूल चढ रहे शीश पर, पाँव पड रहे फूल॥[294]

सोयी है संवेदना, भाव हुए निष्प्राण।
आर्यश्रेष्ठ ही चाहते अब रावण से त्राण॥[295]

कुछ बाहर की आग है, कुछ भीतर की आग।
जलता है तन-मन मगर, जलता नहीं कुमाग॥[296]

झींगुर-मच्छर क्वांर भर, रहे बजाते गाल।
पितर पक्ष में हो गये, पंडे माला माल॥[297]

उद्बोधन, संवेदना व्यंग्य नीति शृंगार।
विविध उर्मियों को किया दोहे ने साकार॥[298]

आचार्य रामेश्वर 'हरिद'

आचार्य रामेश्वर हरिद का नाम हिन्दी साहित्य में किसी परिचय का मोहताज़ नहीं है। जहाँ आपके गीत, गज़ल, दोहे समीक्षायें पत्र-पत्रिकाओं को गौरवान्वित करते रहे हैं। वहीं उनकी गूँज आकाशवाणी के अनेक क्षेत्रों से निरन्तर सुनाई देती रही है। लेखनी व समीक्षा के क्षेत्र में जाने माने श्री रामेश्वर हरिद का जन्म म.प्र. के पो. बिनेका, खण्डवा में 15 जून सन 1944 में हुआ पठन, पाठन में विशेष रुचि रखने के कारण जीवन में कई अनुभवों को आपने पुस्तकों के ही माध्यम से प्राप्त किया। झुट पुट अनेक रचनाएँ लिखते रहे। कारण कि लेखनी में अपना योग दान देकर समाज के लिए कुछ करने की चाह उनके मन में शुरु से ही रही है। अतः वे अपना कवि कर्म समय समय पर निभाते रहे हैं। देश की स्थिति राजनीति, समाज आदि पर निरन्तर लिखते रहे हैं। परिणाम स्वरुप उनकी रचनाएं देश की अनेक पत्र, पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। ये प्रकाशन इतना अधिक है। कि देश में साहित्य से जुडा प्रत्येक व्यक्ति उन्हे आधुनिक काव्य सृजन के हस्ताक्षर के रुप में जानता ही है।

अपनी बेहतर लेखनी के लिए आपको अनेक सम्मान भी प्राप्त हुए हैं। भारत संचार निगम में उच्च श्रेणी दूर संकेतक के पद पर कार्यरत् होने के बावजूद भी साहित्य साधना में निरन्तर अपना सहयोग देना आपके श्रेष्ठ व उज्वल व्यक्तित्व का उद्घोष करता है। देश की अधिकाधिक पत्र, पत्रिकाओं के माध्यम से आपके भाव, विचार, अभिव्यक्ति का वहन होता है।

आपकी लेखनी ने दोहा विद्या को भी अपनाया और 'सारांश' दोहा संग्रह के रुप में संग्रहित होकर सामने आ गयी। सारांश में आपके 615 सार गर्भित दोहे संग्रहित हैं। जिसका प्रत्येक दोहा मानो सुगन्ध की तरह हृदय को एक विशिष्ट सुख की अनुभूति कराता है। प्यार, तकरार, मिलन, वियोग, राजनीति, गरीबी, देश, मौसम आदि का हाल इन दोहों से ज्ञात होता है। मन की बात करते हुए श्री हरिद कहते हैं कि -

या यह सच्चा ज्ञान है या स्वारथ का जोर।
नैन द्रवित होते नहीं, अन्तस हुए कठोर।।[299]

यदि हममें कुछ आग है तो बन जायें चिराग।
तमस् नष्ट हो जायेगा, गूँजेगा नव राग।।[300]

आज की भागती ज़िन्दगी रिस्तों को निभाने में बहुत पिछड़ गयी है। पहले जैसी अब रिस्तों में ताजगी नहीं है -

पहले जैसी अब नही, रिश्तों में है गंध।
और न दीखें आँख में, पीर भरे अनुबंध।।[301]

करो गर्व उस पेड़ पर, जो विशाल, समृद्ध।
पर मत भूलो मूल को, ज्यों 'कुटुम्बकम' वृद्ध।।[302]

संस्कृति की ह्रास होते देख कवि कहते हैं -

सीचें जाते कैक्टस हैं गुलाब मोहताज।
अपने वाद्य उपेक्षित, छिडे विदेशी साज़।।[303]

नई रौशनी की चमक बढा दृष्टि का घोष।
अच्छाई की भर्त्सना बुरे पाँय जय घोष।।[304]

मुस्कानों पर है ग्रहण, खुशियों पर पैबन्द।
प्रेम-राग विस्मृत हुए, गडबड़ होते छन्द।।[305]

आज की सामाजिक बिडम्बना पर इंगित करते हुए कवि कहता है कि -

कस्मे-वादे छल हुये झूठ बनी है चाल।
सभी जुर्म हैं हो रहे, पद औं धन की ढाल॥

जल है फिर भी प्यास है, धन से ना संतोष।
सज्जन को मिलती सजा, अपराधी निर्दोश॥

रातों से सपने सजे, सुबह हुये वीरान।
गोरखधंधे फिर वही, फिर रोटी का ध्यान॥

समय-शिला पर उभरते, अजब-अजब आलेख।
जो न कभी देखा गया, इस युग में वह देख॥

हर मानव लगता यहाँ, अपने में दूकान।
बिना लाभ सोचे कभी, करे दया ना दान॥

सात वचन सब भूल कर पति-पत्नी स्वच्छन्द।
क्लब, डिस्को में नाचते, ले दूषित आनन्द॥

पत्थर पर पानी पड़े, कभी नर्म न होय।
निशदिन सींचो ज्ञान, जल, मूढ़ न ज्ञानी होय॥

पौध रोपने के समय रखना होगा ध्यान।
अन्तर फूल-बबूल में पहले से लो जान॥

खर्च नागरिकों पर पडा, जब-जब हुए चुनाव।
चले गये बहुरुपिये, देकर गहरे घाव॥

सकल विचारों के लिए पुस्तक एक प्रमाण।
बुराइयों की भर्त्सना, अभिव्यक्ति के बाण॥

डॉ. विष्णु 'विराट'

7 जनवरी सन 1946 को उत्तर प्रदेश की पावन भूमि मथुरा में श्री बैजनाथ चतुर्वेदी के घर जन्मे डॉ. विष्णु विराट चतुर्वेदी अध्ययन व अनुभव की विराट संपदा रखनेवाले मनीषी विद्वान हैं। अध्ययन के क्षेत्र में आपने पीएच.डी. साहित्याचार्य, वेदान्ताचार्य की उपाधियाँ अर्जित की हैं तथा

वगित तीन दसकों से सामाजिक साहित्यिक संगठनों में जुडकर विशेष अनुभव अर्जित किया है। वर्तमान में आज महाराजा सयाजीराव विश्व विद्यालय, बड़ौदा के हिन्दी विभाग में अध्यक्ष और शोध निर्देशक व मार्गदर्शक हैं।

आपने अनेक शैक्षणिक/साहित्यिक संस्थानों की या तो स्थापना की है या उससे सम्बद्ध हैं। गुजरात हिन्दी प्रचारिणी सभा के निदेशक होने के साथ-साथ आप अखिल भारतीय स्वर साहित्य संगम, दिल्ली के अध्यक्ष भी हैं। साथ ही भव्य भारती, पुष्टि पथ, पुष्टि प्रज्ञा जैसी प्रकाशन संस्था के कुशल सम्पादक भी, और राष्ट्रीय शैक्षणिक एवं साहित्यिक संघ के आप सचिव भी हैं।

देश की अनेक हिन्दी सेवी संस्थाओं ने आपकी लेखनी व विद्वता को पहचाना है। अतः आपको विभिन्न अलंकरणो और उपाधियों से सम्मानित भी किया है। आज सारे देश में आपकी पहचान राष्ट्रीय मंचीय कवि के रुप में स्थापित हो चुकी है। आपका मौलिक सृजन कविता, मुक्तक, गीत, नवगीत, दोहा, कहानी, निबंध, शोध, समीक्षा, पत्रकारिता, अनुवाद सम्पादन आदि विविध-विधाओं के व्यापक फलक पर प्रस्तुत है। राष्ट्रीय स्तर की अनेक प्रमुख पत्र-पत्रिकाएं आपके इस बहु आयामी सृजन की साक्षी हैं। आपके द्वारा रचित साठ से अधिक ग्रंथों का प्रकाशन हो चुका है तथा अनेक प्रकाशाधीन हैं। आपके द्वारा रचित रचनाएं हिन्दी साहित्य में एक मील का पत्थर हैं।

सम-सामयिक विषयों को लेकर ब्रजभाषा में काव्य रचना यह सिद्ध करती है कि आप भारतीय कविता की सांस्कृतिक विरासत के साथ गहरे रचनात्मक मनोयोग के साथ जुडे हुए हैं। आपकी काव्य रचना में समय और युग दोनों ही प्रतिबिम्बत और बोलते दिखायी पडते हैं। समकालीन जीवन की विसंगतियों पर व्यंग्यात्मक तीक्ष्ण प्रहार करने वाले श्री विष्णु विराट काव्य लेखन के क्षेत्र में वह स्थापित नाम हैं जिनकी कलम से माँ सरस्वती की खूब सेवा हुई है। परिणामतः कुशल साहित्य सर्जक और विचारवान विद्वान होने के साथ साथ आपको एक अच्छे इंसान का हृदय भी मिला। आपकी स्नेहिल दृष्टि, उदार व्यवहार और संवेदनशील हृदय इसीका प्रमाण है। स्वाभिमानी, निर्भीक और गम्भीर व्यक्तित्व के धनी, साथ ही व्यवहार में सहज स्पष्ट और निश्छल हैं।

डॉ. विष्णु विराट का कृतित्व बहुमुखी शिल्प और बहुआयामी कथ्य की विराट पटल पर प्रक्षेपित है। उनकी कृतियों में आधुनिक युग बोध का रुपायन हुआ है। वे यथार्थ के धरातल पर, सटीक अभिव्यक्ति के साहसिक प्रवक्ता हैं। उन्होंने अपने जीवन में जो भी अनुभव प्राप्त किया वह उनके साहित्य मे झलकता है। वैसे कई आलोचकों द्वारा कहा जाता रहा है कि ''रचनाकार गाँव की प्राकृतिक संपदा को शहर के एयरकंडीशनर में बैठकर उकेरने की कोशिश करते हैं।'' लेकिन

डॉ. विराट ने जिस पीडा की पाती को लिखा और बाँचा है वह गाँव का साक्षात् दृश्य उपस्थित करता है। क्योंकि वहउनके जीवन का भोगा हुआ यथार्थ है। इस सबका प्रमाण उनका दोहा संग्रह ''विराट सतसई'' है। जिसमें कवि ने सामयिक जीवन काल व युग बोध को मानों सचित्र प्रस्तुत किया है।

'विराट सतसई' की रचना कवि ने अपनी मातृभाषा 'ब्रज' में की है। ब्रजभाषा का हिन्दी साहित्य में क्या स्थान है। वह तो हिन्दी के सभी विद्वान जानते हैं। एक-एक शब्द के अनेक अर्थ अनेक बिम्ब, अनेक भाव प्रदर्शित करने वाली ब्रजभाषा की, विगत छः दसकों से हिन्दी साहित्य में लोकप्रियता सामाजिक व राजनैतिक उथल-पुथल के कारण खोने लगी थी। परन्तु विराट सतसई में जिन सम सामयिक विषयों की भावाभिव्यक्ति ! लक्षणा और व्यंजना का विराट सामर्थ रखने वाली ब्रजभाषा में हुई है। आज के दौर में पुनः ब्रज भाषा की सक्षमता को विराट सतसई में देखा जा सकता है।

ब्रजभाषा के दोहों की अपनी एक भौतिक विशेषता दुधाऊ गाय सी रही है। जितनी निचोडो निचुडती ही जाती है। समाज में व्याप्त राजनीति के दूषण का प्रभाव देखिए जहाँ सच बोलना मना है -

जब सों गुन्नी ने कही, बातें सबसों खास।
दूजे दिन देखी सबै, बाकी पुल पै ल्हास॥(306)

समसामयिक परिवेश पर प्रतीक और उपमान का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं कि-

सात सपेरे, साँप सौ, दरसक जुरे हजार।
जहर बुझी सुनि बीन कौं, मुरदा भए बजार॥(306)

व्यंग्य की तीव्रता, राजनीति के नये उपमान एवं तीखापन से ओतप्रोत डॉ. विराट के ये दोहे आधुनिक हिन्दी साहित्य में ब्रजभाषा की लोकप्रियता को पुनः उजागर करते हुए साहित्य में अपना विशेष योगदान देते हैं। अपने दोहों में कवि ने भाव पक्ष-कला पक्ष दोनो समन्वय करके शब्दों को चुन-चुन कर तथा जहाँ जरुरत हो वहाँ स्वभाविक शब्दों का प्रयोग करके कृति की सुन्दरता बढ़ाई है। यदि विषय ग्रामीण अंचल से जुडा है। तो शब्दों की छटा भी ग्रामीण आंचलिक रहती है जिससे भावाभिव्यक्ति में सजीवता आ जाती है -

राम चरन कौ भानजौ, लायौ चीज चुराय।
अम्मा आँखन मे रिसै आँचर लेय दुराय॥(308)

सास बहू कौं संग लै, गई ठकुर के द्वार।
किरपा मालिक ने करी, करिकें बंद किवार।।[309]

आज जनता और नेता के बीच चल रहे व्यवहार को व्यक्त करते हए कवि नये प्रतीकों का प्रयोग करते हुए कहते हैं कि -

कौरव सभा सजाय कैं, दुस्सासन के लोग।
प्रजा द्रौपदी के बसन, बचिवे के न संजोग।।[310]

सीता तौ पूँजी भई, नेता सब दसकंध।
प्रजा बनी बानर सकल, बँधै न सागर बंध।[311]

आधुनिक राजनीति में चल रहे खेल व आपाधापी, रेलमपेल के दृश्य को कवि ने व्यंग्य के तीव्र बाणों से प्रहार करते हुए प्रदर्शित किया है -

दिवस चुनावन के सजे, हैं कुत्तन कौं क्वांर।
कुतिया कुर्सी को चढैं, हाफ्त जीभ निकार।।[312]

जाल बिछाएं जाल पै, द्वन्द्व-कंद-अनुबंध।
घुटुअन-कीचड में कहैं, गंगा की सौगंध।।

तीन दिए, तेरह गिने, लिखे तिरासी नाम।
बडे जोर सौं है रहे, राहत काम तमाम।।

समाज में व्याप्त आडम्बर, धोखा, स्वार्थ पर भी कवि की कलम चलना स्वभाविक है-

बूढौ बाबा भगतजी, करै कीरतन गान।
रास रचावै रात में, करिकै बंद मकान।।[313]

धनियाँ बनियाँ कै गई, आटौ लैन उधार।
लाला ने भीतर लई, कीन्हे बन्द किवार।।

पारबती पहुंची जबै, करिवे राहत कार।
दाँत-दाँत व्हैबे लग्यौ, बूढौ ठेकेदार।।

आज वातावरण में प्रदूषण के कारण हमारी संस्कृति व धरोहर का जो ह्रास हो रहा है उसके परिपेक्ष मे कवि कहते हैं -

भरौ प्रदूषण व्योम में स्याह साँपिनी धूप।
पर्त पर्त चटकन लग्यौ, ताज महल कौ रूप॥[314]

देश में व्याप्त राजनीति के कारण समाज में श्रमिक, किसान की आज क्या दशा है उसका वर्णन निम्न दोहों से ज्ञात होता है -

ज्यों ज्यों दिन बीतत गए, बढ़त गई हडताल।
हड़िडन सौं चिपकन लगी, राम किसन की खाल॥[315]

पवित्र प्रेम की भावना का वर्णन देखिए -

पिय परदेसी आत ही, भरि भेंटी यक साथ।
मेहंदी मेहंदी है गए, गोबर बारे हाथ॥[316]

नैकित मूल्यों में बंधे कुछ दोहों का वर्णन भी उल्लेखनीय है -

देख कमल के फूल कौ, मति भूले सरि सूर।
नख सिख कीचर में धँसे, गहि सुगंध कौ मूर॥[317]

सबने जुरि कैं जोर सौं, खोदौ नयौ तलाब।
घुटुअन कीचर व्है गई, अबहु न आयौ आब।

गालन गढ्ढे आँख में, घने अँधेरे धुप्प।
पेट पताल समायगें, ओठन राखी चुप्प॥[318]

डॉ. विष्णु विराट ने जिस बहुआयामी सामाजिक धरातल पर भाव विम्ब उतारे हैं। वे आज की समस्याओं के समाधान की सशक्त प्रेरणा देते हैं। उत्कृष्ट काव्य सौन्दर्य वैचारिक गहराई, अनुभूति की प्रोज्वलता, अभिव्यंजना के अत्याधुनिक तेवरों का समावेश, जीवन्त बिम्ब विधान गागर में सागर की उक्ति का चरितार्थ होना, प्रतीकात्मकता, परिपक्व छान्दसिकता, कथ्य में चित्रात्मक बुनावट शब्द चयन की सटीकता, लय, ताल व गेयता की बानगी, आत्मीयता का प्रक्षेपण, युगीन यथार्थ का निर्भीक उद्घाटन आदि ऐसे तत्व हैं। जो इस कृति (विराट सतसई) को महिमा मंडित करते हैं तथा इसे ऐसा स्वरुप प्रदान करते हैं जो हिन्दी काव्य जगत के लिए एक उपयोगी सौगात बनाते हैं।

डॉ. राधेश्याम शुक्ल

आधुनिक हिन्दी साहित्य में डॉ. राधेश्याम शुक्ल वह स्थापित नाम है जो किसी विशेष परिचय का मोहताज नहीं है। आपका नाम देश के श्रेष्ठ साहित्यकारो में लिया जाता है। 26 अक्टूबर

सन 1942, उत्तर प्रदेश के वाराणसी जनपद के तहसील ज्ञानपुर के एक ठेठ देहाती गाँव में जन्मे डॉ. राधेश्याम शुक्ल एक श्रेष्ठ हिन्दी सेवी व्यक्तित्व के धनी हैं। आपने वाराणसी से शास्त्री, मेरठ वि. विद्यालय से संस्कृत में एम.ए. और फिर पंजाब वि. विद्यालय चंडीगढ़ से हिन्दी में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की बाद में साकेत वि. विद्यालय फैजाबाद से हिन्दी में पीएच.डी. करके हिन्दी के श्रेष्ठ विद्वानों में अपना नाम सामिल कर लिया।

आपकी लेखनी गीत-नवगीत, दोहा, गजल, लघुकथा, कहानी आदि पर विशेष चली है। प्रकाशन में आपके तीन श्रेष्ठ काव्य संग्रहों का प्रकाशन हुआ है जिनमेंसे (1) पँखुरी-पँखुरी करता गुलाब (2) त्रिविधा (3) एक बादल मन (दोहा संग्रह)। साथ ही दोहा संग्रह ''दरपन वक्त के'' प्रकाश्य है। देश के कोने-कोने से प्रकाशित अनेक काव्य संकलनो में रचनाएँ सादर आमंत्रित व प्रकाशित हैं। अनेक राष्ट्रीय स्तर की पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाओं का प्रकाशन होता ही रहता है। साथ ही आकाशवाणी व दूरदर्शन हिसार से कई रचनाओं का प्रसार हुआ है। हिन्दी पर आपका विशेष अध्ययन का कार्य होने से आपको अनेक सम्मान भी प्राप्त हुए जिनमें सार्थक साहित्य परिषद, मुंबई, साहित्य कला संगम हिसार, डॉ. सी.एम. हिन्दी सभा दिल्ली तथा इंटरनेशनल बायोग्रफिकल सेंटर कैम्ब्रिज द्वारा 1995-96 का विशिष्ट व्यक्तित्व सम्मान भी प्राप्त हुआ है। इन सबको देखते हुए प्रत्येक पाठक के सामने आपका निखरा हुआ व्यक्तित्व सामने आता है जो सचमुच हिन्दी की सेवा में रत्त है।

दोहा मानव मन की रागात्मक वृत्ति को अभिव्यक्त करने का आज पुनः माध्यम बन गया है। देश के कोने कोने में बैठे रचनाकार अपनी लेखनी इस छंद पर चला रहे हैं। ऐसे में डॉ. राधेश्याम भी आधुनिक दोहाकारों के रुप में श्रेष्ठ हस्ताक्षर के रुप में हमारे सामने आते हैं। आज राधेश्याम शुक्ल के दोहे पारम्परिक काव्य रुप आधुनिकता का बोध का विशाल व विस्तृत फलक लिये हुए हैं। सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक दबावों के बरक्स वैयक्तिक मानवीय संचेतना का वर्णन इन दोहों में बखूबी हुआ है।

मूल रुप से शुक्ल जी के दोहों की भाव भूमि ग्रामीण है। कुछ हद तक इस भाव भूमि के पुरातन पंथी एवं परंपरा वादी होने का भ्रम भी उपजता है। कवि ने अपने दोहों के माध्यम से आज के खंडित परिवेश में मावन-मूल्यों को एक बार फिर तलाशा है। संपूर्ण पारिवारिक परिदृश्य इन दोहों में उपस्थित हुआ है। रिस्तों की सटीक उद्‌भावना इन दोहों में देखी जा सकती है -

अम्माँ शब्दों से परे, संज्ञा एक अनाम।
उसके आँचल में बँधे-चारों पावन धाम।।[319]

बेटी के प्रति शुक्ल जी का अतिरिक्त मोह है जो पाँच ही दोहों में उन्होंने बेटी के रिस्ते के सभी परिप्रेक्ष्य उजागर कर दिए है। बेटी घर की खरी मर्यादा है, लज्जा का परिवेश है, अमोल रतन है। बेटी के पराये हो जाने के पारंपरिक भाव को एकदम अछूते ढंग से कवि ने इस दोहे में प्रस्तुत किया है -

बेटी मैना दूर की, चहके करे निहाल।
वक्त हुआ, लो उड चली, तज पीहर की डाल।।(320)

अपने पितृगृह से बेटी के रिश्ते की पूरी मार्मिकता एस दोहे में उभरकर आई है। कवि के वे दोहे जो शहराते गाँवो की व्यथा को व्यक्त करते हैं। गाँव अपनी सहजता और स्वभाविक आस्था बड़ी तेजी से खो रहे हैं, क्योंकि विकास के नाम पर उनका केवल शहरीकरण ही हुआ है।

महानगर से गाँव ने खूब मिलाया हाथ।
रौंद गई सडकें उसे, अब वह है फुटपाथ।।(321)

श्री रघेश्याम शुक्ल जी के युग बोध के दोहे जिनकी संख्या संग्रह में सर्वाधिक है। ये दोहे पाठक व श्रोता दोनों को ही अस्वीकृति की अवस्था में सोचने पर विवश कर देते हैं। ये दोहे मारक हैं, उत्पीडक हैं, इनमें रुबरु होकर विकास के सारे तथा कथित आयाम खोले और कोरे लफ्फाजी लगते हैं। इनमें पर्यावरण का दर्द है, सियासत है, जिन्दगी के प्रति तथाकथित सभ्य फलसफा है, तरह-तरह मुखौटे हैं, आदमी की निरन्तर बढ़ती भूख-प्यास के आँकडे हैं, प्रगति की निरर्थक अंधी दौड़ है। आज के मानव का दृष्टि-भ्रम तो देखें कि वह इसी छल कर्मी की बढ़ती भूख ऐसी सर्वग्राही हो गयी है कि चमन के ही मर जाने का खतरा आन पडा है। लोग विक्षिप्त से आँसू आये माहोल में हँस रहे हैं ऐसे समय की मार के विरुद्ध गुहार भी की जाए तो कहाँ, ऐसे में कवि मन स्वयं में ही राहत की तलाश करता है।

''पानी और प्यास'' शीर्षक के अंतर्गत कवि ने कई अन्योक्ति परक दोहों की रचना की है। जो इसी युग संत्रास को वाणी देते हैं। आज जनता रूपी हिरन को पानी का भरम देकर मारा जा रहा है। चतुर्दिक लगी आग के सामने पानी रोने के अतिरिक्त कर भी क्या सकता है। समग्रतः युगबोध के ये दोहे बेहद बेचैन करते हैं।

उत्साह और उल्लास का भाव आज की कविता में विरल ही है। शुक्ल जी के दोहों में यह भाव मुखरित हुआ है। कवि सहज रसाभास की उद्घोषणा करते हुए कहता है -

पढ़िए दोहे सावनी, उतरे मन की धूल।
खिलें साँवली उम्र में उजले-उजले फूल।।(322)

निम्न दोहों में कवि की श्रृंगार-परक भारतीय मनस्विता अपनी पूरी सांस्कृतिक परंपरा में उपस्थित हुई है -

सजे बिहारी आँख में मन उतरे रसखान।
धनानंद ने जीभ पर, लिखा, सुजान-सुजान।।

कवि शुक्लजी के प्रकृति-परक एवं ऋतुचक्र के दोहे इनमें भी कवि ने पारिवारिक सांस्कृतिक संचेतना बड़े प्रभावी रुप से उपस्थित हुई है -

आये भैया भाद्रपद, चहकी बहिना धूप।
धरती दरपन देखती, रोज़ निहारे रुप।।(324)

समग्रतः डॉ. राधेश्याम शुक्ल के ये दोहे उस जागरुक मन और जिज्ञासा से उपजे हैं। जो आज की कविता को एक द्रढ़ मानसिक-बौद्धिक-भावात्मक आधार देती है, बिम्ब योजना और भाषिक संरचना की दृष्टि से ये दोहे एक नई परम्परा का अंग है। जो नवगीतों के माध्यम से दोहों में आयी है। श्री शुक्ल के ये दोहे हिन्दी साहित्य में विशेष योगदान देते हैं।

कुछ दोहाकारों के स्वतंत्र दोहा संग्रह इस प्रकार हैं -

1) नूतन दोहावली - सुबोध चन्द्र शर्मा, साहित्य कला मंच, चाँदपुर, बिजनोर
2) बढ़ने दो आकाश - डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय, अनुभव प्रकाशन, ई. 20 लाजपतनगर
3) नावक के तीर - डॉ. अनंतराम मिश्र- भारती भाषा प्रकाशन, दिल्ली 32
4) उग आयी फिर दूब - डॉ. अनंतराम मिश्र - दिशा प्रकाशन 138/16 त्रिनगर, दिल्ली 35
5) एक बादल मन - राधेश्याम शुक्ल - अनुभव प्रकाशन - साहिबाबाद
6) कालाय तस्मै नमः - डॉ. भारतेन्दु मिश्र - पांडुलिपि प्रकाशन ईस्ट आजाद नगर, दिल्ली 51
7) चुटकी भर चाँदनी - राजेन्द्र वर्मा - आशा प्रकाशन विकास नगर, लखनऊ
8) धूप बहुत कम छाँव - डॉ. गोपाल बाबू शर्मा - अरविंद प्रकाशन बापू नगर अलीगढ़
9) शब्दों के संवाद - आचार्य भगवत दुबे - मेघ प्रकाशन यमुना विहार, दिल्ली 53
10) शब्द विहंग - आचार्य भगवत दुबे - पाथेय प्रकाशन 112, सराफा जबलपुर

11) ढाई आखर - डॉ. हबीब हुबाव, संवेदना प्रकाशन कासिमपुर, अलीगढ़

12) सारांश - रामेश्वर हरिद - संवेदना प्रकाशन, कासिमपुर, अलीगढ

13) बोलो मेरे राम - रामनिवास मावन - आस्था प्रकाशन विकास पुरी, नई दिल्ली

14) जैसे - हरे राम समीप - पुस्तक बैंक 550 सेक्टर-10 फरीदाबाद

15) खूंटी लटकी धूप - अश्विनी कुमार पाण्डेय - नीलम प्रकाशन चाँदखेडा, अहमदाबाद

16) प्रतिबिंब - कोमल शास्त्री - आशा प्रकाशन, कान्दीपुर अम्बेडकर नगर

17) कबीरा - जीवन मेहता - यतीन्द्र साहित्य सदन, कोर्ट के सामने, भीलवाड़ा

18) पर्यावरणीय दोहे - कुंवर कुसुमेश - श्रीमती पुष्पाकुंवर विकास नगर, लखनऊ

19) देश बडा बेहाल - शिवकुमार पराग - राहुल सांकृत्यायन, लोक संस्कृति संस्थान, निजामुद्दीन मऊ।

20) विविधा - डॉ. महेश दिवाकर - चन्द्रा प्रकाशन मुरादाबाद

21) युवको! सोचो! - डॉ. महेश दिवाकर - चन्द्रा प्रकाशन मुरादाबाद

22) बजे नगाड़े काल के - आचार्य भगवत दुबे, पं. विश्वनाथ दुबे, जबलपुर

23) शिवशरण सहस्त्रसई, सिवशरण दुबे, डोली रोड, बरही, म.प्र.

24) तुजुक हजारा - विश्व पकाश दीक्षित, अनुभव प्रकाशन

25) बटुक की कटुक सतसई - विश्व प्रकाश दीक्षित, अनुभव प्रकाशन

26) हम जंगल के फूल - व्रजकिशोर वर्मा 'शैदी'

27) तिराहे पर खड़ा दरख्त - ब्रज किशोर वर्मा 'शैदी'

28) विराट सतसई - डॉ. विष्णु विराट चतुर्वेदी, 406, व्रजवाटिका, सिद्धनाथ रोड, बड़ौदा-390001

29) सहमी सहमी आग - राम निवास 'मानव'।

डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया

दोहा छंद लेखन में जाने माने डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया पेशे से तो एक चिकित्सक हैं परन्तु साहित्य के प्रति उनका रुझान वास्तव में उनके श्रेष्ठ एवं कार्यशील व्यक्तित्व की ओर इशारा करता है। देश की अनेक पत्र-पत्रिकाओं में आपका नाम विशेष उल्लेखनीय रहा है। सहज सरल व्यक्तित्व के स्वामी डॉ. साहब का जन्म 15 अक्टूबर सन 1955 ई. में उत्तर प्रदेश के ग्राम दतेई जनपद एटा में हुआ। शिक्षा के क्षेत्र में आपने चिकित्सा एवं विज्ञान में स्नातक की पदवी ग्रहण की एवं योग विशेषज्ञता का महारथ हाँसल किया। उन्होंने स्नातक कानपुर विश्वाविद्यालय से किया और योग विशेषज्ञता गुरुकुल कांगडी विश्व विद्यालय हरिद्वार से प्राप्त की।

डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया जहाँ एक और संक्षिप्त सूत्रों जैसी संक्षिप्तता पढ़ने वाले विज्ञान के अध्यायी सहज ही साहित्य के लम्बे चौडे फलक को अपना लेते हैं। उनकी उपलब्ध कृतियों में उपनिषद वेद, दर्शन आदि का विशद अध्ययन, सुनीति (खण्ड काव्य), फूटती किरन, वाणी मौन रही, मन त्रिवेणी (सभी काव्य संग्रह), मन के मोती (गजल संग्रह) एवं अनेक समवेत काव्य संग्रहों के प्रतिभागी प्रमुख कवि के रुप में कविता, गीत, गज़ल व दोहे आदि अनेक स्तर पर उनकी लेखिनी साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखती है। साथ ही डॉ. साहब ने प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन भी किया है।

सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् की शाश्वत अभिव्यक्ति देने वाले स्वरों के संवाहक तथा संवेदना को सार्थक करनेवाले समर्थ कवि, दोहाकार गज़लकार डॉ. भदौरिया सामाजिक विसंगतियों, विद्रूपताओं पर तीक्ष्ण प्रहार करते हैं -

हत्या लूट डकैतियाँ, बलात्कार, व्यभिचार।
विज्ञापन अपराध का, हर दैनिक अखबार।।[325]

नये तेवर नये दोहे की अपनी विशेषता है। डॉ. साहब के मारक दोहों के साथ-साथ अध्यात्म व उपदेशात्मकता का भी प्रयोग मिलता है।

जुडा न जब तक जीव का ईश्वर से सम्बंध।
दूर न तब तक हो सकी, दुनियाँ की दुर्गंध।।[326]

डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया दोहा-लेखन में सिद्धहस्त हैं। सूक्ष्म पर्यवेक्षण दृष्टि के कारण डॉ. साहब का मुक्तक काव्य परम्परा में भी एक विशिष्ट स्थान है।

उनकी सजग दृष्टि समाज की बदलती हुई तस्वीर की प्रत्येक हलचल पर नज़र रखती है। जनता को मूर्ख बनाने वाले नेताओं पर वे शब्दों के तीखे बाण चलाते हैं। साथ ही आधुनिकता की चमक में फँसे लोगों की आधुनिकता एवं संकुचित और बिकी हुई मानसिकता को दोहों में व्यक्त करते हैं, सत्ता और धन की ओर झुकता हुआ मीडिया - सभी कुछ रचनाकार की दृष्टि की परिधि में है। नैतिकता के अभाव में जनता का नेतृत्व करने वाले पदभ्रष्ट हो गये हैं -

राजनीति पथभ्रष्ट है नेतागण दिग्भ्रान्त।
करें दुष्ट जन शंखध्वनि सज्जन बैठे शांत।।[327]

आज सच्चे सेवा भावी शान्त बैठे हैं और मीडिया निष्पक्ष नहीं रह गया -

सत्ता के षड़यंत्र से उधर लुटा जनतन्त्र।
इधर मीडिया चीखता वोट हमारा मन्त्र॥(328)

मानव प्रकृति के साथ-साथ डॉ. साहब ने बाह्य प्रकृति का भी सूक्ष्म निरीक्षण किया है जिसमें उनका सौंदर्य बोध स्पष्ट ही दिखाई देता है -

आठ महीने सूर्य ने लिया नहीं अवकाश।
चार मास की छुट्टियाँ कैसे दे आकाश॥(329)

प्रकृति में परमेश्वर व्याप्त है इसी का बोध कराते हुए डॉ. साहब कहते हैं -

ईश्वर के ऐश्वर्य के परिचय के प्रकटार्थ।
बने पताका फहरते सारे सृष्ट-पदार्थ॥(330)

जाति, सम्प्रदाय, भाषा की समानता की बात करते हुए दोहाकार कहता है -

पी ली जब समता-सुधा, विषम विषय-विष छोड़।
तब इस जीवन में जुडा, जीव-ब्रह्म का जोड़॥(331)

इस प्रकार विविध वर्ण्य विषयों में गठित डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया के सामयिक दोहे साहित्य में उल्लेखनीय स्थान रखते हैं।

श्री शिवशरण दुबे

सामयिक दोहा छन्द के जाने माने हस्ताक्षर श्री शिवशरण दुबे, गीत गज़ल के प्रसिद्ध एवं समर्थ रचनाकार हैं। साथ ही दोहा विद्या में आपकी गहरी आशक्ति है। दोहे के प्रति आपके समर्पण का प्रमाण हैं - शिवशरण सहस्त्रसई जिसमें आपके एक हज़ार से अधिक दोहे प्रकाशित हैं। श्री दुबे जी ने दोहे को समस्त काव्य-विधाओं में श्रेष्ठ माना है तभी तो वे कहते हैं -

दूल्हा 'दूहा' अग्रसर, कविताई के साथ।
पीछे-पीछे चल पड़ी, छंदों की बारात॥(332)

दोहे के प्रति इतनी श्रद्धा रखने वाले श्री दुबे जी का जन्म मध्यप्रदेश के जगुवा (बरही) मे सन 5-1-1944 में हुआ। भारतीय साहित्य में असीम श्रद्धा रखने वाले श्री दुबे जी ने संस्कृत विषय में स्नातकोत्तर पदवी प्राप्त की, बी.एड. करने के बाद बरही में ही उच्च. माध्य. विद्यालय में अध्यापक के रुप में सेवारत हो गये साहित्य में रुचि होने के कारण आप अनेक पत्र-पत्रिकाओं से जुडे हुए हैं। आपकी प्रकाशित कृतियों में दोहा संग्रह शिवशरण सहस्त्रसई का विशेष स्थान है।

आपकी अन्य रचनाओं में दीपार्चन (खण्ड काव्य), 100 गीत गीतों के वातायन से (गीत संग्रह), बालगीत संग्रह, मेरी हिन्दी ग़ज़लें (गजल संग्रह) आदि उल्लेखनीय रचनाएँ हैं। साथ ही आपको देश की अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित भी किया गया है।

सामयिक विषयों से सम्बद्ध दुबे जी की दोहा सहस्त्रसई में जनतंत्र की असहाय दयनीय स्थिति का वर्णन प्रमुखता से देखने को मिलता है। आज देश के पंचायती राज के कर्ताधर्ता का चित्रण करते हुए वे लिखते हैं कि -

सचिव पंच सरपंच का भोपाली अनुराग।
ग्रामीणों के कान में लगे पहाड़ी राग।।(333)

सत्य के धरातल पर खड़े दुबे जी के ये दोहे बड़े ही कटु हैं। कवि कविता के साथ दुराचार करने वाले मंचीय कवियों पर कटाक्ष करते हुए कहते हैं कि -

क्षणिका कणिका, चुटकुले, तुके-बेतुके ढंग।
स्वैराचारी सृजन के ये सब प्रथक प्रसंग।।(334)

आज देश-समाज की स्थिति से तो हर कोई वाकेफ हैं, जहाँ भी राजनीति की बात आती है वहीं नेताओं का मन में ख्याल आना स्वाभाविक है। अतः नेताओं पर अधिकांश, लगभग निन्यानवे प्रतिशत कवियों की लेखनी ने वार किया है और सबका अपना-अपना अंदाज है, मगर यहाँ दोहाकार श्री शिवशरम दुबे नेता के स्वभावगत उपमानों के साथ उससे दूर रहने की सलाह देते हैं -

नेता, नाहर, नाग से, रहिये सौ गज दूर।
व्यसन् व्यथा विष से भरे, हैं स्वभाव से क्रूर।।(335)

समाज में बढ़ती नग्नता की ओर भी कवि की पैनी व सतर्क दृष्टि जाती है। कवि का यहाँ विरोधाभास द्रष्टव्य है -

साड़ी लेकर हाथ में, दिखलाया इस तौर।
देह निर्वसन, वाह रे, विज्ञापन का दौर।।(336)

शृंगार वर्णन में दोहाकार दुबे जी एक नया ही वर्ण्य प्रस्तुत करते हैं। पृथ्वी और बादल को माँ-बेटे का रुप देकर कवि ने नया सम्बन्ध स्थापित किया है। तो वहीं दूसरी ओर बरखा की बूँदों को सोमरस कहकर भी मदमस्त बनाया है -

आज आ कोजागरी लिए अमिय औकात।
नभ से भू पर सोमरस, बरसा सारी रात॥

इस प्रकार दुबे जी सहज ही अपनी लेखनी में अपने सीधे साधे व्यक्तित्व को उजागर कर देते हैं। शिवशरण सहस्त्रसई दोहा संग्रह सामयिक युग चेतना से सम्बद्ध है। अतः हम कह सकते हैं कि दोहाकार ने निःसंदेह अपनी कलम का सटीक उपयोग किया है।

श्री कुमार रवीन्द्र

हिन्दी के साहित्य में श्री कुमार रवीन्द्र एक सफल नाम हैं। आपने गीत, नवगीत दोहा आदि अनेक फलकों पर रचनाएं की हैं शिक्षा के रुप में आपने अंग्रेजी भाषा को चुना है। परन्तु रवीन्द्र जी का हृदय राष्ट्रभाषा के प्रति निरन्तर आदर बनाये रहा है उन्होंने अंग्रेजी काव्य रचनाओं के साथ हिन्दी काव्य सृजन में अपना विशेष योगदान दिया है। 10 जून 1940 में उत्तर प्रदेश के लखऊ में जन्मे श्री कुमार रवीन्द्र ने एम.ए. (अंग्रेजी) कर एक प्राध्यापक के रुप में अपनी सेवाएं प्रस्तुत की हैं। देश की अनेक पत्र-पत्रिकाएं आपके अभिनव प्रयोगों की गवाह हैं।

आपकी प्रकाशित पुस्तकों में (1) आहत है वन, (2) चेहरों के अन्तरीप (3) पंख बिखरे रेत पर, नवगीत संग्रह (4) एक और कौन्तेय (काव्य नाटक) (5) द सैप इज़ स्टिल ग्रीन (अंग्रेजी कविताओं का संकलन) (6) लौटा दो पगदण्डियाँ (नवी कविता का संकलन)।

इसके अलावा छन्द मुक्त कविताओं में कुमार रवीन्द्र ने अनेक प्रयोग किये हैं। नवगीत दशक-2, नवगीत अर्द्धशती एवं यात्रा में साथ-साथ नामक बहुचर्चित नवगीत-संग्रहों के सहयोगी गीतकार के रुप में आप विशेष प्रतिष्ठित हुए हैं।

श्री कुमार रवीन्द्र जी के दोहों में व्यष्टि चेतना और समष्टि चेतना में होने वाला विनियोग एक सहज कलात्मक रीति से ध्वनित होता है। प्रारम्भ में तो उनके दोहों में अजन्ता से हृदय और खजुराहों-सी देह के देश मे बसी पँखुरी-पँखुरी छुअन को महसूस किया है, सम्बंधों में आनेवाला नकलीपन, बाहुबली की मूर्ति में पड़ी दरार, भ्रष्ट हवाएं, बीमार घटनाओं और हाट में बिकनेवाली सभ्यता का चित्रण करनेवाले कुमार रवीन्द्र के दोहों को अपनी समकालीनता का एक करुण और ज्वलन्त दस्तावेज कहा जा सकता है -

सन्नाटा बुनतीं रहीं अपलक सांसें रोज़।
हम बर बस डूबा किये, लिये चाहका बोझ॥(338)

बदलते आपसी सम्बंध और असंगति के बारे में दोहाकार कहता है कि -

हर घर लगता अजनबी साँसों का सम्बंध।
बनिये की दूकान का जैसे हो अनुबंध॥(339)

रिश्ते हैं नकली सभी, चेहरे चढ़े नकाब।
नेह-प्रश्न का कोई भी मिलता नहीं जवाब॥(340)

समाज में फैली असंगति, वैविध्य का वर्णन करते हुए कुमार रवीन्द्र नया वर्ण्य प्रस्तुत करते हैं -

चंदन जले चिताओं पर ऐसे सुख के भाग।
पर अभाव के घर नहीं चूल्हे में भी आग॥(341)

आज चारों तरफ मची हुई आपा-धापी को लेकर दोहाकार क्षुब्ध है -

हाट हो गयी आस्था, मजहब हुए दुकान।
इस बाज़ारु शोर में कौन किसे दे कान॥(342)

आधुनिकता की होड़ में आदमी जहाँ दिन रात तरक्की कर रहा है वहीं अपने नैतिक मूल्यों को खोता जा रहा है।

पहुँची सड़कें गाँव तक, हुए मुकदमें आम।
बने पड़ोसी अजनबी, सूनी हो गयी शाम॥(343)

सबके सपने बिक गये, लेन-देन व्यवहार।
जन्म दिनों की भीड़ में बचे सिर्फ त्योहार॥(344)

साथ ही दोहाकार मानव मस्तिष्क में व्याप्त खुदगर्जी को चित्रित करते हैं। इस प्रकार अनेक मानवजीवन से जुडे वर्ण्यो की प्रस्तुती कुमार रवीन्द्र के दोहों में देखी जा सकती है।

श्री जहीर कुरेशी

सामयिक दोहा छंद लेखन में श्री जहीर कुरेशी का भी योगदान महत्वपूर्ण रहा है। नवगीत, गीत व गज़ल विधा के साथ-साथ समय सापेक्ष श्री कुरेशी जी ने दोहा छंद को भी अपनाया है। उन्होंने दोहे के विषय में सप्तपदी-1 में कहा है कि ''आधुनिक ज़िंदगी की बहुत-सी कडवी-कसैली बातें न तो नवगीत में कहीं जा सकतीं हैं। न ही उनका कह पाना गज़ल के कलेवर में सम्भव है। इसलिए दोहा दो टूक बातों को कहने की हिंमत रखता है। आज सामयिक दोहे में कडवी-कसैली बातें असरदार ढंग से कहीं जा सकतीं हैं।''

इस प्रकार श्री जहीर कुरेशी ने अपने दोहों को एक वैचारिक भावभूमि पर प्रतिष्ठित किया है जो सामयिक युग संलग्न है। उनके दोहों में सादगी और प्रविष्णुता सर्वत्र लक्षित होती है।

5 अगस्त सन 1950 ई. को मध्यप्रदेश के गुना जिला के चन्देरी गाँव में जन्में श्री जहीर कुरेशी जीवन में अनेक अनुभवों की शिक्षा रखते हैं। उनकी रचना धर्मिता बाल काल से ही शुरु हो गयी थी। सन 1965 से उन्होंने लेखनी के जौहर शुरु कर दिये थे औरं सन 1975 में ''लेखनी के अलावा 'एक टुकडा धूप', 'चाँदनी का दुःख', 'समंदर व्याह ने आया नहीं है' आदि रचना संग्रहों का निर्माण कर चुके श्री कुरेशी जी आधुनिक नवगीतकारों में उल्लेखनीय हैं। डॉ. शम्भू नवगीतकारों नाथसिंह द्वारा सम्पादित 'नवगीत दशक 3' के वे दस विशिष्ट नवगीतकारों में से एक है।

श्री जहीर जी के दोहों में जीवन के अनेक तथ्य छुपे हुए हैं। उनका मानना है कि हर पीली चीज़ सोना नहीं हो सकती। आज बकरी से लेकर इंसान तक सभी को मैं-मैं-मैं करने का रोग लगा हुआ है। साधना के स्थान पर अब सब लोग साधन को प्रधानता देते हैं। आज जीवन में निरंतर अवरोध बढते जा रहे हैं -

सड़कों पर अवरोध है, जीवन में अवरोध।
अवरोधों का लोग क्यों करते नहीं विरोध।।(345)

बढती हुई आबादी एवं जिसके कारण अनेक मुश्किलें खडी हो गयीं हैं। हर व्यक्ति अपने लिए ही जीता है और अपना ही भला चाहता है। परन्तु आज के दौर में यह भी असम्भव सा हो गया है। पग-पग पर खतरे बढ़ गये हैं। कब, कहाँ, क्या हो कुछ पता नहीं। अतः कुरेशी जी कहते हैं -

उडने से पहले करे पक्षी सोच विचार।
है निर्मल आकाश में खतरों के अम्बार।।(346)

आज राजनीति में पानी भी अंगारों से मित्रता करना सीख गया है. -

राजनीति में दोस्तो कुछ भी नहीं विचित्र।
अनायास पानी बना अंगारों का मित्र।।(347)

श्री जहीर जी यह अच्छी तरह से जानते हैं कि ज्ञान पुस्तकों से नहीं बल्कि अनुभवों से आता है, उनकी दृष्टि में न कोई छोटा है, न बड़ा सभी समान हैं। छोटी समझी जानेवाली धूल भी एक दिन व्यक्ति के सिर पर जा चढ़ती है। कहने का तात्पर्य है कि जीवन एक सतत संग्राम है और हर व्यक्ति को अकेले ही जीवन के ये युद्ध लड़ने पड़ते हैं। जहीर जी के दोहों में मंत्रों जैसी सादगी स्पष्ट झलकती है एवं सामयिक जीवन को कुछ-कुछ अवश्य सिखाती है -

धूप, हवा, जल मिल गये, सफल हो गयी चाल।
बीज धरा के गर्भ से, उठा न पाया भाल।।(348)

उड़ने को तो उड़ गया पंछी पंख पसार।
उसे लौटना ही पडा, धरती पर मन मार।।(349)

अतः मानव युग चेतना से संलग्न श्री जहीर कुरेशी जी के दोहे सामयिक हिन्दी साहित्य में विशेष स्थान रखते हैं।

डॉ. भारतेन्दु मिश्र

संस्कृत एवं अवधी साहित्य का गहन अनुशीलन करने वाले रचना कार डॉ. भारतेन्दु मिश्र सामयिक दोहा जगत में एक जाने माने हस्ताक्षर हैं। श्री मिश्र जी सन 1990 से दोहा साहित्य के साथ जुड़े हुए युवा दोहाकार हैं। उनके पास प्रगतिशील दृष्टि है और लेखन के लिए उर्वरा भाषा, जिसके कारण उनकी रचना धर्मिता हिन्दी साहित्य में विशेष स्थान रखती है, देश की अनेक पत्र-पत्रिकाएं आपकी रचनाओं का प्रकाशन करती हैं। गत एक दशक में हिन्दी के सर्व प्राचीन छंद-दोहा का नव संस्कार हुआ है। नए दोहों की यात्रा में डॉ. मिश्र जी प्रमुख सहभागी हैं। भारतेन्दु जी का सांस्कृतिक मन आधुनिक जीवन की अनेक विसंगतियों से क्षुब्ध है। आज का बौद्धिक विमर्श हमें स्मृति लोप की ओर ले जा रहा है।

''कालाय तस्मै नमः'' डॉ. भारतेन्दु मिश्र द्वारा रचित सामयिक 704 दोहों का संग्रह हैं। दोहा भले ही प्राचीन या पुरानी विधा है लेकिन कालायतस्मैनमः के दोहों की भाव-भूमि नई है। रचनाकार उन सभी सामाजिक विद्रूपताओं से बूझ रहा है जो आज देश और समाज की एक बड़ी चिंता है। हिंसा और आतंक से जूझता यह देश हिन्दी कविता को किस तरह प्रभावित कर रहा है इसका सुन्दर उदाहरण संग्रह का यह दोहा हैं।

यह जहरीली बावडी, इसमें पलते नाग।
खेला करते थे यहाँ, हिलमिल पुरखे फाग।।(350)

अपनी श्रेष्ठ परम्परा को नकारने वालों से कवि (दोहाकार) को बडी नफ़रत है। आज संवेदना का ह्रास बडी तेजी से हो रहा है। परिणामतः भारतीय परिवार टूट रहे हैं। डॉ. मिश्र के अनेक दोहे इसी चिन्ता से संलग्न दिखायी देते हैं।

घायल है संवेदना, छिले शब्द के पैर।
अर्थ कर रहे इन दिनों, नीरस तट की सैर।।(351)

उलटे लटके आदमी, चमगादड के घाट
गीदड़ सबकी इन दिनों खड़ी कर रहा खाट।।[352]

भारतेन्दु जी ऐसे अनेक रिश्तों को जीते हैं जिनकी स्मृतियों में बचपन, गाँव, पिता-माता, लोक संगीत, पर्व और नेक आशीष भरे पड़े हैं।

खैनी खाये खाट पर, खटकाते ही द्वार।
दादा मिलते थे मुझे ले आशीष हजार।।[353]

परन्तु आज जरूरतों और इच्छाओं ने इस सहज सुख से लोगों को वंचित कर दिया है। भारतेन्दु जी के लगभग 300 दोहों में इसी व्यथा को मुखरित किया गया है।

समग्रतः यदि कालायस्मैनमः दोहा संग्रह पर नज़र डालें तो हम पाते हैं कि यह पुस्तक पाठक के मन में एक रागात्म्य सम्बंधों का नवीन भाष्य उद्घाटित करती है। कुल मिलाकर देखें तो संघर्ष, प्रेम, उत्साह और विजय इन दोहों की मूल प्रवृत्ति है और साथ ही बदलते सामाजिक मूल्यों का स्पंदन है। मिश्र जी अपने दोहों में सांस्कृतिक प्रतीकों के माध्यम से वर्तमान को देखने में सफल हुए हैं।

डॉ. हरीश निगम

हिन्दी दोहा साहित्य में डॉ. हरीश निगम का नाम अच्छे दोहाकारों की श्रेणी में आता है। जहाँ दोहा छंदको हिन्दी के सामयिक कवियों ने बड़ा ही आदर दिया है। वहाँ डॉ. निगम भी अपनी विशेष भूमिका निभाते हैं। देखने में सीधे-साधे डॉ. हरीश निगम मानसिक प्रवृत्तियों के वर्णन क्षेत्र में बड़े ही कुशल रचनाकार हैं। उनका मानना है कि बच्चों की मनः स्थिति को उन्ही की रुचियों के अनुसार प्रस्तुत करने में भी दोहे पीछे नहीं है। (सप्तपदी-2)। इसी बात को सिद्ध करने के लिए डॉ. निगम ने बाल दोहे भी लिखे हैं। डॉ. निगम अपने व्यक्तित्व में बेहद अन्तर्मुखी हैं। वे व्यवहारिक जिन्दगी में बहुत औपचारिक भी लगते हैं। किन्तु उनकी रचनाएं अनेक असली स्वरुप की चुगली कर देती है। डॉ. हरीश निगम के छोटे-छोटे गीत-नवगीत भाव के स्तर पर गहरी व्यंजना करते हैं। डॉ. निगम की रचनाएं देश भर की पत्र-पत्रिकाओं में विशेष स्थान पाती हैं।

डॉ. हरीश निगम अपने दोहों में कथ्य को संक्रमित करने के लिए विम्ब धर्मा सांकेतिकता आश्रय लेते हैं। उन्होंने आज के भयावह, मारक और दारुण परिवेश को चित्रित करते हुए लिखा है (सप्तपदी-2) कि मौसम की खरोंच से डाल में दुबकी चिडियों के पंख लहू लुहान हो गये हैं। आज शहर धुआँ उगल रहे हैं और गाँव खाँस रहे नज़र आते हैं, चौपालें वीरान हो गयी हैं। खेत धूल में ही सन गये हैं। इसके उपरांत डॉ. निगम के दोहो में फागुन के रंगों की रंगीनी का एहसास

भी है। अर्थात जीवन के प्रत्येक रंगों में रंगे डॉ. निगम के दोहे हिन्दी साहित्य में विशिष्ट स्थान रखते हैं।

डॉ. रामसनेहीलाल शर्मा 'यायावर'

आधु. हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध हस्ताक्षर एस.आर.के. (पीजी) कॉलेज फ़िरोज़ाबाद के शोध एवं स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग में रीडर डॉ. राम सनेही लाल शर्मा 'यायावर' का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

5 जुलाई सन 1949 में उत्तर प्रदेश के जनपद फिरोज़ाबाद के तिलोकपुर गाँव मे जन्मे डॉ. यायावर अध्ययन की विराट सम्पदा रखते हैं। शिक्षा के रुप में एम.ए., पीएच.डी., डी.लिट. की उपाधियाँ प्राप्त की हैं और अनेक शोध छात्रों का निर्देशन किया है।

समय के साथ साहित्य रचना में संलग्न डॉ. यायावर ने अनेक रचनाएं हिन्दी साहित्य को अर्पण की हैं। जिसमें उनकी प्रकाशित कृतियों में -

- मन पलाशवन और दहकती संध्या (नवगीत व गज़ल संग्रह)
- गलियारे गंध के (प्रणय परक नवगीत संग्रह
- पांखुरी-पांखुरी (मुक्तक संग्रह)
- सीप के समन्दर (गजल संग्रह)।

तदुपरान्त अनेक सहयोगी रचना संग्रहों में उनकी अनेक रचनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं।

सभी सामयिक दोहाकारों की भांति ही डॉ. यायावर भी दोहा छन्द से जुड़ गये और कई दोहों की रचनाएं कर दी उनके ये दोहे 'दोहा दशक' और सप्तपदी-6 में 100-100 की संख्या में संग्रहित हैं।

दोहों के क्षेत्र में डॉ. यायावर का महत्वपूर्ण काम रामकथा के पात्रो व स्थलों पर 11-11 दोहे (ग्यारह-ग्यारह) लिखने का है। जिनमें उन्होंने बड़ी मार्मिकता के साथ वर्णन किया है।

डॉ. राम सनेही लाल शर्मा के दोहों में भी आज के मानव के जीवन की झलक मिलती है। वैसे भी नया दोहा अभिनव वर्ण्य और सामयिक युग चेतना से ही जुड़ा हुआ है।

थैली बाएँ हाथ में दाएं में तलवार।
वो खरीद कर ले गया मुझे सरे बाजार॥

दोहा से स्पष्ट होता है कि कुछ परिवेश में बदलाव आया है। अब लाठी के साथ-साथ पैसा. भी चाहिए जब दोनों पास हैं तो सबकुछ आपका हो जायेगा।

हास्य और व्यंग्य की गुद-गुदाहट के साथ प्रस्तुत सामयिक दोहे बहु आयामी हैं। रचनाकार दोहा छंद में अपने निजी सामयि भावों को अभिव्यक्ति दे रहे हैं जिनके अथक प्रयास के कारण दोहा विद्या हिन्दी साहित्य में पुनःस्थापित एवं प्रतिष्ठि हुई है।

'जाकी लाठी वाकी भैंस' वाली कहावत अब उपरोक्त दोहे में. बदल गयी हैं। अब के दौर में लाठी के साथ-साथ पैसा भी चाहिए। जब दोनों ही पास हैं तो सबकुछ आपका हो जायेगा

हास्य, व्यंग्य एवं तीखी चोट की छटा इन दोहों में देखते ही बनती हैं। इस प्रकार हिन्दी साहित्य के अनेक बहुआयामी रचनाकार, दोहा छंद में अपने निजी सामयिक भावों को अभिव्यक्ति दे रहे हैं जिनके अथक प्रयास के काण दोहा विद्या हिन्दी साहित्य में पुनः स्थापित एवं प्रतिष्ठित हुई है।

संदर्भ सूची

1) तुज़ुक हज़ारा (दोहा संग्रह) विश्व प्रकाश दीक्षित 'बटुक' भूमिका खण्ड।

2) वही '' '' '' ''

3) वही '' '' '' ''

4) वही '' '' '' ''

5) वही '' '' '' ''

6) वही '' '' '' ''

7) वही '' '' '' ''

8) वही '' '' '' दोहा सं. 14

9) वही '' '' '' दोहा सं. 62

10) वही '' '' '' दोहा सं. 65

11) वही '' '' '' दोहा सं. 75

12) वही '' '' '' दोहा सं. 89

13) वही '' '' '' दोहा सं. 92

14) वही '' '' '' दोहा सं. 116

15) वही '' '' '' दोहा सं. 117

16) वही '' '' '' दोहा सं. 118

17) वही '' '' '' दोहा सं. 120

18) वही '' '' '' दोहा सं. 122

19) वही '' '' '' दोहा सं. 125

20) वही '' '' '' दोहा सं. 126

21) वही '' '' '' दोहा सं. 137

22) वही '' '' '' दोहा सं. 144

23) वही '' '' '' दोहा सं. 148

24) वही '' '' '' दोहा सं. 151

25) वही '' '' '' दोहा सं. 160

26) वही '' '' '' दोहा सं. 162

27) वही '' '' '' दोहा सं. 168

28) वही '' '' '' दोहा सं. 169

29) वही " " " दोहा सं. 170
30) वही " " " दोहा सं. 173
31) वही " " " दोहा सं. 175
32) वही " " " दोहा सं. 188
33) वही " " " दोहा सं. 197
34) वही " " " दोहा सं. 203
35) वही " " " दोहा सं. 206
36) वही " " " दोहा सं. 210
37) वही " " " दोहा सं. 217
38) वही " " " दोहा सं. 218
39) वही " " " दोहा सं. 230
40) वही " " " दोहा सं. 5
41) बटुक की कटुक सतसई " दोहा सं. 14
42) वही " " " दोहा सं. 35
43) वही " " " दोहा सं. 36
44) वही " " " दोहा सं. 45
45) विश्वप्रकाश दीक्षित 'बटुक', तुज़ुक हज़ारा
46) वही " " " दोहा सं.
47) वही " " " दोहा सं.
48) वही " " " दोहा सं.
49) वही " " " दोहा सं.
51) सप्तपदी - 5 (दोहा संकलन), सं. देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र' दो.सं. 99, पृष्ठ 70
55) वही " " " दोहा 2, पृष्ठ 59
56) वही " " " दोहा 4, पृष्ठ 59
57) वही " " " दोहा 6, पृष्ठ 60
58) वही " " " दोहा 9, पृष्ठ "
59) वही " " " दोहा 21, पृष्ठ 61
60) वही " " " दोहा 32, पृष्ठ 62
61) शब्दविहग (दोहा संग्रह) आचार्य भगवत दुबे

62) सप्तपदी-1 (दोहा संकलन), सं. देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र, दो.1, पृष्ठ 59
63) वही '' '' '' दोहा 4, पृष्ठ 59
64) तिराहे पर खड़ा दरख्त (दोहा संग्रह), ब्रजकिशोर वर्मा 'शैदी' भूमिका खण्ड
65) वही '' '' '' ''
66) वही '' '' '' ''
67) वही '' '' '' ''
68) वही '' '' '' ''
69) वही '' '' '' ''
70) वही '' '' '' ''
71) वही '' '' '' ''
72) वही '' '' '' ''
73) वही '' '' '' ''
74) वही '' '' '' ''
75) वही '' '' '' ''
76) हम जंगल के फूल (दोहा सतसई), ब्रजकिशोर वर्मा 'शैदी', दो. 659
77) वही '' '' '' '' दो. 664
78) वही '' '' '' '' दो. 675
79) वही '' '' '' '' दो. 694
80) वही '' '' '' '' दो. 697
81) दोहा दशक-2 (दोहा संकलन), सं. अशोक 'अंजुम', दो. 18, पृष्ठ 120
82) वही '' '' '' '' दो. 32, पृष्ठ 123
83) वही '' '' '' '' दो.96, पृष्ठ 128
84) वही '' '' '' '' पृष्ठ 118
85) वही '' '' '' '' पृष्ठ 118
86) वही '' '' '' '' दो. 9, पृष्ठ 121
87) वही '' '' '' '' दो. 44, पृष्ठ 124
88) वही '' '' '' '' दो. 58, पृष्ठ 124
89) वही '' '' '' '' दो. 64, पृष्ठ 124
90) वही '' '' '' '' दो. 65, पृष्ठ 124

HANSA MEHTA LIBRARY

91) वही '' '' '' '' पृष्ठ 121

92) सप्तपदी-5 (दोहा संकलन), सं. देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र' दो. 38, पृष्ठ 21

93) वही '' '' '' '' दो. 39, पृष्ठ 21

94) वही '' '' '' '' दो. 74, पृष्ठ 25

95) वही '' '' '' '' दो. 75, पृष्ठ 25

96) वही '' '' '' '' दो. 8, पृष्ठ 18

97) वही '' '' '' '' दो. 9, पृष्ठ 18

98) वही '' '' '' '' दो. 11, पृष्ठ 18

99) वही '' '' '' '' दो. 76, पृष्ठ 25

100) वही '' '' दो. माहेश्वर तिवारी दो.सं. 11

101) वही '' '' '' '' दो.सं. 12

102) वही '' '' '' '' दो.सं. 3

103) वही '' '' '' '' दो.सं. 36

104) वही '' '' '' '' दो.सं. 45

105) वही '' '' '' '' दो.सं. 76

106) सप्तपदी-5 (दोहा संकलन), सं. देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र', दोहाकार : कैलाश गौतम, दो.1

107) वही '' '' '' '' दो. 5

108) वही '' '' '' '' दो. 8

109) वही '' '' '' '' दो. 11

110) वही '' '' '' '' दो. 20

111) वही '' '' '' '' दो. 37

112) वही '' '' '' '' दो. 53

113) वही '' '' '' '' दो. 55

114) वही '' '' '' '' दो. 70

115) वही '' '' '' '' दो. 76

116) वही '' '' '' '' दो. 82

117) सप्तपदी-5 (दोहा संकलन), दोहाकार : वेदप्रकाश पाण्डेय दो. 2

118) वही '' '' '' '' दो. 10

119) वही '' '' '' '' दो. 19

120) वही '' '' '' '' दो. 23

121) वही '' '' '' '' दो. 25

122) वही '' '' '' '' दो. 59

123) वही '' '' '' '' दो. 84

124) मसि-कागद (अंक-18), त्रिमासिक पत्रिका, सं. डॉ. श्याम सखा 'श्याम'
दोहाकार : डॉ. देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र' पृष्ठ 25

125) वही '' '' '' '' ''

126) वही '' '' '' '' ''

127) ''कोने खुली किताब'' (दोहा संग्रह), डॉ. शैल रस्तोगी दो. 47

128) वही '' '' '' '' दो. 127

129) वही '' '' '' '' दो. 499

130) वही '' '' '' '' भूमिका खण्ड से

131) वही '' '' '' '' ''

132) वही '' '' '' '' ''

133) वही '' '' '' '' ''

134) वही '' '' '' '' ''

135) वही '' '' '' '' ''

136) वही '' '' '' '' ''

137) वही '' '' '' '' ''

138) दोहा दशक-2 (दोहा संकलन), दोहाकार : सुरेशकुमार शुक्ल, दो. 1

139) वही '' '' '' '' दो. 9

140) वही '' '' '' '' दो. 25

141) वही '' '' '' '' ''

142) वही '' '' '' '' दो. 25

143) वही '' '' '' '' दो. 46

144) वही '' '' '' '' दो. 57

145) वही '' '' '' '' दो. 92

146) वही '' '' '' '' दो. 31

147) वही '' '' '' '' दो. 7

148) वही '' '' '' '' दो. 24

149) दोहा दशक-2 (दोहा संलकन), अशोक अंजुम दो. 43

150) वही '' '' '' '' दो. 47

151) वही '' '' '' '' दो. 10

152) वही '' '' '' '' दो. 39

153) वही '' '' '' '' दो. 44

154) वही '' '' '' '' दो. 28

155) वही '' '' '' '' दो. 21

156) 'दोग्धकशतकम्' (दोहा संग्रह), अनंतराम मिश्र 'अनन्त', दो. 55

157) वही '' '' '' '' दो. 14

158) दोहा दशक-2 (दोहा संकलन), दोहाकार : अनन्तराम मिश्र 'अनंत', दो. 31

159) वही '' '' '' '' दो. 75

160) वही '' '' '' '' दो. 46

161) वही '' '' '' '' दो. 1

162) वही '' '' '' '' दो. 12

163) वही '' '' '' '' दो. 54

164) वही '' '' '' '' दो. 89

165) वही '' दोहाकार : ओम वर्मा दो. 87

166) वही '' '' '' '' दो. 22

167) वही '' '' '' '' दो. 58

168) वही '' '' '' भूमिका खण्ड, पृष्ठ 59

169) वही '' '' '' '' दो. 14

170) वही '' '' '' '' पृष्ठ 59

171) वही '' '' '' '' दो. 1

172) वही '' '' '' '' दो. 9

173) वही '' '' '' '' दो. 43

174) वही '' '' '' '' दो. 52

175) वही '' '' '' '' दो. 85

176) दोहा दशक-2 (दोहा संकलन), ब्रजकिशोर पटेल दो. 98

177) वही '' '' '' '' पृष्ठ 70

178) वही '' '' '' '' दो. 11

179) वही '' '' '' '' दो. 15

180) वही '' '' '' '' दो. 94

181) वही '' '' '' '' दो. 36

182) वही '' '' '' '' पृष्ठ 71

183) वही '' '' '' '' दो. 79

184) दोहा दशक-2 (दोहा कलन), दोहाकार : दिनेश रस्तोगी, दो. 3

185) वही '' '' '' '' दो. 25

186) वही '' '' '' '' दो. 38

187) वही '' '' '' '' दो. 39

189) वही '' '' '' '' दो. 47

190) वही '' '' '' '' दो. 48

191) वही '' '' '' '' दो. 83

192) दोहा दशक-2 (दोहा संकलन), दोहाकार : रामानुज त्रिपाठी, पृष्ठ 94

193) वही '' '' '' '' ''

194) वही '' '' '' '' ''

195) वही '' '' '' '' ''

196) वही '' '' '' '' दो. सं. 1

197) वही '' '' '' '' दो. 10

198) वही '' '' '' '' दो. 31

199) वही '' '' '' '' दो. 49

200) वही '' '' '' '' दो. 53

201) वही '' '' '' '' दो. 67

202) वही '' '' '' '' दो. 100

203) वही '' '' '' '' दो. 101

204) सप्तपदी-1 (दोहा संकलन), पाल भसीन, दो. 2

205) वही '' '' '' '' दो. 8

206) वही '' '' '' '' दो. 12

207)	वही	''	''	''	''	दो. 23
208)	वही	''	''	''	''	दो. 40
209)	वही	''	''	''	''	दो. 101
210)	सप्तपदी-1 (दोहा संकलन), सं. देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र', दोहाकार : दिनेश शुक्ल					दो. 2
211)	वही	''	''	''	''	दो. 5
212)	वही	''	''	''	''	दो. 35
213)	वही	''	''	''	''	दो. 56
214)	वही	''	''	''	''	दो. 86
215)	वही	''	''	''	''	दो. 96
216)	वही	''	दोहाकार : हस्तीमल हस्ती			दो. 2
217)	वही	''	''	''	''	दो. 4
218)	वही	''	''	''	''	दो. 10
219)	वही	''	''	''	''	दो. 21
220)	वही	''	''	''	''	दो. 32
221)	वही	''	''	''	''	दो. 59
222)	'बोलो मेरे राम' (दोहा संग्रह), रामनिवास 'मानव'					दो.
223)	वही	''	''	''	''	दो. 165
226)	'बोलो मेरे राम' (दोहा संग्रह), डॉ. रामनिवास 'मानव'					दो. 100
227)	वही	''	''	''	''	दो. 161
228)	वही	''	''	''	''	दो. 35
229)	वही	''	''	''	''	दो. 36
230)	वही	''	''	''	''	दो. 49
231)	वही	''	''	''	''	दो. 63
232)	वही	''	''	''	''	दो. 61
233)	वही	''	''	''	''	''
234)	वही	''	''	''	''	दो. 11
235)	वही	''	''	''	''	दो. 75
236)	वही	''	''	''	''	दो. 242

238)	'सहमी-सहमी आग' (दोहा संग्रह), रामनवास 'मानव'				
239)	वही	''	''	''	दो. 96
240)	वही	''	''	''	दो. 223
243)	वही	''	''	''	दो. 336
244)	वही	''	''	''	दो. 366
245)	वही	''	''	''	दो. 377
246)	युवको ! सोचो ! (दोहा संग्रह), डॉ. महेश दिवाकर				पृष्ठ 1
247)	वही	''	''	''	''
248)	वही	''	''	''	पृष्ठ 2
249)	वही	''	''	''	पृष्ठ 3
250)	वही	''	''	''	पृष्ठ 24
251)	वही	''	''	''	पृष्ठ 23
252)	वही	''	''	''	पृष्ठ 24
253)	वही	''	''	''	''
254)	वही	''	''	''	पृष्ठ 26
255)	वही	''	''	''	पृष्ठ 27
256)	वही	''	''	''	पृष्ठ 35
257)	वही	''	''	''	''
258)	सप्तपदी-5 (दोहा संकलन), दोहाकार : डॉ. उर्मिलेश				दो. 45
259)	वही	''	''	''	दो. 48
260)	वही	''	''	''	दो. 44
261)	वही	''	''	''	दो. 26
262)	वही	''	''	''	दो. 40
263)	वही	''	''	''	दो. 30
264)	वही	''	''	''	दो. 24
265)	वही	''	''	''	दो. 14
266)	'जैसे' (दोहा संग्रह), हरे राम 'समीप'				भूमिका खण्ड
267)	वही	''	''	''	''
268)	वही	''	''	''	दो. 26

269) वही '' '' '' दो. 43
270) वही '' '' '' दो. 152
271) वही '' '' '' दो. 19
272) वही '' '' '' दो. 16
273) वही '' '' '' दो. 4
274) वही '' '' '' दो. 140
275) वही '' '' '' दो. 180
276) वही '' '' '' भूमिका खण्ड
277) वही '' '' '' भूमिका खण्ड
278) वही '' '' '' दो. 47
279) दोहा दशक-3 (दोहा संकलन), सं. अशोक 'अंजुम', दोहाकार : राजेन्द्र वर्मा, दो. 4, पृष्ठ 48
280) वही '' '' '' पृष्ठ 46
281) वही '' '' '' ''
282) वही '' '' '' ''
283) वही '' '' '' पृष्ठ 47
284) वही '' '' '' ''
285) वही '' '' '' ''
286) वही '' '' '' दो. 57
287) चुटकी भर चाँदनी (दोहा संग्रह), राजेन्द्र वर्मा पृष्ठ 11
288) वही '' '' '' भूमिका खण्ड
289) वही '' '' '' पृष्ठ 13
290) दोहा दशक-3 (दोहा संकलन) '' दो. 8
291) वही '' '' '' दो. 12
292) वही '' '' '' दो. 38
293) वही '' '' '' दो. 49
294) वही '' '' '' दो. 60
295) वही '' '' '' दो. 77
296) वही '' '' '' दो. 81

297) वही '' '' '' दो. 89
298) वही '' '' '' दो. 101
299) सारांश (दोहा संग्रह), रामेश्वर 'हरिद' पृष्ठ 11
300) वही '' '' '' पृष्ठ 12
301) वही '' '' '' पृष्ठ 13
302) वही '' '' '' ''
303) वही '' '' '' पृष्ठ 14
304) वही '' '' '' ''
305) वही '' '' '' पृष्ठ 22
306) विराट सतसई - विष्णु चतुर्वेदी 'विराट' दो. 287
307) वही '' '' '' दो. 416
308) वही '' '' '' दो.
309) वही '' '' '' दो. 89
310) वही '' '' '' दो. 64
311) वही '' '' '' दो. 100
312) वही '' '' '' दो. 386
313) वही '' '' '' दो. 537
314) वही '' '' '' दो. 330
315) वही '' '' '' दो. 387
316) वही '' '' '' दो. 384
317) वही '' '' '' दो. 239
318) वही '' '' '' दो. 244
319) 'एक बादल मन' (दोहा संग्रह), राधेश्याम शुक्ल
320) वही '' '' ''
321) वही '' '' ''
322) वही '' '' ''
323) वही '' '' ''
324) वही '' '' ''
325) दोहा दशक-2 (दोहा संकलन), डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया दो. 34

326)	वही	''	''	''	दो. 61
327)	वही	''	''	''	दो. 4
328)	वही	''	''	''	दो. 13
329)	वही	''	''	''	दो. 101
330)	वही	''	''	''	दो. 68
331)	वही	''	''	''	भूमिका खण्ड
332)	वही	''	शिवशरण दुबे		दो. 7
333)	वही	''	''	''	दो. 20
334)	वही	''	''	''	दो. 5
335)	वही	''	''	''	दो. 33
336)	वही	''	''	''	दो. 49
337)	वही	''	''	''	दो. 86

338) सप्तपदी-1 (दोहा संकलन), सं. देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र', दोहाकार : कुमार रवीन्द्र दो. 12

339)	वही	''	''	''	दो. 22
340)	वही	''	''	''	दो. 21
341)	वही	''	''	''	दो. 37
342)	वही	''	''	''	दो. 45
343)	वही	''	''	''	दो. 87
344)	वही	''	''	''	दो. 88
345)	वही	''	''	जहीर कुरेशी	दो. 12
346)	वही	''	''	''	दो. 46
347)	वही	''	''	''	दो. 34
348)	वही	''	''	''	दो. 45
349)	वही	''	''	''	दो. 46

350) कालायतस्मैनमः (दोहा संग्रह), डॉ. भारतेन्दु मित्र

351)	वही	''	''	''
352)	वही	''	''	''
353)	वही	''	''	''